जनवरी - मार्च 2020 भाग XXX संख्या 4 ISSN 0971 - 1856

भारतीय नारियल पत्रिका

डाब की किस्में
नारियल किसानों के लिए लाभदायक

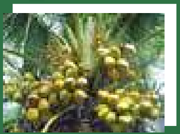

नारियल बाग में फार्म तालाब हो तो
किसानों की आमदनी हो जाएगी दुगुनी

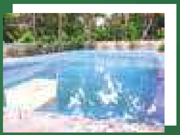

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXX संख्या : 4

जनवरी - मार्च: 2020 कोची-11

परामर्श मंडल :

अध्यक्ष

जी. जयलक्ष्मी भा.प्र.से.

सदस्य

डा.बी.एन.एस. मूर्ति
संजीव कुमार सिंह
डा. वेंकटेश एन.हुब्बल्ली

संपादक मंडल

सदस्य

आर. मधु

डा.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

सरदिंदु दास

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु रानी एन.

डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के पाँच: राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुवनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेयमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) धली (तमिलनाडु), साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया(पश्चिम बंगाल)में हैं। इसके अलावा बोर्ड का बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है । केरल के आलुवा के पास वाषक्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

❑ नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। द नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। ❑ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियों अपनाने को प्रोत्साहित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। ❑ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना।

❑ केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। द नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। द नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी ।नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.	नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा
एक प्रति	10 रु.	सर्वश्री पाइको प्रिंटिंग प्रेस, कोची-18 में मुद्रित
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.	

इस अंक में

02 अध्यक्ष की कलम से.......

03 डाब की किस्में नारियल किसानों के लिए लाभदायक
वी.निरल और रंजिनी टी.एन.

08 नारियल बाग में फार्म तालाब हो तो किसानों की आमदनी हो जाएगी दुगुनी
अनिताकुमारी पी., महिमा मोहन, मुहम्मद इजाज़, निषा बी.

12 किसानों की आय दुगुनी बनाएं-नारियल के साथ हल्दी की अंतरखेती करें
पी.पी.भलेराव और एच.पी.महेश्वरप्पा

16 लाल ताड़ घुन-नारियल पेड़ को नुकसान पहुँचाने वाला कीट
डा.अभिषेक शुक्ला

18 नारियल पेड़ नहीं, नारियल पत्ता बन गया चमकता सितारा
आबे जेकब

22 ओड़िशा के तटीय बलुई मिट्टी में नारियल पेड़ों का स्वास्थ्य प्रबंधन
एस.सी.साहू और एच.पी.महेश्वरप्पा

28 नारियल बागों में मासिक कार्य

43 समाचार

60 बाज़ार समीक्षा

63 बाज़ार रिपोर्ट

अध्यक्ष की कलम से.......

प्रिय पाठकों,

भारत में सर्वत्र, सारे नारियल उत्पादक क्षेत्र सफेदमक्खी के व्यापक प्रकोप से और इसके फलस्वरूप पैदावार में नुकसान की समस्याओं से जूझ रहा है। सफेदमक्खी नारियल को नुकसान पहुँचाने वाला एक नया कीट है। ऐसे आक्रामक कीट के प्रकोप के चलते जैव सुरक्षा योजना की काफी अधिक अहमियत होती है। जैव सुरक्षा योजना के अंतर्गत नए कीटों और रोगों के प्रवेश से जुड़े खतरा कारकों को कम करने तथा उनके उन्मूलन हेतु समुचित क्रियाविधियों का विकास और उनका अनुपालन शामिल है। नारियल पर सफेदमक्खी के प्रकोप के इस दौर में जैव सुरक्षा योजना कार्यान्वित करने के लिए इस क्षेत्र को अधिक सावधान रहना चाहिए।

फिलीपीन्स, श्रीलंका आदि जैसे अन्य नारियल उत्पादक देशों में ब्रोन्टिस्पा(नारियल पत्ता भृंग) और नारियल शल्क कीट जैसे कुछ घातक कीटों का प्रकोप पाया गया है। आगे ऐसे कीटों के प्रकोप से बचने के लिए हमें सख्त नियंत्रणोपाय लागू करना होगा और रोकथाम के उपायों का अनुपालन करते वक्त सावधान भी रहना होगा। देशी कीटों की अपेक्षा नए उभरने वाले कीट अधिक खतरनाक होते हैं क्यों कि इनके कुदरती शत्रु यहाँ मौजूद नहीं होते हैं। एक राज्य से दूसरे राज्य में नारियल पौधे ले जाते समय भी हमें सावधानी बरतनी चाहिए। इस संबंध में कृषि अधिकारी मुख्य भूमिका निभा सकते हैं, जो कि वनस्पति संगरोध अधिकारी की हैसियत में भी कार्यरत हैं।

आइए, कोरोना जैसे संक्रमणकारी वायरस से अपने आपको बचाने के साथ साथ हमारे वनस्पति जगत को भी संक्रामक कीटों और रोगों से बचाने के लिए हम सब मिलकर काम करें।

जी. जयलक्ष्मी

जी.जयलक्ष्मी भा.प्र.से.

अध्यक्ष

डाब की किस्में नारियल किसानों के लिए लाभदायक

***वी.निरल और **रंजिनी टी.एन.**
*प्रधान वैज्ञानिक और **वैज्ञानिक, फसल सुधार प्रभाग,
भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

नारियल पेड़(*कोकोस नूसिफेरा एल.*) भारत में कल्पवृक्ष के नाम से जाना जाता है, अर्थात् वह पेड़ जो जीने के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करता है। पौष्टिक आहार, ताज़गी भरा पेय, तेल(खाना बनाने, औषधीय, औद्योगिक अनुप्रयोगों और जैवईंधनों के लिए प्रयुक्त), वाणिज्यिक मूल्य के रेशे, कोयला, निर्माण सामग्रियाँ और घरेलू एवं औद्योगिक उपयोग के विभिन्न प्रकार के उत्पादों के स्रोत के रूप में इस पेड़ के सैकड़ों उपयोग हैं।

विश्व में नारियल की खेती व्यापक तौर पर उष्णकटिबंधीय इलाकों में 124.7 लाख हेक्टर क्षेत्र में फैली हुई है। भारत में 18 राज्यों और तीन संघशासित क्षेत्रों को मिलाकर नारियल की खेती 20.7 लाख हेक्टर क्षेत्र में की जाती है। विश्व के तीन अग्रणी नारियल उत्पादक देशों में भारत का स्थान है। भारत में नारियल का वार्षिक उत्पादन 233.51 करोड़ नारियल और उत्पादकता प्रति हेक्टर 10614 नारियल (नारियल विकास बोर्ड, 2015-16) है। केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और आँध्र प्रदेश राज्यों में परंपरागत रूप से नारियल की खेती होती है और नारियल के अधीन कुल क्षेत्र का 90 प्रतिशत इन राज्यों का योगदान है। लक्षद्वीप और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह जैसे द्वीपीय क्षेत्रों की मुख्य फसल नारियल है। बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, पश्चिम बंगाल और उत्तरपूर्वी राज्यों जैसे गैर परंपरागत क्षेत्रों में भी नारियल की खेती फैली हुई है।

हाल ही के कुछ सालों में, नारियल को स्वास्थ्यदायक आहार के रूप में माना जाता है और खोपरा और तेल के अतिरिक्त डाब पानी, विर्जिन नारियल तेल और पुष्पक्रम रस की खपत को बढ़ावा दिया जा रहा है। ताज़गी भरे स्वास्थ्य पेय

कल्प समृद्धि

के रूप में डाब की लोकप्रियता बढ़ रही है। 6-8 महीने की आयु के डाब से प्राप्त तरल भ्रूणपोष को डाब पानी कहा जाता है जो कि ठोस भ्रूणपोष या सफेद गरी बनने के पहले की अवस्था है। यह कुदरती आइसोटॉनिक पेय है और इसका इलेक्ट्रोलिटिक संतुलन हमारे खून के बराबर स्तर का होता है। इसलिए प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान चिकित्सीय आपातिक स्थितियों में नसों के ज़रिए देने वाला द्रव (आई वी फ्लूइड) के रूप में डाब पानी का उपयोग किया जाता था। आयुर्वेद में बताया जाता है कि डाब पानी शुक्रवर्धक है, पाचन को बढ़ावा देता है और मूत्रीय मार्ग साफ करता है। डाब पानी में शर्करा, खनिज और लेश मात्रा में नाइट्रोजनी यौगिक(प्रोटीन/एमिनो अम्ल) निहित हैं।

नारियल पानी का मुख्य पौष्टिक तत्व पोटेशियम है। यह उसे उच्च इलेक्ट्रोलाइट पेय बना देता है और खून की मात्रा और हृदय का स्वास्थ्य बनाए रखने में तथा निर्जलीकरण एवं तनाव को रोकने में सहायता करता है। हाल के सालों में इसके स्वास्थ्य लाभ निरंतर उजागर होता आ रहा है और इसलिए कई विक्रेताओं ने डाब पानी को 'कुदरत का स्पोर्ट्स पेय' और 'आयु वर्धक' नाम दिए हैं। ताज़गीभरे स्वास्थ्य पेय के रूप में वैश्विक स्तर पर जागरूकता और डाब पानी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण गैस भरे पेयों के अनेक विनिर्माताओं ने इस क्षेत्र में कदम रखा है। नारियल का वैश्विक बाज़ार वर्ष 2020 तक 26.75 प्रतिशत की चक्रवृद्धि दर पर बढ़ने की उम्मीद की जा रही है। फिलहाल विश्व में पैकटबंद नारियल पानी का सबसे बड़ा बाज़ार ब्राज़ील है जो वर्ष 2010 में फल रसों की कुल बिक्री का 67 प्रतिशत बताया गया है और रिपोर्ट के मुताबिक संतरे के रस की कीमत पर इसका बाज़ार बढ़ रहा है। परंपरागत और गैर परंपरागत क्षेत्रों में डाब पानी उत्पादों की लोकप्रियता भी तेज़ी से बढ़ रही है, इस प्रकार डाब के बढ़ते व्यापार पर अपना कब्ज़ा जमाने हेतु नारियल उद्यमियों के लिए नए अवसर खोले जा रहे हैं।

डाब के लिए बाज़ार में उभरती माँग को पूरा करने हेतु भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान अपने केन्द्र में नारियल के जीनप्ररूपों, उपलब्ध एवं प्रायोगिक संकरों पर परीक्षण चला रहा है ताकि देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में विमोचित करने और खेती करने हेतु डाब एवं खोपरे प्रयोजनों के लिए उपयुक्त किस्मों सहित उन्नत किस्मों का विकास किया जा सके। राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान

कल्पश्री

प्रणाली के अंतर्गत देश में विकसित किस्मों की सूची सारणियों में दी गई है।

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राज्य बागवानी विभाग और अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत विविध केन्द्र एवं नारियल विकास बोर्ड - प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म किसानों, गैर सरकारी संगठनों, विकासात्मक एजेंसियों और अनुसंधान संगठनों को नारियल की उन्नत किस्मों/संकरों के बीजफल/नारियल पौधों की आपूर्ति करते हैं जिससे उच्च फसल उत्पादकता और निवल आय सुसाध्य हो जाती हैं। किसानों/किसान उत्पादक संगठनों और विकासात्मक एजेंसियों को बीज बाग स्थापित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है ताकि उन्नत किस्मों की आपूर्ति को बढ़ावा दिया जा सके और उच्चतर उत्पादकता और नारियल किसानों को उच्च आय प्राप्त हो सके।

खोपरा और डाब - दोनों प्रयोजनों के लिए उन्नत किस्में

किस्म	प्रमुख विशेषताएं	डाब पानी की मात्रा (मि.ली./फल)	खोपरा उपज (टन/हे./वर्ष)	खेती के लिए सिफारिश	विमोचन के लिए उत्तरदायी एजेंसी
लंबा					
केरा चंद्रा	उच्च पैदावार	450	3.68	केरल, कर्नाटक, कोंकण क्षेत्र, आँध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल	भा.कृ.अनु.प- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्प प्रतिभा	उच्च पैदावार	448	4.12	केरल, आँध्र प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र	भा.कृ.अनु.प- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्प हरिता	हरे नारियल, एरियोफिड माइट से कम नुकसान	440	3.72	केरल, कर्नाटक	भा.कृ.अनु.प- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्प शताब्दि	उच्च पैदावार, गैंडा भृंग का कम प्रकोप	612	5.01	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु	भा.कृ.अनु.प- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्याणी नारियल -1	उच्च पैदावार	274	3.84	पश्चिम बंगाल	बिधानचंद्र कृषि विश्वविद्यालय (बीसीकेवी), पश्चिम बंगाल
बौना/मध्यम कद					
कल्परक्षा	मध्यम कद, उच्च पैदावार, हरे नारियल	290	2.11	केरल	भा.कृ.अनु.प- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
केरा मधुरा	मध्यम कद, उच्च पैदावार, हरे नारियल	287	4.80	केरल	केरल कृषि विश्वविद्यालय, केरल
गौतमी गंगा	बौनी, हरे फल	467	1.80	आँध्र प्रदेश	अ.भा.स.ता.अनु.प., अंबाजीपेटा, आँध्र प्रदेश
कल्पश्री	बौनी, हरे फल	240	1.51	केरल	भा.कृ.अनु.प- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
सीएआरआई - सी1(अन्नपूर्णा)	बौनी, उच्च खोपरा संघटक, हरे फल	470	2.23	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	भा.कृ.अनु.प- केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (सीआईएआरआई), पोर्ट ब्लेयर

चंद्र संकरा

परिपक्व नारियल का बाज़ार भाव कम हो जाने के कारण आय में होने वाले नुकसान से निपटने और स्वास्थ्यपूर्ण ताज़गी भरे पेय के रूप में डाब पानी की बढ़ती लोकप्रियता के इस दौर में अवसरों का लाभ उठाने के लिए यह सलाह दी जाती है कि डाब की विभिन्न किस्मों एवं दोनों प्रयोजनों वाली किस्मों को लगाकर बाग स्थापित करें जिससे डाब पानी की घरेलू माँग को पूरा किए जाने के साथ साथ उत्पाद विविधीकरण को भी बढ़ावा दिया जा सके ताकि बाज़ार में प्रचुर मात्रा में खोपरे के भारी आवक से नारियल के भाव में जो गिरावट हो रही है उसके प्रतिकूल प्रभाव का सामना किया जा सके। इसके अलावा डाब के रूप में 6-8 महीने की आयु के फलों की तुड़ाई की जाती है और खोपरे के उत्पादन हेतु फलों के 4-6 महीने के और विकास के लिए जो पौष्टिक अपेक्षाएं होती है, इनसे भी बच जाता है और पेड़ पर फल और अच्छी तरह से लगते हैं और बाद में निकलने वाले पुष्पक्रमों का विकास भी बेहतर होता है और फलस्वरूप प्रति ताड़ नारियल की उपज भी अधिक होती है। तमिलनाडु के पोल्लाची और कोयंबत्तूर जिलों में किसानों ने डाब की स्थानीय माँग की आपूर्ति करने और निर्यात बाज़ार के

खोपरा और डाब - दोनों प्रयोजनों के लिए उन्नत संकर किस्में

संकर किस्म	मातृ - पितृ वृक्ष स्रोत	प्रमुख विशेषताएं	डाब पानी की मात्रा (मि.ली./फल)	खोपरा उपज (टन/हे./वर्ष)	अनुशंसित क्षेत्र	विमोचन हेतु उत्तरदायी एजेंसी
चंद्र संकरा	सीओडी x डब्ल्यूसीटी	उच्च पैदावार	347	4.27	केरल, कर्नाटक तमिलनाडु	भा.कृ.अनु.प.-कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
चंद्र लक्षा	एलसीटी x सीओडी	उच्च पैदावार, नमी दबाव सहनशील	339	3.76	केरल, कर्नाटक	भा.कृ.अनु.प.-कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्प समृद्धि	एमवाईडी x डब्ल्यूसीटी	नमी दबाव सहनशील, उच्च पोषकतत्व उपयोग क्षमता	346	4.5	केरल, असम	भा.कृ.अनु.प.-कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्प श्रेष्ठा	एमवाईडी x टीपीटी	उच्च पैदावार	368	6.28	केरल, कर्नाटक	भा.कृ.अनु.प.-कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड

डाब और सजावटी प्रयोजनों के लिए उन्नत बौनी किस्में

किस्म	प्रमुख विशेषताएं	डाब पानी की मात्रा (मि.ली./ फल)	खोपरा पैदावार (टन/हे./ वर्ष)	अनुशंसित राज्य/क्षेत्र	विमोचन हेतु उत्तरदायी एजेंसी
चावक्काट नारंगी बौनी	नारंगी फल, एरियोफिड माइट से कम नुकसान	351	2.78	सभी नारियल उत्पादक क्षेत्र	भा.कृ.अनु.प.- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्प ज्योति	पीले फल, जल अभाव परिस्थितियाँ झेलने में अपेक्षतया सक्षम	380	2.83	केरल, कर्नाटक, असम	भा.कृ.अनु.प.- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
कल्प सूर्या	नारंगी फल	400	4.00	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु	भा.कृ.अनु.प.- कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड
सीएआरआई-सी2(सूर्या)	सजावटी, नारंगी फल	154	1.31	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	भा.कृ.अनु.प.- सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर
सीएआरआई-सी3(ओमकार)	सजावटी, पीले फल	117	1.4	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	भा.कृ.अनु.प.- सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर
सीएआरआई-सी4(चंदन)	सजावटी, नारंगी फल	198	1.74	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	भा.कृ.अनु.प.- सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर

कल्प ज्योति

अवसरों का लाभ उठाने के लिए बहुत बड़े क्षेत्र में डाब की किस्मों का रोपण किया है। अब केरल, कर्नाटक, आँध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में भी यह रुख शुरू हुआ है। अतः बौनी किस्म सहित डाब प्रयोजनों के लिए उपयुक्त किस्मों की और दोनों प्रयोजनों वाली किस्मों की तथा संकर किस्मों की खेती करने के लिए नारियल किसानों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सिंचाई और समुचित प्रबंधन प्रणालियाँ अपनाई जाने की परिस्थिति में लंबी किस्मों की तुलना में संकर नारियल किस्मों से अधिक पैदावार मिलने की उम्मीद है। ऐसी उन्नत किस्मों का रोपण नए बाग स्थापित करने के लिए ही नहीं अपितु जीर्ण ताड़ युक्त बागों में पुनर्रोपण और पुनरुज्जीवन करने के लिए भी सिफारिश की जाती है। यह नारियल खेती की समग्र लाभदायकता बढ़ाने में और देश में नारियल की खेती को बढ़ावा देने में सहायक होगा।

नारियल बाग में फार्म तालाब हो तो किसानों की आमदनी हो जाएगी दुगुनी

***अनिताकुमारी पी., **महिमा मोहन, **मुहम्मद इजाज़, **निषा बी.**
*प्रधान वैज्ञानिक, **एफएफपी परियोजना स्टाफ
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केन्द्र, कृष्णपुरम, कायंकुलम

नारियल आधारित वासभूमि एकीकृत खेती प्रणाली के प्रयोगात्मक ज्ञान और व्यावहारिक नवाचारों का रोशन मीनार है। विशेषकर वासभूमि के पिछवाड़े के छोटे तालाबों में मछलियों को पालने से किसानों को अधिक लाभ मिल जाता है, पोषण भी होता है और रोज़गार के अवसर भी प्राप्त होते हैं। नारियल आधारित वासभूमि में कुदरती आवासव्यवस्था जैसे कि पेड़ों के शिखर, पेड़ों की जड़ें, जलीय वनस्पतियाँ आदि की मौजूदगी मछली की वृद्धि और पुनरुत्पादन के लिए फायदेमंद प्राकृतिक आहार के उत्पादन हेतु बेहतरीन आश्रय और स्रोत माना जाता है। ज़मीन को टुकड़ों में बाँटने की सामाजिक प्रक्रिया चल रही है जिससे चुनौतिपूर्ण उत्पादन में कमी आई, उसी के कारण विपणन योग्य उत्पादें कम हो गए। खेती से आय में कमी आई और लघु एवं सीमांत किसानों को उनके पास उपलब्ध संसाधन के लिए अनुकूल प्रौद्योगिकी पैकेज की व्यवस्था का अभाव हुआ। भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा किसान सहभागिता से चलाए गए कई सामाजिक परीक्षणों से यह साबित हुआ है कि अकेले की जा रही गतिविधियों को सामूहिक बनाए जाने पर समाज कल्याण को बढ़ावा मिल जाता है क्योंकि किसान समूह एकजुट होकर कार्य करने से खेती संबंधी गतिविधियों की लागत कम हो जाती है, जानकारियों का आदान - प्रदान तथा प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण त्वरित हो जाता है।

भा.कृ.अनु.प. किसान प्रथम कार्यक्रम (एफएफपी)

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान केरल राज्य के आलप्पुष़ा जिले के पत्तियूर पंचायत में नवंबर 2016 से लेकर किसान प्रथम कार्यक्रम कार्यान्वित कर रहा है।

किसान प्रथम कार्यक्रम (एफएफपी) बाग (फार्म), नवाचार (इन्नोवेशन्स), संसाधन (रिसोर्सस), विज्ञान (साइन्स) और प्रौद्योगिकी (टेकनलॉजी) जैसे उन आधारभूत संघटकों के पाँच आधार स्तंभों के संबंध में एक अनूठा कार्यक्रम है जो कृषि अनुसंधान और विस्तार में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने के लक्ष्य के लिए सामान्य उपलब्धियाँ हासिल करने हेतु प्रणालियों में लचीलापन, प्रौद्योगिकी/जानकारी का संकलन तथा नवाचारों का एकीकरण और किसान समूह का प्रयोगात्मक अध्ययन अपेक्षित हैं।

स्थान विशेष, किसानों का ज्ञान, अनुभव और आजीविका विकल्पों संबंधी संसाधनों, संभावनाओं और समस्याओं की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण वासभूमि का एक चुनौतिपूर्ण सौंदर्य है। किसान प्रथम कार्यक्रम में, 1000 किसान परिवार या तो अकेले, या क्लस्टर या महिला किसान स्वयं सहायता समूह के रूप में कार्यकलापों से जुड़े हैं। खेती प्रणाली मुख्यतः नारियल आधारित है जिसके साथ अतिरिक्त संघटकों के रूप में कुक्कुट पालन, पशुपालन(गाय), अंतर/मिश्रित फसल, फार्म तालाब और लघु पैमाने का प्रसंस्करण शामिल हैं। पूरे पंचायत के 1627 हेक्टर की नारियल आधारित वासभूमि प्रणाली में फसल, बागवानी, एकीकृत खेती प्रणाली, कुदरती स्रोत प्रबंधन और मूल्यवर्धन के छह मोड्यूलों में गतिविधियाँ कार्यान्वित की जाती हैं।

इसका प्रमुख लक्ष्य किसानों की आमदनी दुगुनी करना है जो प्रौद्योगिकियों का उपयोगीकरण, समाज का सशक्तिकरण, कौशल विकास और प्रभावी संसाधन प्रबंधन आदि के ज़रिए हासिल किया जा सकता है। इसकी मुख्य चुनौतियाँ हैं किसानों की आय दुगुनी करना और वर्ष 2050 तक 9.1 अरब आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना। समग्र खेती प्रणाली में खेत और खेती से जुड़े परिवारों की भूमिका सबसे अहम होती है। इसलिए वास्तव में किसानों की आय दुगुनी बनाने के लिए खेती प्रणाली अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के साथ साथ बाग की परिस्थिति के बारे में अध्ययन करना भी अनिवार्य है।

नारियल आधारित वासभूमि के फार्म तालाब - एक अध्ययन

खेती प्रणाली की विशेषताएं पहचानने एवं संसाधनों को ठीक ठाक रेखांकित करने के लिए 740 नारियल किसानों के बीच एक सर्वेक्षण चलाया गया। आँकड़ों से यह सूचित होता है कि अधिकांश खेतीगत भूमि 25-100 सेंट (0.1 से 0.4 हे.) की है। यह पंचायत में सामूहिक/क्लस्टर खेती प्रणाली की उपयुक्तता पर ज़ोर देता है। सर्वेक्षण में शामिल सभी किसान शिक्षित हैं और सर्वेक्षण चलाए गए कुल किसानों में मात्र 10.01 प्रतिशत ही युवा किसान(40 वर्ष से कम आयु के) हैं। लगभग 25 प्रतिशत खेतीगत ज़मीन 25-50 सेंट(0.11 से 0.20 हे.) की और 20.57 प्रतिशत खेतीगत ज़मीन 51 से 100 सेंट(0.21 से 0.40 हे.) की हैं।

तिलापिया

एनबस

मात्र 8.66 प्रतिशत खेतीगत ज़मीन ही 0.4 हेक्टर से अधिक है। अध्ययन से दर्शित हुआ है कि 29.2 प्रतिशत नारियल आधारित वासभूमि में फार्म तालाब मौजूद हैं और इनका उपयोग सिंचाई, जल संचयन, संरक्षण और मछली कृषि के लिए किया जाता है।

तालाब की गहराई 5 से 20 फीट के बीच है और यह रिपोर्ट किया गया है कि लगभग एक तिहाई तालाब गर्मी के महीनों में सूख जाते हैं और शेष तालाबों में सालभर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित है। कुदरती फार्म तालाबों के अलावा 7 ग्रामीण युवक पंचायत में तीव्र मछली कृषि के लिए कृत्रिम तालाबों का अनुरक्षण कर रहे हैं। तालाबों के पुनरुज्जीवन में निवेश करने की इच्छुकता, अच्छी कृषि प्रणालियों के अभिग्रहण में और बृहत् अध्ययन के लिए जानकारियाँ बाँटने में सहमति के आधार पर एफएफपी गतिविधियों में पत्तियूर पंचायत के 19 वार्डों से कुल 74 फार्म तालाबों को चुना गया है। मात्स्यिकी क्षेत्र के विशेषज्ञों और मछली पालने के लिए तालाब की तैयारी करने में अनुभवी किसानों को शामिल करके किसानों के लिए चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। कार्यक्रम में सहभागी किसानों की अभिरुचि के आधार पर नाइल तिलापिया(*ओरियोक्रोमिस निलोटिकस*) और एनबस(*एनबस टेस्टुडिनेस*) मछलियों के 65000 बच्चों को एक लाख वर्ग मीटर से अधिक जल क्षेत्र के लिए वितरित किया गया।

किसानों की आय दुगुनी करने के लिए वासभूमि फार्म योजना में मुख्य संघटक के रूप में फार्म तालाबों में मछली कृषि को शामिल किया गया है। सामूहिक रूप से जानकारियों के आदान प्रदान से और नवाचारों के ज़रिए समझे गए नाज़ुक प्रबंधन मुद्दे जिनका समाधान भी निकाला गया था, हरेक तालाब के पानी में मछलियों के बच्चों का विमोचन और पर्यनुकूलन थे। मछलियों के बच्चों को विमोचित करने से पहले पानी के पीएच स्तर का मूल्याँकन किया गया। उन्हें तालाब के पानी में हाप्पा(आयतीय आकार का तैरता हल्का ढाँचा जो छोटे मेश की जाली से छादित और ऊपरी भाग खुला हो) में विमोचित किया गया और अपेक्षित मात्रा में चारा देकर कम से कम एक महीने तक इनकी देखभाल की गई। यह तरीका अपनाने से लगभग 90 प्रतिशत मछली के बच्चे जीवित बचे और किसान इनकी वृद्धि और स्वास्थ्य का अनुवीक्षण करने में सफल हुए। तालाब को कछुआ, साँप और जल पक्षियों जैसे मछली भक्षियों से सुरक्षित रखना

हाप्पा

चाहिए। मछलियों की बढ़वार के अनुसार चारा की मात्रा भी बढ़ा देनी चाहिए और पूरक आहार के रूप में बारीक कटी हरी पत्तियाँ भी शामिल की जा सकती हैं। मछली के स्वास्थ्य का नियमित अनुवीक्षण और ऑक्सिजन के स्तर का रखरखाव और अपेक्षित स्तर तक पानी की पारदर्शिता आदि किसानों के अनुसार अत्यंत निर्णायक होते हैं। इस कार्यक्रम के सहभागी किसानों ने प्रति कि.ग्रा. 250 से 300 रुपए की दर पर परिपक्व मछलियों का स्थानीय विपणन शुरू किया है और मछलियों को पकड़ने का कार्य जनवरी 2020 में पूरा हो जाएगा। यह अनुमानित है कि 15 से 20 लाख मूल्य की 10-15 टन मछलियाँ एफएफपी पंचायत से प्राप्त होंगी। फार्म तालाबों के इस कायापलट से अच्छी गुणवत्ता का प्रोटीन और ताज़ा मछलियाँ उपभोक्ताओं को प्राप्त होती हैं और समाज के लिए वैविध्यपूर्ण आहार मिल जाता है।

नारियल पेड़ों को गर्मियों में राहत दिलाने के लिए फार्म तालाब

गर्मी का मौसम शुरू हो चुका है और ये फार्म तालाब वासभूमि बाग के नारियल पौधों और फलदायी ताड़ों के लिए सूक्ष्म जलाशय के रूप में भी काम करेंगे। दो साल तक की आयु के नारियल पौधों को चार दिनों में एक बार 45 लीटर पानी देना चाहिए। फलदायी ताड़ों को चार दिनों में एक बार 200 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। नारियल पेड़ों के थालों को वासभूमि से प्राप्त सूखे नारियल पत्तों और अन्य जैविक अपशिष्टों से पलवारना चाहिए ताकि नमी बरकरार रखी जा सके और मिट्टी में सूर्य प्रकाश सीधे गिरने से बचाया जा सके। रिपोर्टों से पता चलता है कि सिंचाई प्रणाली अपनाने से 30-40 प्रतिशत अतिरिक्त पैदावार प्राप्त की जा सकती है। अत: फार्म तालाबों को पुनर्जीवित करने से नारियल बागों को आय प्रदान करने वाली इकाइयों के रूप में परिवर्तित की जा सकती है और इससे कुदरती संसाधनों का संरक्षण हो जाता है।

Statement of ownership and other particulars about the BHARATIYA NARIYAL PATRIKA

FORM IV
(See Rule 8)

1.	Place of Publication	:	Kochi - 11
2.	Periodicity of Publication	:	Quarterly
3.	Printer's Name	:	Mini Mathew
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Publicity Officer Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala.
4.	Publisher's Name	:	Mini Mathew
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Publicity Officer Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
5.	Editor's Name	:	Beena S.
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Assistant Director (OL) Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
6.	Names and address of individuals who own the newpaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	The periodical is owned by the Coconut Development Board which is a body corporate set up by the Government of India under the Coconut Development Board Act, 1979.

I, Mini Mathew, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Date : 01.03.2020

(Mini Mathew)
Publisher

किसानों की आय दुगुनी बनाएं - नारियल के साथ हल्दी की अंतरखेती करें

नारियल बाग के लिए लाभदायी मसाला फसल

पी.पी.भलेराव[1] और एच.पी.महेश्वरप्पा[2]

[1]अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, प्रादेशिक बागवानी अनुसंधान केन्द्र, एएसपीईई बागवानी और वानिकी कॉलेज, एनएयू, नवसारी, गुजरात

[2]भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड, केरल

नारियल(*कोकोस नूसिफेरा*) भारत के तटीय क्षेत्र की प्रमुख रोपण फसल है और इसके साथ विविध फसलों की खेती करना हमेशा लाभदायक रहा है। नारियल की खेती विश्वभर के लाखों परिवारों को आजीविका सुरक्षा प्रदान करता है और बेहतर पोषण, रोज़गार सृजन और आय सृजन में नारियल की जो क्षमता होती है, काफी मशहूर है। कई राज्यों की, जहाँ नारियल की खेती की जाती है, ग्रामीण अर्थ व्यवस्था पर नारियल पेड़ का प्रभाव काफी अधिक रहा है और यह देश के एक करोड़ से अधिक लोगों को आजीविका प्रदान करता है। इस फसल पर केन्द्रित प्रसंस्करण और इससे जुड़ी अन्य गतिविधियाँ भारत के तीस लाख से अधिक लोगों को रोज़गार के लिए अवसर प्रदान करती हैं। नारियल किसान बाज़ार भाव में घट - बढ़ और जैविक - अजैविक दबाव के कारण आर्थिक खतरे की स्थिति से अक्सर जूझता रहता है, इसलिए छोटे बागों में व्यवस्थित नारियल आधारित फसल प्रणाली और खेती प्रणाली के ज़रिए ही इसे आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाया जा सकता है।

फसल/खेती प्रणाली

नारियल पेड़ों के बीच पर्याप्त दूरी छोड़ने से मिश्रित और अंतर फसलों की खेती के लिए काफी अधिक गुंजाइश रहती है और बाग के लगभग 70-75 प्रतिशत तक ज़मीन का उपयोग अंतरखेती के लिए किया जा सकता है। भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और अखिल भारतीय फसल अनुसंधान परियोजना के अग्रणी प्रयासों के फलस्वरूप नारियल

आधारित अंतर/मिश्रित, बहुमंजिली, बहुप्रजातीय फसल प्रणालियों के लिए कई प्रौद्योगिकियाँ विकसित हुई हैं और किसानों द्वारा व्यापक तौर पर इन्हें अपनाया जा रहा है। मिट्टी और हवा का भरपूर लाभ उठाते हुए विभिन्न स्तरों पर वार्षिक/ द्विवार्षिक/बहुवर्षीय फसलों को शामिल करके अधिक प्रभावी रूप से की जाने वाली उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली और नारियल आधारित मिश्रित प्रणाली के साथ साथ कुक्कुटपालन और पशुपालन को भी जोड़ने से अधिक आय प्राप्त की जा सकती है और मुख्य फसल के भाव में होने वाली गिरावट से भी बचाया जा सकता है।

बाग से अधिकतम आर्थिक आय प्राप्त करने के लिए नारियल आधारित फसल प्रणाली में उच्च मूल्य वाली हल्दी फसल की सिफारिश की जाती है। फसल/खेती प्रणाली में निवेशित प्रति रुपए के लिए 1.7 से 2.7 के बीच निवल आय प्राप्त होती है और अनुसंधानकर्ताओं ने यह पहले ही साबित किया है कि नारियल के साथ हल्दी की खेती करने से नारियल की उत्पादकता में सुधार होता है। ऐसे नारियल बागों के लिए, जहाँ 75 प्रतिशत से अधिक सूर्य प्रकाश प्राप्त हो सकता है, विविध अंतरफसलों को शामिल करते हुए कई टिकाऊ फसल प्रणाली नमूने पहचाने गए हैं। हल्दी जिसकी बाज़ार में उच्च माँग होती है और खेती के लिए प्रकाश की ज़रूरत कम पड़ती है, उसकी अंतरखेती करना अत्यंत आशाजनक है और उसे नारियल बागों में प्रभावी रूप से अपनाया जा सकता है। नारियल पेड़ों के बीच की जगह में हल्दी की खेती किए जाने पर सिंचाई लगातार करते रहने के कारण नारियल के जड़ क्षेत्र में नमी की उपलब्धता में सुधार हुआ है जिसके फलस्वरूप बुतामों का गिराव कम हुआ और ताड़ पर अधिक फल लगना शुरू हुआ है। अंतरखेती से फसल विविधता भी अधिक होती है जो विविध प्रकार के कीटों और मिट्टी के सूक्ष्मजीवों को आवासव्यवस्था प्रदान करता है और यह एकल फसल प्रणाली में कतई संभव नहीं है। नारियल बागों में अंतर फसल के रूप में हल्दी की खेती करने के लिए यह पर्याप्त अवसर खोल देता है। नारियल आधारित फसल प्रणाली से प्राप्त पुनर्चक्रण योग्य जैवभार प्रति हेक्टर 15-20 टन है जो सुविधाजनक रूप से वर्मी कंपोस्ट के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है और आसानी से इस प्रणाली में पुनर्चक्रित किया जा सकता है, जो जैविक पोषण के लिए मार्ग प्रशस्त करता है और इससे मिट्टी का स्वास्थ्य सुधर जाता है और टिकाऊ उत्पादकता संभव हो जाती है।

हल्दी

हल्दी (*कुरकुमा लोंगा एल.*) वार्षिक पौधा है और यह ज़िंजिबेरेसीया परिवार का सदस्य है। भारत विश्व का प्रमुख हल्दी उत्पादक और निर्यातक देश है। भारत में 2.08 लाख हेक्टर क्षेत्र में हल्दी की खेती की जाती है और इसका कुल वार्षिक उत्पादन 102.9 करोड़ टन और उत्पादकता प्रति हेक्टर 5.1 मेट्रिक टन है। भारत में आँध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात और केरल में मुख्यतः हल्दी की खेती की जाती है। यही नहीं तटीय राज्यों के नारियल क्षेत्रों में भी हल्दी की खेती करने की गुंजाइश है, कुछ फार्मों को छोड़कर अन्य स्थानों में वाणिज्यिक तौर पर इसकी खेती नहीं की जाती है। नारियल के बीच उपलब्ध अंतर जगहों का उपयोग हल्दी की उन्नत किस्मों की खेती करने के लिए किया जा सकता है जिससे किसानों को बेहतर आमदनी प्राप्त होती है, अन्यथा यह परती भूमि बन जाती है।

किस्में

देश में हल्दी की कई कृषिजोपजातियाँ उपलब्ध हैं और जिन स्थानों पर इसकी खेती की जाती है उन स्थानों के नाम पर यह जाना जाता है। खेती के लिए उपयुक्त कुछ लोकप्रिय कृषिजोपजातियाँ हैंः सुवर्णा, सुगुणा, सीओ - 1, बीएसआर - 1, सुगंधम, रोमा, सुरोमा, राजेन्द्र सोनिया, कृष्णा, आईआईएसआर प्रभा, आईआईएसआर प्रतिभा, सेलम, केसर, जीएनटी - 1, जीएनटी - 2 आदि।

नारियल बाग में हल्दी की अंतर खेती

नारियल बागों में हल्दी की खेती करने हेतु उन्नत खेती प्रक्रियाएं

1. भूमि की तैयारी और रोपण

मानसून पूर्व बारिश की प्राप्ति के साथ भूमि की तैयारी शुरू की जाती है, जिसमें मिट्टी की गहरी जुताई करके इसे खेतीयोग्य बनाया जाता है। रोपण के लिए उपयुक्त समय मई महीना या जून के आखिरी हफ्ते तक होता है। मानसून पूर्व बारिश तुरंत प्राप्त होने के साथ 1.0 मीटर चौड़ी, 15 सें.मी. ऊँची और सुविधाजनक लंबाई की क्यारियाँ तैयार की जाती हैं और क्यारियों के बीच 50 सें.मी. की दूरी छोड़ी जाती है। ज़मीन पर हल चलाकर टीले तथा कुंड बनाकर इनमें भी रोपण किया जा सकता है।

2. बीज सामग्री

रोपण के लिए संपूर्ण या विभाजित मातृ प्रकंद और लंबे पतले (फिंगर) प्रकंदों का उपयोग किया जाता है और अच्छी तरह विकसित स्वास्थ्यपूर्ण और रोगमुक्त प्रकंदों को चुनना चाहिए। रोपण 30 सें.मी. x 15 सें.मी. की दूरी के साथ क्यारियों में करना चाहिए। कतारों के बीच टीलों और कुंडों की अनुकूलतम दूरी 45-60 सें.मी. और पौधों के बीच की दूरी 25 सें.मी. होती है। एक हेक्टर के नारियल बाग के अंतर्गत हल्दी का रोपण करने के लिए 800-1000 कि.ग्रा. प्रकंदों की आवश्यकता होती है।

3. खाद और उर्वरक प्रयोग

प्रति हेक्टर 20-25 टन की दर पर गोबर खाद या कंपोस्ट का प्रयोग, भूमि की तैयारी करते समय गड्ढ़ों में छिड़ककर जुताई करके या रोपण के समय क्यारियों में प्रयोग करके या गड्ढ़ों की मूल तैयारी करते समय मिट्टी में फैलाकर किया जाना चाहिए। प्रति हेक्टर 60 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा.फोस्फरस पेंटोक्साइड और 60 कि.ग्रा. पोटेशियम ऑक्साइड दो भागों में देनी चाहिए। अर्थात् रोपण के समय 60 कि.ग्रा. फोस्फरस और पोटेशियम का प्रयोग किया जा सकता है। रोपण के 30 दिन बाद 30 कि.ग्रा. नत्रजन का प्रयोग किया जा सकता है और शेष आधा नत्रजन का प्रयोग रोपण के 60 दिनों के बाद किया जा सकता है। नीम खली या अरंडी खली जैसे जैविक खादों का प्रयोग रोपण के समय प्रति हेक्टर 200 कि.ग्रा. की दर पर किया जा सकता है। ऐसे मामलों में गोबर खाद की मात्रा कम की जा सकती है। कयर कंपोस्ट(प्रति हेक्टर 2.5 टन की दर पर) के साथ गोबर खाद, जीवाणु खाद(एज़ोस्पाइरिलम) और नत्रजन, फोसफरस और पोटेश के लिए सिफारिश की गई मात्रा के आधे भाग का एकीकृत प्रयोग भी अनुशंसित है।

4. पलवार लगाना

फसल के अंकुरण के तुरंत बाद ही प्रति हेक्टर 12-15 टन की दर पर हरी पत्तियों या सनई हरी खाद या भूसे से पलवार लगाना चाहिए।

5. निराई-गुड़ाई और सिंचाई

खरपतवार की बहुलता के अनुसार 60, 90 और 120 दिनों के अंतराल में तीन बार निराई - गुड़ाई करनी चाहिए। यदि फसल सिंचित परिस्थिति में पाली जा रही हो तो मौसम और मिट्टी की परिस्थितियों के अनुसार मटियारी मिट्टी में 15 से 23 बार और काली मिट्टी में 8-13 बार सिंचाई की जानी चाहिए।

6. तुडाई और पैदावार

जनवरी - मार्च में रोपण के बाद किस्म के अनुसार 7-9 महीनों में तुडाई के लिए फसल तैयार हो जाती है। शीघ्र तैयार हो जाने वाली किस्में 7-8 महीनों में, मध्यम किस्में 8-9 महीनों में और देरी से तैयार हो जाने वाली किस्में 9 महीनों में पक जाती हैं। पत्तों का पीला होना और सूखना फसल के पकने के लक्षण हैं। भूमि की जुताई करके प्रकंदों को हाथ से एकत्रित किया जाता है या कुदाल से गुच्छों को ऊपर उठाया जाता है। तुड़ाई किए गए प्रकंदों पर छिपी मिट्टी और अन्य बाह्य सामग्रियों को हटाया जाता है। हल्दी की पैदावार मिट्टी के प्रकार, प्रबंधन प्रणालियाँ आदि पर निर्भर होती है, किंतु गुजरात के तटीय क्षेत्रों में नारियल बागों में हल्दी की औसत पैदावार प्रति हेक्टर 10-12 टन है।

7. नारियल के साथ अंतर फसल के रूप में हल्दी से अनुमानित आय

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना केन्द्र, नवसारी में नारियल बागों में अंतर फसल के रूप में हल्दी की खेती की गई है। नारियल बागों के अंतर्गत हल्दी से प्रत्याशित पैदावार प्रति हेक्टर 10-12 टन है और हल्दी का वर्तमान भाव प्रति कि.ग्रा. के लिए 15-20 रुपए हैं जिसके अनुसार प्रति हेक्टर से हल्दी का न्यूनतम औसत अतिरिक्त सकल आय सालाना 1,50,000 रुपए है जो नारियल से नियमित रूप से प्राप्त आय से अतिरिक्त है। यदि प्रकंद और फिंगर्स(बीज सामग्री) का प्रसंस्करण करके इसे पाउडर रूप में तैयार किया जाता है तो बाज़ार में इसकी बिक्री प्रति कि.ग्रा. 150-200 की दर पर की जा सकती है। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 82 फलों की दर पर मुख्य फसल याने नारियल से 1,43,500 रुपए की सकल आय प्राप्त होती है(नारियल का वर्तमान भाव 10 रुपए की दर पर)। इसके अलावा हल्दी के पत्ते जैसे मूल्यवान जैवभार भी इससे प्राप्त होते हैं, जिसके कंपोस्ट बनाने से तथा बाग में इसका पुनर्चक्रण करने से उर्वरकों की लागत कम की जा सकती है।

नारियल - हल्दी फसल प्रणाली की आर्थिकी(रु./हे.)	
उत्पादन लागत	114000 [78000(नारियल) + 66000(हल्दी)]
सकल आय	218500 [143500(नारियल) + 150000(हल्दी)]
कुल आय	149000 [65500(नारियल) + 84000(हल्दी)]

इसप्रकार नारियल बाग में हल्दी के साथ अंतर खेती की काफी अधिक गुंजाइश है जो कि एक छाया इच्छुक फसल भी है और बाज़ार में इसकी लगातार माँग रहती है। नारियल - हल्दी की खेती के लिए अनुकूल कृषि जलवायु परिस्थितियाँ भारत के दक्षिणी क्षेत्रों और गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र के कुछ इलाकों में उपलब्ध है।

लाल ताड़ घुन-नारियल पेड़ को नुकसान पहुँचाने वाला कीट

डा.अभिषेक शुक्ला
कीट विज्ञान विभाग, न.म.कृषि महाविद्यालय, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी-396 450, गुजरात

नारियल पेड़ कल्पवृक्ष के नाम से भी जाना जाता है। नारियल पेड़ को नुकसान पहुँचाने वाले कई कारक हैं और इनमें कीटों का स्थान प्रमुख है। आज के समय में इन कीटों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। इन्हीं कीटों में रेड पाम वीविल या लाल ताड़ घुन प्रमुख कीट है। प्रस्तुत लेख में नारियल के इसी नाशीकीट के बारे में चर्चा की जा रही है, जो कि हमारे नारियल उत्पादक किसानों के लिए उपयोगी साबित होगा। ये घुन नारियल के अतिरिक्त खजूर, सैगो पाम आदि को भी प्रकोपित करते पाए जाते हैं। ये कीट समशीतोष्ण तथा गर्म स्थानों में नारियल का एक महत्वपूर्ण कीट माना जाता है। यह कीट भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश, श्रीलंका, मलेशिया, फिलीपीन्स, न्यूगिनी, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, थाईलैंड, कम्बोडिया, ताईवान, वियतनाम आदि देशों में भी पाया जाता है। इस कीट का वैज्ञानिक नाम *रिंकोफोरस फेरुजीनियस* है। यह कीट कोलियोप्टेरा गण की कुर्कुलिओनिडी कुल से संबंधित कीट है।

कीट की पहचान

यह कीट बेलनाकार का और लाल भूरे रंग का होता है। इसकी लंबाई लगभग 35 सें.मी. तथा चौड़ाई 12 सें.मी. तक होती है। वयस्क नर घुन के शरीर पर छोटे - छोटे भूरे रंग के बाल पाए जाते हैं और नरों में बाल का गुच्छा भी होता है।

कीट का जीवन-चक्र

वयस्क मादा भृंग क्रीमी सफेद रंग के अंडे देती है। नारियल के पेड़ों में छिद्र बनाकर उसके अंदर अंड़े दिए जाते हैं। सात साल तक के पौधों में छिद्र करके उसमें अंडे दिए जाते हैं तथा बड़े पेड़ों में कटे स्थानों पर ये अंड़े डालते हैं। एक मादा कीट लगभग 25 से 80 तक अंडे देती है। ये अंडे सफेद अंडाकार के और लगभग 2.6 मि.मी. लंबे एवं 1.12 मि.मी. चौड़े होते हैं। ये अंडे एक एक करके दिए जाते हैं। ये 3 से 5 दिनों में फूटते हैं तथा इनसे सूँड़ी(ग्रब) निकल आती है। अंड़े से निकली सूँड़ी सफेद रंग की होती है और धीरे-धीरे वे कोमल पेड़ों की जड़ों में छिद्र करते हैं। पूर्ण विकसित सूँडी माँसल और वक्राकार की होती है। इसकी लंबाई 50 मि.मी. होती है और चौड़ाई 20 मि.मी. होती है। ये सूँड़ी लगभग 35 से 76 दिनों में पूर्ण विकसित होती हैं। प्यूपा बनाने से पहले ये रेशमी कोकून का निर्माण करते हैं तथा उसके अंदर प्यूपा बन जाता है। यह प्यूपा भूरे रंग का रेशेदार,

वयस्क कीट

छोटे पौधे के शिखर पर कीट का प्रकोप

कीट प्रकोप से गिरा शिखर

जालिकारूपी होता है, इसकी लंबाई 35 मि.मी. तथा चौड़ाई 15 मि.मी. तक होती है। यह प्यूपाकाल लगभग 12 से 23 दिनों का होता है। वयस्क 4 से 17 दिनों तक कोकून में ही रहता है। एक तने में 40 से 50 भृंग पाए जाते हैं।

कीट द्वारा नुकसान

इसकी सूँडी कोमल पौधों के ऊतकों को खाती है। जब अधिक मात्रा में प्रकोप होता है तो कोमल प्ररोह पर ये आक्रमण कर देते हैं। यह घुन नारियल या ताड़ के रस पर आकर्षित होता है। सबसे पहले यह कीट तने में छिद्र करता है तथा उनसे भूरे रंग का द्रव निकलता है और डंठल टूटकर पत्तियाँ गिर जाती हैं। यह ऊपर तने में एक मि.मी. तक लंबाई में छिद्र बनाकर खाता है। इसके प्रकोप से कोशिकाएं तुरंत सड़ने लगती हैं। इसके कारण उनमें से तेज़ बदबू आने लगती है। तने में कीट द्वारा सुरंगें बनाई जाने के कारण तेज़ हवा के झोंकों से नारियल पेड़ गिर पड़ते हैं।

नियंत्रण के उपाय

1. मृत ताड़ों को हटाकर जला देना चाहिए। बीच-बीच में पेड़ों के शिखर की सफाई करनी चाहिए। इस कीट के प्रकोप वाले शिखर को नीम की खली से भरना चाहिए।
2. कीट की सूँडी को शिखर से निकालकर क्षतिग्रस्त भाग पर कोलतार लगाया जाना चाहिए।
3. नारियल पर घाव न लगने दें क्योंकि ऐसी जगह पर मादा कीट अपने अंडे दे सकती है। यदि कोई घाव लग भी जाता है तो कोलतार से इसे बंद या भर देना चाहिए।
4. पत्ते काटते समय तने से 120 से.मी. तक डंठल को छोड़ देना चाहिए ताकि काटे गए सिरे से ये कीट अंदर न घुस सके।
5. नारियल के पेड़ों पर घाव नहीं होने चाहिए क्योंकि इनसे ये कीट अंड़े देने के लिए आकर्षित होते हैं। बाग में मृत ताड़/पौधों को एकत्रित करके उनका नाश करना चाहिए।
6. इस कीट को आकर्षित करने के लिए लंबाई में चीरकर कटे नारियल की लकड़ी का ट्रैप(लगभग 50 सें.मी.) किण्वित ताड़ी अथवा खमीर युक्त अनन्नास अथवा गन्ने के रस का लेप करके रखना चाहिए। इस घुन को पकड़ने के लिए नारियल के डंठल के टुकड़ों को किण्वित ताड़ी से लेप करके मटके में डालकर प्रति हेक्टर 10 मटके के हिसाब से नारियल के बागों में रखने चाहिए। ये ट्रैप शाम के समय रखने चाहिए तथा अगले दिन सुबह इस ट्रैप में फँसे घुनों को एकत्रित करके मार देना चाहिए।
7. इस कीट के अंड़ों तथा भृंग पर ईयरविग(कनखपूरा) शिकार करके उनका नाश करता है, अतः इस कीट का संरक्षण करना चाहिए।
8. इस कीट की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए आज बाज़ार में फेरोमोन ट्रैप उपलब्ध है। यह ऐग्रिगेशन फेरोमोन ट्रैप तथा फेरोल्यूर और फेरोल्यूर+ के नाम से उपलब्ध है।
9. तनों के इंजेक्शन के तौर पर अनेक प्रकार के रसायनों का भी प्रयोग किया जा सकता है इसके लिए फिप्रोनिल और इमिड़ाक्लोप्रिड का प्रयोग किया जा सकता है।

इन सभी नियंत्रण के तरीकों को कृषक समूहों द्वारा बड़े पैमाने पर अपनाने से इस कीट का प्रभावी नियंत्रण संभव होगा।

नारियल पेड़ नहीं,
नारियल पत्ता बन गया चमकता सितारा

आबे जेकब, डेप्यूटी संपादक, नारियल विकास बोर्ड, कोची

कल्पवृक्ष नारियल से मानवराशि को प्राप्त अनेक वरदानों में और एक नया मूल्य वर्धित उत्पाद भी जोड़ा गया है। आज तक नारियल के सूखे पत्ते का उपयोग छत छानने के लिए, बाड़ा लगाने के लिए, ईंधन के रूप में तथा हाल ही में कंपोस्ट बनाने के लिए भी किया जाता था। अब सूखे नारियल पत्ते से पीने के स्ट्रॉ का निर्माण किया जा रहा है। भौगोलिक स्तर पर विशेषकर भारत में ठीक प्लास्टिक पर रोक एवं नियंत्रण की घोषणा के समय पर ही प्लास्टिक स्ट्रॉ के बदले में बाज़ार में सूखे नारियल पत्ते से बने स्ट्रॉ लाया गया है। इस मूल्य वर्धित उत्पाद की विशेषता यह है कि यह बनाने के लिए कच्चा माल कम दाम में प्राप्त होता है। अत: नारियल पत्ते का सुनहरा भविष्य सामने आ गया है। नारियल का सूखा पत्ता अब करोड़ों के व्यापार का एक अभिन्न अंग बन रहा है। नारियल पत्ते सूखकर ऊँचाई से धरती पर गिर जाने के बाद भी फिर ऊँचाइयों को छूने का सौभाग्य उसे मिल रहा है।

प्यास बुझाने के लिए शीतल पेय पीने की हमारी आदत कभी भी खतम नहीं होगी। स्ट्रॉ के बिना यह संभव ही नहीं। किंतु प्लास्टिक पर रोक लगाने के बाद स्ट्रॉ का निर्माण लगभग बंद हो चुका है। कुछ लोगों ने कागज़ से स्ट्रॉ बनाकर बाज़ार में पेश किया था लेकिन इस उत्पाद के भाव एवं उत्पादन लागत के बीच बहुत बड़ा अंतर था। क्योंकि मात्र एक बार के उपयोग के बाद स्ट्रॉ फेंक दिया जाता है। लेकिन रोज़मर्रा की जिंदगी से स्ट्रॉ को कभी भी अलग नहीं किया जा सकता।

मात्र अमेरिका में प्रति दिन 50 करोड़ स्ट्रॉ का उपयोग किया जाता है। भारत उतना धनी देश नहीं है, फिर भी यहाँ प्रतिदिन 33 लाख स्ट्रॉ का उपयोग किया जाता है। फ्रीडोणिया ग्रूप के बाज़ार अनुसंधान प्रभाग द्वारा वर्ष 2017 में किए गए अनुसंधान के अनुसार उस समय अमेरिका में प्रतिदिन 39 करोड़ प्लास्टिक स्ट्रॉ का उपयोग किया जाता था। परंतु उपयोग के बाद, ये प्लास्टिक की छोटी नलियाँ अंत में नदियों में एवं झीलों में पहुँच जाती हैं और वहाँ जमकर पर्यावरणीय जोखिम पैदा करती हैं जो दिन ब दिन चुनौतियाँ खड़ी कर देती हैं। वास्तव में सरकार के सामने भी प्लास्टिक पर रोक लगाने के अलावा और कोई रास्ता नहीं थी। इस रोक में स्ट्रॉ भी फँस गया।

प्लास्टिक पर रोक लगाना उतना व्यावहारिक नहीं होने पर भी सरकार की ओर से कठोर दबाव, चेतावनी

डा. सजी नारियल किसानों के साथ

महिलाएं नारियल स्ट्रॉ के निर्माण में

तैयार नारियल स्ट्रॉ

और दंड के डर से समाज ने उसे स्वीकारा। परंतु प्लास्टिक स्ट्रॉ जैसी सरल और रोज़मर्रे के उपयोग की वस्तु के लिए एक विकल्प ढूँढ़ना बड़ी समस्या बन गई।

इस अवसर पर ही, नारियल के सूखे पत्ते से शत प्रतिशत सड़नीय और पर्यावरण अनुकूल केरा ओर्गानिक स्ट्रॉ के निर्माण की बंगलूरु स्थित क्रैस्ट मानित विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के अध्यापक डा. सजी वर्गीस की खोज के लिए स्वीकृति प्राप्त हुई।

डा. सजी के इस उत्पाद को बाज़ार में प्रचलित होने से पहले ही कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इसके अलावा, कैनडा, फ्रैंस, जर्मनी, स्पेइन आदि 20 देशों से एक करोड़ स्ट्रॉ के लिए आर्डर भी प्राप्त हुए हैं। इस उत्पाद के लिए डा. सजी को पेटंट भी प्राप्त हैं।

केरा ओर्गानिक स्ट्रॉ के विपणन का अधिकार अब बंगलूरु क्रैस्ट कॉलेज के अधीन कार्यरत एवलोजिया इको केयर स्टार्ट अप कंपनी को है। *एवलोजिया* एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है वरदान। *एवलोजिया* का विश्वास है कि भूमि मात्र आवास का स्थल नहीं है बल्कि वास्तव में मानवराशि को प्राप्त वरदान है। इसलिए हमें भूमि का संरक्षण करना चाहिए। इसके लिए एक उपाय प्लास्टिक से भूमि को जो क्षति पहुँचती है उसका निवारण करना है। इसके लिए घर, कार्यालय, होटल आदि में उपयोग किए जाने वाले प्लास्टिक और अन्य वस्तुएं जो सड़ती नहीं हैं, से बनी सामग्रियों के लिए विकल्प बनाना एवलोजिया का घोषित लक्ष्य है। सुस्थिर वैश्विक सुव्यवस्था में विश्वास करके उसके लिए कार्य करने वाले लोगों के ज्ञान, विशेषज्ञता एवं सर्जनात्मकता का लाभ उठाकर एवलोजिया नारियल पत्ता स्ट्रॉ को हमारे सामने लाया है।

एवलोजिया, नारियल पत्ता स्ट्रॉ से 'खेदहीन खपत' के संदेश का प्रचार करती है। एवलोजिया का विश्वास है कि प्रकृति मानव के दैनिक जीवन के लिए सब कुछ प्रदान करती है। हम प्रकृति माता को क्षति पहुँचाए बिना ही सबकुछ पा सकते हैं। इसलिए कंपनी की प्रत्याशा है कि प्रकृति पर, समाज पर और अंतिम उपभोक्ता पर तक असर करने वाले उत्पाद बना सकें।

नारियल पत्ता स्ट्रॉ का कच्चा माल सूखकर ज़मीन पर गिरनेवाला नारियल पत्ता है। केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि दक्षिणी राज्यों में यह बहुतायत में उपलब्ध है। केरा स्ट्रॉ के गुण अनेक हैं। शत प्रतिशत पर्यावरण अनुकूल एवं सड़नीय है। बाहर से कुछ लेप करने, लगाने या प्रसंस्करण करने की आवश्यकता नहीं है। छह घंटे तक पानी में डालने पर भी कुछ बदलाव नहीं होता है। एक वर्ष तक यह खराब नहीं होता है। हरेक स्ट्रॉ का अलग अलग रंग होता है। इसलिए दिखने में सुंदर है। इसका निर्माण भारतीय गाँवों की गरीब महिलाएँ करती हैं। उनका रोज़गार होने के कारण ये खरीदने वाले और इसका उपयोग करने वाले भारत की गरीबी को मिटाने में सहभागी बन जाते हैं।

वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो भी केरा स्ट्रॉ आज की आवश्यकता है। इसका निर्माण नारियल पत्ते से किया जाता है जो पेड़ से गिर जाने पर या तो ज़मीन पर पड़कर सड़ जाता है या ईंधन के रूप में उपयोग किया जाता है। कुछ बाहरी वस्तु या शरीर के लिए हानिकारक चीज़ इसमें नहीं है। केरा स्ट्रॉ बहुत ही हल्का है और इसके निर्माण के लिए नारियल पत्ते में निहित प्राकृतिक मोम का उपयोग किया जाता है। इसका एक ही पार्श्व प्रभाव है और वह है नारियल की खेती पर निर्भर दक्षिण भारत के अनेक गाँवों का आर्थिक उन्नयन।

प्रकृति में विलीन हो जाने वाला उत्पाद होने के नाते वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं के लिए यह समाधान बन जाता है। इसका फायदा महिलाओं के स्वयंसेवी समूहों एवं छोटे पैमाने के किसानों और अन्य लघु उद्यमियों को और आखिरकार भारत के गाँवों के गरीबों को प्राप्त होता है। उपयोग करने में कोई खराब असर नहीं होता है। पूर्ण रूप से सुरक्षित है। इसी बीच बाज़ार में पेश किया गया कागज़ के स्ट्रॉ के भाव की केरा स्ट्रॉ से तुलना तक नहीं की जा सकती है। कागज़ बनाने के लिए पेड़ों को काटना पड़ता है अतः ये अंततः पर्यावरण के लिए हानिकारक है। केरा स्ट्रॉ बनाने के लिए कागज़ के स्ट्रॉ बनाने की खर्च का सौवाँ अंश भी नहीं लगता है।

नारियल पेड़ से गिरकर बेकार खराब होनेवाले पत्तों से एवलोजिया पाँच से आठ मिली तक आकार के स्ट्रॉ बनाता है और प्लास्टिक के बदले में विश्व भर के देशों में वितरित करता है। एक परत वाला एवं दो परत वाला स्ट्रॉ बनाए जाते हैं। टेट्रा पैकों के लिए नारियल पत्ते से तीली निकाले बिना खास स्ट्रॉ बनाए जाते हैं।

ब्लसिंग फार्म्स को भविष्य में नारियल के पत्ते से टेबिल मेट, कोस्टर एवं कोन्आटा (नारियल पेड़ के शिखर में डंठल और काष्ठ को आवृत करने वाला नेट सा आवरण) से बर्तन माँचने वाला स्क्रबर आदि बनाने का उद्देश्य है।

वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार मूल्य के अनुसार एक केरा स्ट्रॉ के लिए तीन रुपए से चार रुपए सत्तर पैसे तक प्राप्त होता है। पर्यावरण अनुकूल सामग्रियाँ बनाने के लिए ब्लसिंग फार्म्स मई 2019 में पंजीकृत किया गया था। शीघ्र ही, स्ट्रॉ का निर्माण व्यावहारिक ढंग से करना शुरू किया गया। इसके लिए 2019 दिसंबर में स्वदेशी स्टार्ट अप एवार्ड और स्कोटलैंड के क्लाइमेट लोंचपैड एवार्ड भी प्राप्त हुए हैं। इस के बीच भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के 2019 नवंबर के फिलीपीन्स दौरे के सरकारी प्रतिनिधिगण में डा.सजी वर्गीस को भी चुना गया। यह भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल (ASSOCHAM) की सहायता से हुआ था।

डा.सजी की परियोजनाओं में सहभागी बनकर कार्य करने हेतु फिलीपीन्स के कुछ अभिकरणों ने इच्छा व्यक्त की है।

नारियल के एक पत्ते से औसत 200 स्ट्रॉ बनाए जा सकते हैं। इस प्रकार एक मज़दूर औरत प्रतिदिन 1000 स्ट्रॉ बना सकती है और आठ महिलाओं की एक छोटे पैमाने की इकाई प्रतिदिन 8000 - 10000 स्ट्रॉ बना सकती है। ये सारे स्ट्रॉ ब्लसिंग फार्म द्वारा वापस खरीद लिए जायेंगे। एक छोटे पैमाने की इकाई शुरू करने के लिए यंत्रों की लागत सहित पूँजी निवेश तकरीबन 3.7 लाख रुपए है। डा. सजी के अनुसार केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि दक्षिणी राज्यों की गरीब महिलाओं का उत्थान ही इस उद्यम का लक्ष्य है।

स्ट्रॉ का निर्माण आठ चरणों में किया जाता है। पहले पत्तों को धोकर साफ किया जाता है। उस के बाद नारियल पत्ते को छीला जाता है, चौड़ाई ठीक की जाती है, फिर(बेलनाकार में) लपेटकर काटा जाता है । काटे गए स्ट्रॉ यूवि स्ट्रेरिलाइज़ करके पैक किए जाते हैं और बाज़ार में भेज दिए जाते हैं।

वर्तमान में निर्माण की इकाइयाँ मात्र कासरगोड, मधुराई और तूत्तुकुटी में ही स्थित हैं। अगले छह महीनों में केरल के 12 जिलाओं में इसका निर्माण शुरू किया जायेगा।

डा. सजी वर्गीस केरल के आलप्पुष़ा से है। वे पिछले तीन वर्षों से बंगलूरु के क्रैस्ट विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी विभाग में एसोसियेट प्रोफेसर है। डा.सजी ने नागपूर विश्वाविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की है और वे बीस साल वहाँ अध्यापन के साथ समाज के सीमांत समूहों के आर्थिक उत्थान के लिए प्रौद्योगिकियों के विकास में व्यस्त थे। उन्होंने ठेला गाड़ियों में मूँगफली भूनकर बेचने वालों के लिए एक उपस्कर की खोज की थी। रास्ते में चाय बेचने वालों के लिए खास ब्रैंड भी विकसित किया था।

डा. सजी वर्तमान में नागपूर स्थित ब्लसिंग फार्म्स लिमिटेड स्टार्ट अप कंपनी का सीईओ है। ब्लसिंग फार्म्स 2019 मई में क्रैस्ट विद्यालय के इन्कुबेशन सेंटर में पंजीकृत किया गया था और इस उद्यम को नारियल के सूखे पत्तों से पर्यावरण अनुकूल स्ट्रॉ बनाने के लिए पेटंट प्राप्त हुआ है।

बोर्ड की पत्रिकाओं की विज्ञापन दर

नारियल विकास बोर्ड के प्रकाशन हैं इंडियन कोकोनट जर्नल (अंग्रेज़ी मासिक) इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम मासिक), भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक), भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक), इंडिया तेंग्रै इदष़ (तमिल त्रैमासिक), भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्ध वार्षिक) तथा भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक)। इन पत्रिकाओं में वैज्ञानिक नारियल कृषि तथा नारियल उद्योग से संबंधित लेख प्रकाशित करते आ रहे हैं। इन पत्रिकाओं के अधिकांश ग्राहक किसान, अनुसंधानकर्ता, उद्योगपति, व्यापारी, पुस्तकालय आदि हैं।

विज्ञापन के आकार	इंडियन कोकनट जर्नल (अंग्रेज़ी पत्रिका)	इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम पत्रिका)	इंडिया तेंग्रै इदष़ (तमिल त्रैमासिक)	भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक)	भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक)	भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्धवार्षिक)	भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	5000	5000	शून्य	5000	5000
पूरा पृष्ठ (रंगीन)	20000	20000	10000	10000	5000	10000	10000
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	3000	3000	शून्य	3000	3000
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	1500	1500	शून्य	1500	1500
बाहरी पृष्ठ का भीतरी भाग (रंगीन)	25000	25000	10000	10000	8000	10000	10000
बाहरी पृष्ठ (रंगीन)	30000	30000	15000	15000	10000	15000	15000

पत्रिका के किन्हीं दो अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 10 प्रतिशत की तथा तीन या अधिक अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 12 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। मान्य विज्ञापन एजेंसियों को 15 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

ओड़िशा के तटीय बलुई मिट्टी में नारियल पेड़ों का स्वास्थ्य प्रबंधन

***एस.सी.साहू और **एच.पी.महेश्वरप्पा**

*अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, भुबनेश्वर केन्द्र, ओड़िशा कृषि विश्वविद्यालय, ओड़िशा

**अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, भा.कृ.अनु.प.-कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड

मानवराशि के लिए आहार, पेय, औषधि, ईंधन, रेशा और सहारा प्रदान करने जैसे नारियल पेड़ के बहुविध उपयोग होते हैं और इसलिए इसे कल्पवृक्ष कहा जाता है। इसकी अहमियत, उपयोग और नियमित रूप से फसल देने की क्षमता की दृष्टि से विश्व के कई एशियाई एवं पैसफिक देशों में नारियल की खेती की जाती है। नारियल पेड़ की कार्बन पृथक्करण क्षमता को ध्यान में रखते हुए जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में उसे भविष्य की फसल मानी जाती है क्योंकि इसमें कार्बन पृथक्करण की क्षमता निहित होती है।

ओड़िशा में नारियल का परिदृश्य

गत कुछ दशकों में ओड़िशा में नारियल की खेती का ज़बरदस्त कायापलट हुआ है क्योंकि नारियल की खेती राज्य के परंपरागत क्षेत्रों से बढ़कर गैर परंपरागत क्षेत्रों में भी फैल गई है। चक्रवाती तूफानों की कहर से राज्य में नारियल की खेती को अक्सर नुकसान होता रहता है। अक्तूबर 1999 में सूपर साइक्लोन, अक्तूबर 2013 में फाइलीन और अक्तूबर 2014 में हुदहुद जैसे चक्रवाती तूफानों के कारण नारियल के अधीन क्षेत्र और उत्पादन में काफी घट-बढ़ हुई है। 3 मई 2019 को राज्य में लगभग 250 कि.मी./घंटे की तेज़ रफ्तार से चली चक्रवाती तूफान फानी के कारण बहुवर्षी बागवानी फसलें जड़ से उखड़ गईं जिसके कारण गंभीर नुकसान पहुँचा। छह जिलों में विशेषतया पुरी, खुर्दा, कट्टक, जगतसिंहपुर, जजपुर और केन्द्रापारा के सारे बागवानी फसलों में सर्वाधिक नुकसान नारियल बाग को हुआ था। उपर्युक्त छह जिलों में नारियल के अधीन 26151 हेक्टर क्षेत्र हैं जिसमें से लगभग 7930 हेक्टर नारियल बाग को फानी चक्रवाती तूफान के कारण नुकसान पहुँचा। इसमें से 5544 हेक्टर के नारियल पेड़ जड़ से उखड़ने/तना टूट जाने/ शिखर की गंभीर क्षति से नुकसानग्रस्त हुए और 2386 हेक्टर क्षेत्र के ताड़ों के शिखर को भागिक रूप से नुकसान पहुँचा। हालाँकि नारियल के अधीन क्षेत्र और उत्पादन का अधिकतम हिस्सा दस तटीय जिलों में सीमित हैं, किंतु ओडिशा के सारे तीस जिलों में नारियल की खेती की जाती है। देश में नारियल की

खेती में ओडिशा का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है क्योंकि नारियल के अधीन क्षेत्र के हिसाब से ओडिशा पाँचवें स्थान पर और उत्पादन में छठे स्थान पर है। अब नारियल की खेती 50,910 हेक्टर क्षेत्र में की जा रही है और वार्षिक उत्पादन 34.21 करोड़ फल और उत्पादकता प्रति हेक्टर 6719 नारियल (2018-19) है।

बलुई मिट्टी में नारियल बाग

तटीय बलुई मिट्टी में नारियल का बागान

तटीय ओडिशा के नारियल बागानों का बहुत बड़ा हिस्सा बलुई मिट्टी में स्थित है। ऐसे बागानों में उत्पादकता बहुत कम होती है और उसके कारण हैं: खराब पोषण स्थिति, कम घनायन विनिमय क्षमता (सीईसी) (0.4-0.54 एमई/100 ग्राम) और मिट्टी में निहित जैविक कार्बन संघटकों की मात्रा में कमी। गर्म और आर्द्र जलवायु के कारण मिट्टी के जैविक तत्वों को नुकसान पहुँचने से भी उत्पादकता में कमी की समस्या और गंभीर हो जाती है। ओडिशा के अलावा, प्रायद्वीपीय भारत के पूर्व और पश्चिमी समुद्रीतट के सभी तटीय क्षेत्रों की परिस्थिति भी इसी के समान है और ये क्षेत्र मुख्यतः आँध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों में आते हैं। तटीय क्षेत्रों की सामान्य जलवायु परिस्थिति नारियल की खेती के लिए अत्यंत अनुकूल होती है। किंतु तटीय मिट्टियों में नारियल की उत्पादकता प्रति वर्ष प्रति ताड़ 20-40 फलों के बीच है जो कि बहुत कम है। नारियल पेड़ कई दशकों तक मिट्टी में टिका रहता है, इसलिए ताड़ की पैदावार बढ़ाने के लिए मिट्टी की भौतिक-रासायनिक विशेषताओं को नियमित रूप से सुधारना अत्यंत अनिवार्य है। विगत कुछ अध्ययनों से यह सूचित हुआ है कि ताड़ के बेहतर स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए विविध विधियाँ अपनाकर तटीय बलुई मिट्टी की उत्पादकता सुधार सकती है। इसमें एकीकृत प्रणाली के अंतर्गत पर्याप्त जलनिकासी सुविधा का विकास, पेड़ के थालों में कयर गूदे का प्रयोग, बगीचा मिट्टी का उपयोग और अजैविक उर्वरकों के साथ साथ पर्याप्त मात्रा में जैविक खाद का प्रयोग आदि गतिविधियाँ शामिल हैं। तदनुसार अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के अधीन वर्तमान में कोणार्क और पुरी में कार्यरत नारियल अनुसंधान केन्द्र ओडिशा की बलुई मिट्टी में उगते नारियल पेड़ों का स्वास्थ्य सुधारने हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। नारियल अनुसंधान केन्द्र, कोणार्क और पुरी के तटीय बलुई मिट्टी की भौतिक-रासायनिक विशेषताएं जो कि सारणी-1 में दर्शायी गई हैं, मिट्टी की खराब पोषण स्थिति स्पष्ट रूप से बताती हैं। वर्ष 1997-98 के दौरान कोणार्क की तटीय बलुई मिट्टी में नारियल की उत्पादकता कम (17.5 नारियल/ताड़/वर्ष) होने का मुख्य कारण कम जलधारण क्षमता, मिट्टी की

सारणी:1 कोणार्क की तटीय बलुई मिट्टी की भौतिक-रासायनिक विशेषताएं

संघटक	मिट्टी की गहराई(से.मी.)		
	0-30	30-60	60-90
रेत(%)	89.5	89.2	89.0
गाद(%)	3.4	3.6	3.9
चिकनी मिट्टी(%)	7.1	7.2	7.1
पीएच	5.58	5.50	5.30
जैविक कार्बन(%)	0.12	0.09	0.04
विद्युत चालकता (डीएसएम-1)	0.076	0.071	0.064
उपलब्ध नत्रजन (कि.ग्रा./हे.)	65.75	41.75	36.4
उपलब्ध फोस्फरस (कि.ग्रा./हे.)	32.70	28.10	27.50
उपलब्ध पोटेशियम (कि.ग्रा./हे.)	64.50	63.80	62.40
मिट्टी की नमी(%)	2.87	3.58	5.95
थोक घनत्व(ग्रा./सीसी) (0-60 से.मी.)	1.68	-	-

संरंध्रता के कारण अतिरिक्त मात्रा में पानी का रिसाव, मिट्टी से पौष्टिकतत्व आसानी से बह जाने के कारण पेड़ों को नत्रजन, फोस्फरस और पोटेश तथा सूक्ष्म पौष्टिकतत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होना और जैविक कार्बन संघटकों की कमी आदि बताया गया है।

नारियल अनुसंधान केन्द्र, कोणार्क और पुरी में ताड़ का स्वास्थ्य और उत्पादकता सुधारने के लिए किए गए कार्य के परिणामों पर आगे चर्चा की जा रही है।

1. तटीय बलुई मिट्टी में मिट्टी और पौधा स्वास्थ्य प्रबंधन हेतु एकीकृत पोषण प्रबंधन प्रणालियों का अभिग्रहण

नारियल अनुसंधान केन्द्र, कोणार्क, ओडिशा की तटीय बलुई मिट्टी में स्थानीय लंबी किस्म के ताड़ों पर एकीकृत पौष्टिक प्रबंधन के प्रभाव का मूल्याँकन करने हेतु एक अध्ययन चलाया गया। यह अध्ययन बराबर पोषण के आधार पर जैविक खादों(नीम खली, सरसों की खली, पशु गाद और कुक्कुट खाद) के पन्द्रह उपचार संयोजनों और एनपीके उर्वरकों सहित बाग में लोबिया तथा कुलथी जैसी हरी खादों की खेती करते हुए और बिना हरी खाद फसलों की खेती के आयोजित किया गया। अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि वयस्क फलदायी ताड़ों की कद और गर्दन के घेरे पर एकीकृत खाद प्रबंधन विधियों का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ा है। पशु गाद और एनपीके उर्वरकों के प्रयोग से और नारियल थालों में हरी खाद के रूप में लोबिया की खेती करके उसे मिट्टी में मिला देने से प्रति ताड़ क्रियात्मक पत्तों की औसत संख्या में और पत्तों एवं पुष्पक्रमों की उत्पादन दर पर महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। पशु गाद और एनपीके उर्वरकों के प्रयोग के साथ साथ हरी खाद के रूप में लोबिया की खेती करके मिट्टी में मिला देने से मादा फूलों की संख्या में(137.13/ताड़/वर्ष), फल लगने में (36.71 प्रतिशत) और पैदावार में (44 नारियल/ताड़/वर्ष) महत्वपूर्ण वृद्धि दर्शित हुई जबकि उपचार के रूप में मात्र एनपीके उर्वरकों का प्रयोग करने पर प्रति वर्ष प्रति ताड़ 88 फूल निकले, 34.35 प्रतिशत फल लगे और पैदावार प्रति वर्ष प्रति ताड़ 24.1 नारियल हुई। एकीकृत पोषण प्रबंधन प्रणाली का असर अध्ययन के अधीन संबंधित मिट्टी के पीएच, जैविक कार्बन संघटक और उपलब्ध नत्रजन, फोस्फरस और पोटेशियम संघटकों और ताड़ों के पत्तों के एनपीके संघटकों पर भी रहा।

कयर गूदे से थाला प्रबंधन

2. कयर गूदा, बगीचा मिट्टी और अजैविक और जैविक खादों का प्रयोग करके थाला प्रबंधन

वर्ष 1999 के दौरान कहर मचाए सूपर साइक्लोन के कारण अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत कार्यरत नारियल अनुसंधान केन्द्र, कोणार्क एवं पुरी को वर्ष 2003 के दौरान भुबनेश्वर में अंतरित किए गए और इसके परिणामस्वरूप गत 15 सालों से मौजूदा बाग का संरक्षण नहीं हो रहा था। वर्ष 2014 में नारियल पेड़ों का स्वास्थ्य सुधारने और बलुई मिट्टी में बाग को टिकाऊ बनाने के लिए प्रयास किया गया। प्रति ताड़ 25 कि.ग्रा. की दर पर कयर गूदे के प्रयोग के साथ थाला प्रबंधन को प्रधानता दी गई। पेड़ के थाले के चारों ओर कयर चूर्ण डालकर इसे बगीचा मिट्टी से ढक दिया। प्रति ताड़ 2.0 कि.ग्राम नीम खली, 50 कि.ग्राम पशु गाद, 1 कि.ग्रा. यूरिया, 2.0 कि.ग्रा.सिंगल सूपर फोस्फेट, 2.0 कि.ग्रा. ओर्गानोफोस्फेट, 300 ग्राम मैगनीशियम सल्फेट और 200 ग्राम सूक्ष्मपौष्टिकतत्वों का मिश्रण सालाना दो भागों में नारियल पेड़ से 1.8 मीटर की दूरी पर बनाए गए थाले में डाला गया। अतिरिक्त पोषण देने और मिट्टी की भौतिक संरचना को सुधारने के लिए बाग में ही हरी खाद फसलों की खेती की गई।

3. ड्रिप सिंचाई के ज़रिए जल प्रबंधन

बलुई मिट्टी में ताड़ों की सिंचाई हेतु जल प्रबंधन को प्रभावी बनाने के लिए अनुसंधान केन्द्र में ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित की गई। बारिश के मौसम को छोड़कर शेष समय हरेक ताड़ को तने के चारों ओर 1.8 मीटर की दूरी पर स्थापित 4 ड्रिपरों के ज़रिए रोज़ाना 16 लीटर पानी प्रदान किया गया।

4. जल निकासी के लिए नालों का विकास

बारिश के मौसम में पानी के जमाव से बचने और मानसूनोत्तर अवधि के दौरान नमी संरक्षण के लिए बाग में हरेक दो कतारों के बीच जल निकासी के लिए पर्याप्त नाले बनाए गए। यह विधि अपनाने के तीन साल बाद ताड़ की बढ़वार में और पैदावार में क्रमिक वृद्धि होते हुए दर्शित होने लगा(सारणी-2)।

सारणी 2: बलुई मिट्टी में एकीकृत प्रबंधन विधियों के अभिग्रहण के बाद ताड़ों का कार्यनिष्पादन

विशेषताएं	स्थानीय लंबा (41 वर्ष की आयु)		पैकेज के संकर(25 वर्ष की आयु)	
	अभिग्रहण से पहले	तीन वर्ष बाद	अभिग्रहण से पहले	तीन वर्ष बाद
प्रति ताड़ क्रियात्मक पत्ते	22.7	30.6	19	32
प्रति वर्ष प्रति ताड़ पुष्पक्रमों की संख्या	8.3	11.7	7.2	12.2
प्रति वर्ष प्रति ताड़ नारियल की संख्या	28	58	25	87

5. बलुई मिट्टी में नारियल आधारित फसल प्रणाली का विकास

बलुई मिट्टी में पैदावार और आय बढ़ाने तथा नारियल की खेती को टिकाऊ बनाने के लक्ष्य से इस मिट्टी में एकीकृत फसल प्रणाली विकसित करने का प्रयास किया गया। नारियल बाग में पेड़ों के बीच उपलब्ध जगह पर अनन्नास एवं चीकू जैसी फसलों और लोबिया जैसी सब्जी फसलों की खेती की गई। नारियल की उत्पादकता पर लोबिया(सब्जी फसल), अनन्नास और चीकू की खेती का जो

पेड़ों की कतारों के बीच जलनिकासी की व्यवस्था

प्रभाव हुआ था, वह अंतरफसलों की खेती का क्रमिक पूरक प्रभाव प्रकट कर रहा था।

यह परीक्षण नारियल अनुसंधान केन्द्र, कोणार्क की बलुई मिट्टी में जनवरी 2016 के दौरान शुरू किया गया। वर्ष 2016 में बारिश के मौसम के दौरान अनन्नास और चीकू जैसी अंतर फसलों की खेती करते हुए फसल प्रणाली का विकास किया गया। चीकू और अनन्नास के अलावा बारिश के मौसम में अंतर फसल के रूप में लोबिया की भी खेती की गई। सभी उपचारों में क्रियात्मक पत्तों और पैदावार के मद्देनज़र ताड़ की वृद्धि और नारियल पेड़ की पैदावार संबंधी विशेषताओं को रिकार्ड किया गया। शुरुआत में पौष्टिकतत्वों संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मिट्टी के नमूनों का प्रारंभिक विश्लेषण किया गया। दो साल तक उपचार करने के बाद परिणामों से पता चला कि विभिन्न फसल प्रणालियों तथा विभिन्न पोषण प्रबंधन प्रणालियों के अंतर्गत नारियल पेड़ों में पत्तों की संख्या, पत्तों, पुष्पक्रमों एवं मादा फूलों की उत्पादन दर और फल उपज की दृष्टि से महत्वपूर्ण परिवर्तन दर्शित हुआ है। किंतु, फसल प्रणाली और पोषण प्रबंधन का परस्पर प्रभाव सिर्फ मादा फूलों की संख्या और फल उपज पर ही महत्वपूर्ण रहा(सारणी-3)। फसल प्रणाली अपनाए गए प्लोट पर फल उपज(प्रति वर्ष प्रति ताड़ 57.7 नारियल) में उल्लेखनीय वृद्धि रिकार्ड की गई। अंतर फसल के रूप में खेती किया गया चीकू फलने की स्थिति में था। मिट्टी की जाँच के आधार पर एनपीके पोषण दी गई मिट्टी में अनन्नास

अच्छी तरह अनुरक्षित नारियल बाग

सारणी 3: बलुई मिट्टी के अंतर्गत नारियल आधारित फसल प्रणाली की आर्थिकी

फसल प्रणाली	सकल आय (रु./हे.)	उत्पादन लागत (रु./हे.)	शुद्ध आय (रु./हे.)
नारियल + चीकू + सब्जी लोबिया	1,73,816	96,021	77,931
नारियल + चीकू + अनन्नास	2,83,587	1,12,767	1,71,441
नारियल(एकल फसल)	79,056	49,340	29,750

(प्रति हेक्टर 10803.3 कि.ग्रा.) और लोबिया(प्रति हेक्टर 4356.6 कि.ग्रा.) की उपज काफी अधिक रही। इस प्रणाली में चीकू के अलावा शेष सभी फसलों से आय प्राप्त हुई और अधिकतम शुद्ध आय 1,87,971 रुपए थी जब कि एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करने पर यह प्रति हेक्टर 29450 रुपए थी।

संक्षेप

तटीय बलुई मिट्टी में उगाए गए नारियल पेड़ों का कार्यनिष्पादन सामान्यतः कमज़ोर रहा और इनसे प्रति वर्ष प्रति ताड़ मात्र 20-40 नारियल ही प्राप्त होते हैं। ऐसे बागों में एकीकृत तरीके से विभिन्न कृषि तकनीकों को अपनाकर मिट्टी की भौतिक, रासायनिक और जैविक स्थिति सुधारते हुए बाग को अधिक विकासक्षम और टिकाऊ बनाया जा सकता है। केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड, केरल ने तटीय बलुई मिट्टी में पाले जा रहे ताड़ों का उत्पादन और उत्पादकता सुधारने के लिए कई प्रौद्योगिकियाँ विकसित की हैं। इसमें विभिन्न फसल प्रणालियों का विकास, छिलका या कयर गूदे का प्रयोग करके नमी संरक्षण और पंक्तियों में ग्लीरिसिडिया को उगाने की प्रणाली भी शामिल हैं। तटीय बलुई मिट्टी में उगाए जा रहे नारियल पेड़ों का स्वास्थ्य बनाए रखते हुए अधिक उपज और आय प्राप्त करने के लिए उपर्युक्त सफल प्रौद्योगिकियाँ अपनायी जा सकती हैं।

कोणार्क, ओडिशा के तटीय बलुई मिट्टी में नारियल + अनन्नास + चीकू + लोबिया के साथ बहु प्रजातीय अंतरफसलों सहित नारियल आधारित फसल प्रणाली प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 1.88 लाख रुपए की शुद्ध आय के साथ तटीय ओडिशा की परिस्थिति में पैदावार में स्थिरता लाने में अधिक लाभदायक रही।

भारत सरकार ने डेसिकेटड नारियल की आयात नीति का संशोधन किया है

भारत सरकार ने डेसिकेटड नारियल का न्यूनतम आयात मूल्य प्रति कि.ग्रा. 150 रुपए निर्धारित करते हुए डेसिकेटड नारियल की आयात नीति का संशोधन किया है। वर्तमान आदेश डेसिकेटड नारियल उद्योग में नई जान डालने की उम्मीद है, अन्यथा यह बड़े पैमाने पर डेसिकेटड नारियल के आयात के कारण दम तोड़ने के कगार पर था।

भारत वैश्विक तौर पर एक प्रमुख नारियल उत्पादक देश है और एचएस कोड 08011100 का डेसिकेटड नारियल मुख्य मूल्यवर्धित उत्पाद बन गया है जो 1,00,000 से अधिक लोगों को रोज़गार प्रदान करता है और इनमें से अधिकांश महिलाएं हैं। देश में डेसिकेटड नारियल का उपयोग व्यापक तौर पर मिठाइयाँ, बिस्कुट, मिष्टान्न, कढ़ी आदि की तैयारी के लिए किया जाता है। देश में लगभग 150 डेसिकेटड नारियल इकाइयाँ मौजूद हैं और अधिकांश इकाइयाँ कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल जैसे दक्षिणी राज्यों में फैली हुई हैं। देश में नारियल तेल उद्योग के बाद नारियल क्षेत्र का सबसे बड़ा उद्योग डेसिकेटड नारियल का उद्योग है। भारत में फैक्टरियों की प्रसंस्करण क्षमताओं का उन्नयन होने के परिणामस्वरूप हाल ही तक डेसिकेटड नारियल उद्योग वृद्धि की राह पर अग्रसर था। किंतु, नारियल के उच्च देशी भाव के परिणामस्वरूप और देश में डेसिकेटड नारियल के अनियंत्रित आयात के कारण यहाँ डेसिकेटड नारियल उद्योग में मंदी का रुख शुरू हुआ।

देश के सभी प्रमुख पत्तनों के ज़रिए श्रीलंका से बड़ी मात्रा में डेसिकेटड नारियल का आयात अभी भी किया जा रहा है। पशु चारा, निर्वसीकृत डेसिकेटड नारियल, नारियल खली और खोपरा खली के बहाने अत्यंत कम दामों पर डेसिकेटड नारियल का आयात किया जा रहा है। यह रिपोर्ट की गई है कि इस प्रकार आयातित डेसिकेटड नारियल स्थानीय ब्रैंडों के साथ मिश्रित किया जाता है और स्थानीय बाज़ार में उपलब्ध डेसिकेटड नारियल पाउडर की गुणवत्ता में मिलावट होती है जिसका प्रभाव स्थानीय निर्माताओं और उनके असली गुणवत्तापूर्ण उत्पादों पर पड़ता है। देश में डेसिकेटड नारियल का अनियंत्रित आयात होने से नारियल का देशी भाव कम हो जाता है और इसके परिणामस्वरूप लाखों लघु और सीमांत नारियल किसानों को काफी कठिनाइयों को झेलना पड़ता है।

यदि देश में डेसिकेटड नारियल का आयात इसप्रकार अंधाधुंध तरीके से होता रहा तो बहुत जल्द ही देशीय डेसिकेटड नारियल उद्योग का अंत सुनिश्चित होता, जो हज़ारों लोगों को बेरोज़गार बना देता। यही नहीं, डेसिकेटड नारियल का उद्योग नारियल क्षेत्र का सबसे प्रमुख उद्योग होने के नाते इस उद्योग की संकट स्थिति से नारियल के भाव में भी गिरावट हो जाएगी।

बोर्ड ने गत वर्षों के दौरान डेसिकेटड नारियल के निर्यात-आयात के ब्यौरे प्रदान किया था और डेसिकेटड नारियल के लिए प्रति कि.ग्रा.150 रुपए का न्यूनतम आयात मूल्य निर्धारित करने का सुझाव दिया था और यह भी अनुरोध किया था कि गुणवत्ता मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु कार्गो की नियमित रूप से जाँच की जाए।

यह भी नोट किया जाए कि बोर्ड के 15 जुलाई 2019 दिनांकित पत्र के जवाब में वाणिज्य मंत्रालय ने सूचित किया कि डेसिकेटड नारियल के संबंध में विविध कदम उठाए जा रहे हैं, जैसे कि व्यापार उपचार महानिदेशालय के ज़रिए व्यापार को सुरक्षित बनाने के उपाय, न्यूनतम आयात मूल्य की संभावना, एफएसएसएआई के ज़रिए आयात के समय मानकों का पालन सुनिश्चित करना और केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड के ज़रिए गलत - घोषणा पर रोक लगाना आदि।

To be published in the Gazette of India Extraordinary Part-II, Section-3, Sub-Section (II)

Government of India
Ministry of Commerce & Industry
Department of Commerce
Directorate General of Foreign Trade

Notification No. 40/2015-2020
New Delhi, Dated: 8th January, 2020

Subject: Amendment in import policy and incorporation of Policy condition under HS code 0801 11 00 of Chapter 8 of ITC (HS), 2017, Schedule – I (Import Policy).

S.O. (E): In exercise of powers conferred by Section 3 of FT (D&R) Act, 1992, read with paragraph 1.02 and 2.01 of the Foreign Trade Policy, 2015-2020, as amended from time to time, the Central Government hereby amends import policy of desiccated coconut under HS code 0801 11 00 of Chapter 8 of ITC (HS), 2017, Schedule – I (Import Policy) and incorporates policy condition as under:

Exim code	Item description	Existing import policy	Revised import policy	Policy condition
0801 11 00	Desiccated coconuts	Free	Prohibited	However, import is free if CIF value is Rs. 150/- and above per Kilogram

Effect of the Notification: Import of desiccated coconut with CIF value of Rs.150/- and above per Kilogram is 'Free' and import below CIF value of Rs.150/- per Kilogram is 'Prohibited'.

This issues with the approval of Minister of Commerce & Industry.

8/1/2020
(Amit Yadav)
Director General of Foreign Trade&
Ex- officio Addl. Secretary to the Government of India

(F.No. 01/53/162/1109/AM-07/F-2/115/PC-2(B)/Pt.-III/e -4037)

नारियल बागों में मासिक कार्य

अप्रैल

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

चुनिंदा मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई करना जारी रखें। बीजफलों की तुड़ाई सावधानी से की जानी चाहिए और फल के अंदर का पानी सूख न जाए, इसके लिए समुचित रूप से भंडारण करना चाहिए। जहाँ भी ज़मीन ठोस हो, फलों की तुड़ाई करके रस्सी के सहारे उसे नीचे लाना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी के पौधों के लिए सिंचाई जारी रखनी चाहिए। जहाँ भी आवश्यक हो खरपतवार निकाल देना चाहिए। यदि नर्सरी में दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो क्लोरपाइरिफोस (2 मि.ली. क्लोरपाइरिफोस एक लीटर पानी में घोलकर) से शराबोर करना चाहिए। कई जगहों पर नारियल नर्सरियों में स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का प्रकोप पाया जाता है। स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से बचने के लिए नारियल पौधों के पत्तों के निचले भाग पर पानी का छिड़काव करना चाहिए।

नर्सरी

बीजफल के लिए नारियल की तुड़ाई

उर्वरक प्रयोग

यदि सिंचित नारियल बागों में मार्च में नारियल पेड़ों के लिए उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया हो तो रसायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई हिस्से का प्रयोग करना चाहिए।

उर्वरक प्रयोग

सिंचाई

नारियल बागों में सिंचाई जारी रखें। यदि थाला सिंचाई अपनायी जा रही हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई करें। नारियल की सिंचाई के लिए

ड्रिप सिंचाई

सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है खासतौर पर पानी के अभाव वाली परिस्थितियों में। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग नोकों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में यह चार होनी चाहिए।

नमी संरक्षण

नारियल की खेती किए जाने वाले अधिकांश इलाकों में गरम शुष्क मौसम जारी है और इसलिए नारियल की खेती में सिंचाई हेतु पानी का अभाव बहुत बड़ी समस्या हो सकती है। अतः नारियल किसानों को सिंचाई के लिए पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। पानी का बचाव करने के लिए ड्रिप सिंचाई विधि अपनाना उचित होगा। पेड़ के थालों में दो मीटर के घेरे में मोटी परत में पलवार लगाने की आवश्यकता है। पानी के अभाव वाले क्षेत्रों में जहाँ भी व्यवहार्य हो, नारियल पेड़ों की जान बचाने/संरक्षण करने हेतु सिंचाई प्रदान की जानी होगी। इसप्रकार पेड़ की जान बचाने/संरक्षण करने हेतु सिंचाई करते वक्त थाले से पलवार लगाई गई सामग्रियाँ हटा देनी चाहिए और सिंचाई प्रदान करने के तुरंत बाद पलवार सामग्रियों से थालों को फिर से ढकना चाहिए।

गड्ढों में नारियल छिलका रखकर नमी संरक्षण

छाया प्रदान करना

नवरोपित नारियल पौधों को यदि पहले छाया प्रदान नहीं की गई हो तो अब छाया प्रदान करें।

कीटों और रोगों का प्रबंधन

गरम शुष्क मौसम इस महीने भी जारी रहने के कारण कीटों की आबादी बढ़ती जा रही है, विशेषतया मौसम संवेदनशील कीट जैसे कि कृष्ण शीर्ष इल्ली, रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी और नेस्टिंग सफेदमक्खी आदि। नमी की कमी, आपेक्षिक आर्द्रता का घटाव और तापमान में वृद्धि उपर्युक्त कीटों के प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। टिकाऊ उत्पादन देने और कीट प्रकोप को झेलने के लिए नारियल पेड़ को नमी और पोषण की आवश्यकता लगातार होती है। एक बार महीने के दौरान कीटों की आबादी बढ़ जाने के साथ साथ आर्द्रता की कमी की परिस्थिति उत्पन्न हो जाए तो यह ताड़ का स्वास्थ्य बिगड़ने का कारण बन जाता है जिससे पैदावार में कमी होने लगती है। पेड़ पर फल लगना कम हो जाता है और ताड़ का स्वास्थ्य मात्र अतिजीवन तंत्र पर केन्द्रित हो जाता है

छोटे पौधों को नारियल के पत्तों से छाया प्रदान किया जाता है

न कि पैदावार बढ़ाने में। अतः मृदा और जल प्रबंधन के अंतर्गत बनायी जाने वाली रणनीतियाँ ताड़ के स्वास्थ्य के सामान्य संरक्षण के लिए अत्यंत निर्णायक होता है। अतः ताड़ का स्वास्थ्य प्रबंधन कृष्णशीर्ष इल्ली और रूगोस स्पाइरालिंग सफेद मक्खी के जैवनियंत्रण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कृष्णशीर्ष इल्ली *(ओपिसिना एरेनोसेला)*

नारियल की कृष्णशीर्ष इल्ली, *ओपिसिना एरेनोसेला,* पूरे देश में नारियल की खेती किए जाने वाले लगभग सभी इलाकों में पाए जाने वाला प्रमुख कीट है विशेषतया जलाशय के निकट स्थित क्षेत्रों में। कीट प्रकोपित पत्ते सूख जाते हैं और निचले पत्तों की ऊपरी सतह पर धूसर रंग के धब्बे बनने लगते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में शिखर के मध्य से भीतर की ओर के पत्ते पूरी तरह सूख जाते हैं जिससे पेड़ का शिखर जला हुआ सा दीखता है। कीट प्रकोप के प्रमुख लक्षण है कृष्णशीर्ष इल्ली की मौजूदगी, पत्तियों पर जाल सा बनना और सूखा मल दीखना आदि। प्रकोपित नए क्षेत्रों में यदि मित्र कीट नहीं मौजूद हों तो इसका प्रकोप तेज़ी से बढ़ता है और तेज़ गति से चारों तरफ फैल भी जाता है। कीट प्रकोप के परिणामस्वरूप इसका प्रकाशसंश्लेषण क्षेत्र कम हो जाता है, पुष्पक्रमों के उत्पादन में कमी होती है, अपक्व फलों का गिराव बढ़ जाता है और वृद्धि मंद हो जाती है। नारियल की पत्तियाँ अधिक मात्रा में इल्लियों का आहार बन जाने से पैदावार में 45.4 प्रतिशत का नुकसान होने के साथ साथ पत्ते गूँथने लायक या अन्य प्रयोजनों के लिए उपयुक्त नहीं हो जाती हैं। किसानों को घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है और मित्र कीटों के ज़रिए सफलतापूर्वक तेज़ी से इसके जैविक नियंत्रण के तरीके सोदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं।

कृष्णशीर्ष इल्ली से नुकसानग्रस्त नारियल पेड़

कृष्णशीर्ष इल्ली

लार्वा परजीवी गोनियोज़स निफैंटिडिस

प्रबंधन

- रोगप्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में कीट की मौजूदगी का पता लगाने के लिए ताड़ के पत्तों का नियमित रूप से अनुवीक्षण करते रहना चाहिए।
- 2-3 पुराने और सूखे पत्तों को काट दें जिन पर विविध अवस्था वाले कीट बसते हैं और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। इल्लियों/प्यूपों की आबादी कम करने के लिए उन पत्तों को जला देना चाहिए।
- कीट प्रकोपित क्षेत्रों से कीट मुक्त क्षेत्रों में नारियल पत्तों को नहीं ले जाना चाहिए और इसप्रकार क्षेत्र विशेष में संगरोध सशक्त बनाना चाहिए।
- यदि कीट, विकास की तीसरी अवस्था वाले या इससे अधिक आयु के लार्वे के रूप में हो तो लार्वा परजीवी *गोनियोज़स निफैंटिडिस*(प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर) एवं *ब्राकोन ब्रेविकोर्निस*(प्रति ताड़ 30 परजीवी) को अधिक संख्या में बाग में छोड़ देनी चाहिए। पूर्वप्यूपा परजीवी (*एलैसमस निफैंटिडिस*) और प्यूपा परजीवी (*ब्रेकिमेरिया नोसटोय*) को हर 100 पूर्व प्यूपे और प्यूपे के लिए क्रमशः 49 प्रतिशत और 32 प्रतिशत की दर पर छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का प्रबंधन मुम्किन हुआ है।
- परजीवियों को छुड़ाने से पहले इन्हें पर्याप्त मात्रा में शहद देना चाहिए और पोषक गंधों(गैलरी के वाष्पशील पदार्थ)

फसल अनुरक्षण

से सुगम्य बनाना चाहिए ताकि पोषक कीटों की खोज करने की क्षमता बढ़ जाएं।

- ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने के लिए पर्याप्त सिंचाई और अनुशंसित मात्रा में पोषकतत्वों का प्रयोग सुनिश्चित करें।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (*एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस*)

इस अवधि के दौरान आक्रामक रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी(*एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस*) का प्रकोप नए क्षेत्रों में तथा पहले से प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में दोबारा पाया गया। इस कीट का प्रकोप होने पर ताड़ की पत्तियों की निचली सतह पर सफेद मक्खी की कालोनी की उपस्थिति और पत्तियों की ऊपरी सतह पर कज्जली फफूँद का जमाव पाया जा सकता है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्ते शीघ्र जीर्ण होते हैं और वयस्क पत्तियाँ जल्दी सूख जाती हैं। सफेद कीटों का प्रकोप पत्तियों, डंठलों और फलों पर भी होता है और यह रिपोर्ट की गई है कि केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, *हेलिकोनिया* प्रजाति आदि इसके परपोषी पादप हैं।

प्रबंधन

- छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड से पानी का छिड़काव करने से सफेद मक्खी को पत्तियों से निकाला जा सकता है और कीट को आहार मिलना एवं इसकी प्रजनन क्षमता कम की जा सकती है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का परजीवीकृत प्यूपा

एनकार्शिया गुआडेलूपे

कज्जली फफूँद भक्षी भृंग

- छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए बेहतर पोषण और पर्याप्त सिंचाई सुनिश्चित करें।
- कीटनाशी का प्रयोग नहीं करना चाहिए जो कीट के दोबारा प्रकोप का कारण बन सकता है और कुदरती एफिलिनिड परजीवी *एनकार्शिया गुआडेलूपे* को पूरी तरह मार सकता है। परजीवी की वृद्धि के लिए कीटनाशी का प्रयोग थोड़े समय के लिए रोकने की सलाह दी जाती है।
- पीले चिपचिपे फँदे की स्थापना और *एनकार्शिया गुआडेलूपे* का प्रयोग करते हुए संरक्षी जैव नियंत्रण करने से कीटों की आबादी 70 प्रतिशत तक कम की जा सकती है और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।
- काला फफूँद भक्षी भृंग *लियोक्रिनस नीलगिरियानस* के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से पत्तियों पर जमे सारे काले फफूँद को यह खा जाता है और उन्हें इस प्रकार साफ करता है कि ताड़ों की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता सुधर जाती है।
- नारियल खेती प्रणाली पर डेरा जमाने वाली सफेद मक्खी सहित दूसरी सफेद मक्खियों की उपस्थिति की छानबीन बारीकी से करनी चाहिए।

नेस्टिंग सफेद मक्खी (*पैरालेरोड्स बोंडारी* और *पैरालेरोड्स मिनेइ*)

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के अलावा नारियल की पत्तियों पर दो और नेस्टिंग सफेद मक्खी(*पैरालेरोड्स बोंडारी* और *पैरालेरोड्स मिनेइ*) भी पाया गया है। नेस्टिंग सफेद मक्खी का आकार (1.1 मि.मी.) रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (2.5 मि.मी.) के आकार से छोटा होता है। इसके निम्फ सपाट आकृति के होते हैं जिसकी पीठ में से फाइबर ग्लास समान तंतु निकला हुआ होता है जबकि रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का निम्फ कॉन्वेक्स आकार का होता है। वयस्क नेस्टिंग सफेद मक्खी पंछियों के घोसले के समान ब्रूडिंग चेंबर बनाता है और उसमें रहता है। पी.बोंडारी के पंखों पर 'X' आकार का टेढ़ा काला निशान होता है और दंडाकार के नर जननेंद्रिय पर दो छोटे उभार होते हैं जबकि पी.मिनेइ के पंखों पर काला निशान नहीं होता है और इसका जननेंद्रिय कुक्कुट के सिर के समान होता है।

पी. बोंडारी

पी. मिनेई

प्रबंधन

- छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड के साथ पानी छिड़कने से सफेद मक्खी को हटाया जा सकता है और इसके आहार लेने की क्षमता और प्रजनन क्षमता कम की जा सकती है।
- छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए अच्छा पोषण और पर्याप्त मात्रा में पानी मिलना सुनिश्चित करना चाहिए।
- *साइबोसेफलस प्रजाति* के प्रभावी निटिडुलिड परभक्षी ताड़ प्रणाली में पाया गया है और जैविक नियंत्रण को सुरक्षित रखने के लिए कीटनाशी प्रयोग में अंतराल की सिफारिश की जाती है।

रोग

नारियल की पर्ण चित्ती *(लेसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे)*

इसके रोगाणु से पत्तों और फलों को नुकसान होता है। प्रकोपित पत्तियाँ अग्रभाग से सूखने लगती हैं और यह जला हुआ सा प्रकट होता है। तीसरे से चौथे छल्लों के पत्तों पर इसका प्रकोप होता है। पर्ण चित्ती रोग के कारण निचले पत्तों पर उल्टे 'V' आकार में सूखा-हुआ सा दीखता है और इस रोग के प्रकोप का लक्षण बिलकुल वैसा ही है जैसा कि सूखे और अन्य दबावों से पेड़ पर प्रकट होता है। रोगाणु सबसे पहले पर्णवृंत पर अपनी कॉलोनी बनाता है, जिससे आंतरिक ऊतकक्षय होता है जो तने की तरफ बढ़ जाता है। ऊतकक्षयी ऊतकों पर दरार पड़ने लगते हैं जिसके कारण पर्णवृंतों के निचले भाग से गोंद निकलता है। नारियल में अपक्व फलों के परिदलपुंज भाग पर छोटे काले धब्बे प्रकट होते हैं। जब लगभग पके/परिपक्व फलों पर रोगप्रकोप होता है तो अंदर की तरफ मध्य फल भित्ति तक इसका प्रकोप फैल जाता है जिसके कोई भी लक्षण बाहर प्रकट नहीं होता है। प्रकोपित फल शोषित, सिकुड़ा हुआ और कुरूपित होता है और अपक्व स्थिति में ही गिर जाता है जिससे पैदावार में 10 से 25 प्रतिशत तक नुकसान होता है।

पर्ण चित्ती रोगग्रस्त नारियल पत्ता

प्रबंधन

- *ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम* से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मिट्टी की जाँच आधारित पोषण प्रदान करने से ताड़ का स्वास्थ्य सुधर जाता है।
- पर्याप्त मात्रा में सिंचाई और मिट्टी एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- साल में तीन बार 2 प्रतिशत की दर पर *हेक्साकोनाज़ोल* (प्रति ताड़ 100 मि.ली. दवा) जड़ों द्वारा देना।

नारियल प्रणाली में कीटों और रोगों की गतिशीलता और जलवायु परिवर्तन का प्रतिमान उनकी आबादी बढ़ाने में अत्यंत निर्णायक होता है। ताड़ों को सुरक्षित रखने के लिए समय पर रोगरोधी उपाय अपनाना और आवश्यकता के अनुसार पोषण देकर ताड़ का स्वास्थ्य सुधारना कीटों और रोगों के प्रकोप से होने वाली समस्याओं को झेलने के लिए अत्यंत अनिवार्य होता है।

मई

गर्मी में बाग की जुताई

गर्मी के दौरान मिलने वाली बारिश के अनुसार नारियल बाग में पेड़ों के बीच की जगह की जुताई करनी चाहिए।

हरी खाद बीजों की बुआई

जहाँ भी पर्याप्त मात्रा में मानसून पूर्व बारिश प्राप्त होती है मई महीने के आखिर में हरी खाद बीजों की बुआई की जा सकती है। सनई *(क्रोटलेरिया जंसिया)* या ढैंचा

नर्सरी क्यारियाँ बनाई जा रही हैं

(*सेसबनिया एक्यूलेटे*) या लोबिया (*विग्ना अनगुईकुलेटा*) या जंगली नील (*तेफ्रोसिया परपूरिया*) जैसी हरी खाद फसलों की बुआई की जा सकती है। एकल फसल के रूप में पाले जाने वाले नारियल बागों के बीच की जगह में निम्नलिखित दर पर हरी खाद बीजों की बुआई अनुशंसित है:

सनई - 20 कि.ग्रा./हे.
ढैंचा - 30 कि.ग्रा./हे.
लोबिया - 25 कि.ग्रा./हे.
जंगली नील - 15 कि.ग्रा./हे.

यदि अंतर फसलों की खेती की जा रही हो तो, हरी खाद फसलों के बीज नारियल थालों में 1.8 मीटर के घेरे में बोए जा सकते हैं। लोबिया और ढैंचा के लिए बीज दर प्रति थाला 100 ग्राम है जबकि अन्य हरी खाद फसलों के लिए यह प्रति थाला 75 ग्राम बीज है।

नर्सरी प्रबंधन

जब तक कि बारिश से पर्याप्त मात्रा में नमी प्राप्त नहीं हो जाती तब तक नर्सरी में पौधों के लिए सिंचाई जारी रखें। उसी प्रकार यदि बारिश प्राप्त नहीं होती हो तो स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए पौधों के पत्तों की निचली सतह पर पानी का छिड़काव करें। जहाँ भी ज़रूरत पड़े खरपतवार निकाल देना चाहिए। नर्सरी क्यारियाँ बनाने के लिए ज़मीन की तैयारी की जानी होगी।

रोपण के लिए गड्ढ़े तैयार करना

जब कभी नारियल पौधों का नवरोपण या खाली जगह भरने का प्रस्ताव है, रोपण के लिए 1 मी. x 1 मी. x 1 मी. आकार के गड्ढ़े खोदें। मखरली मिट्टी में मिट्टी की संरचना खेती के लिए अनुकूल बनाने हेतु प्रति गड्ढ़ा 2 कि.ग्रा. की दर पर गड्ढ़े में नमक का प्रयोग करना चाहिए।

रोपण के लिए गड्ढ़े की तैयारी

ऐसे क्षेत्रों में गड्ढ़े का आकार 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. होना चाहिए। नमी बरकरार रखने के लिए गड्ढ़े में मिट्टी भरने से पहले सबसे निचले भाग पर 50-60 सें.मी. तक नारियल छिलकों की दो परतें छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके फैलानी चाहिए।

आमतौर पर पेड़ों के बीच अनुशंसित दूरी 7.5 मी. x 7.5 मी. है। किंतु जब भी अंतर/मिश्रित खेती की जानी हो नारियल पौधों का रोपण 8-10 मीटर तक दूरी छोड़ते हुए करना चाहिए।

उर्वरकों का प्रयोग

यदि दक्षिण पश्चिम मानसून की शुरुआत के साथ मानसून पूर्व बारिश हो रही हो तो बारानी परिस्थितियों में पाले जा रहे नारियल पेड़ों को मई के आखिरी हफ्ते में रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक तिहाई हिस्से का प्रयोग किया जा सकता है। वयस्क ताड़ युक्त बागों में आमतौर पर प्रति वर्ष प्रति ताड़ 500 ग्राम नत्रजन, 320 ग्राम फोस्फरस पेंटोक्साइड और 1200 ग्राम पोटेशियम पेरोक्साइड की सिफारिश की जाती है। पौष्टिक तत्वों के एक तिहाई हिस्से का प्रयोग करने के लिए 0.36 कि.ग्रा. यूरिया, 0.5 कि.ग्रा. रोक फोस्फेट (अम्लीय मिट्टी में) या 0.7 कि.ग्रा.सूपर फोस्फेट (अन्य प्रकार की मिट्टी में) और 0.7 कि.ग्रा. म्यूरिएट ऑफ पोटेश का प्रयोग करना अनिवार्य होता है। गर्मी के मौसम में बारिश की प्राप्ति पर नारियल पेड़ के थाले में 1.8 मीटर के घेरे में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक तिहाई हिस्से का

थाले में उर्वरक प्रयोग

प्रयोग करना चाहिए और अच्छी तरह मिट्टी में मिला देनी चाहिए। यह उचित होता है कि तीन साल में एक बार नारियल बाग की मिट्टी की जाँच सावधिक रूप से करें और इसके परिणामों के आधार पर किस प्रकार के रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाना चाहिए और कितनी मात्रा में देनी चाहिए इस पर निर्णय लिया जा सकता है।

मिट्टी संशोधकों का प्रयोग

अम्लीय प्रकृति की मिट्टी में (पीएच < 7) उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के अतिरिक्त प्रति वर्ष प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. डोलोमाइट या 1 कि.ग्रा. चूने का प्रयोग करना चाहिए और क्षारीय मिट्टी में (पीएच > 8.5) प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. की दर पर जिप्सम का प्रयोग करना चाहिए। 1.8 मीटर घेरे के नारियल थालों में अप्रैल-मई के दौरान चूना/डोलोमाइट/ जिप्सम का छिड़काव किया जाए। मिट्टी में यह संशोधन रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से 15 दिन पहले किए जाने चाहिए।

सिंचाई

मानसून पूर्व बारिश पर्याप्त मात्रा में मिलने तक नारियल बागों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबंधन

मई महीने में मौसम शुष्क रहने के कारण कई क्षेत्रों में आक्रामक कीट सफेद मक्खी और नारियल एरियोफिड माइट का प्रकोप इधर-उधर पाया जा सकता है। नारियल पेड़ को अपने अतिजीवन के लिए पानी की ज़रूरत होती है और इसके फलों में पानी भरा रहता है जो लाखों इनसानों का प्यास बुझाता है। नमी में कमी की परिस्थिति उत्पन्न होने से ताड़ के स्वास्थ्य पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता है और कीट के प्रकोप से होने वाली समस्या और गंभीर बन सकती है। नम अवधि की ओर का यह परिवर्तन काल शिखर की सफाई, पर्ण कक्षों को नीम खली और रेत के मिश्रण से भरना और 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का प्रयोग जैसे रोगरोधी उपचारों को अपनाने के लिए निर्णायक अवधि होती है। यदि समय पर रोगरोधी उपाय अपनाया जाए तो मानसून के दौरान पाए जाने वाले कीटों और रोगों की अधिकता पर नियंत्रण पाया जा सकता है। अतः यह अवधि सभी प्रकार के रोगरोधी उपचारों और सदियों पुरानी कार्यप्रणालियों की जो इन बदलती जलवायु परिस्थितियों में एकदम उपयुक्त और संगत साबित हुई है, की शुरुआत का समय है। गर्मी की अवधि में आक्रामक सफेदमक्खी का प्रकोप अधिक होता है और और यह मानसून के दौरान काफी अधिक घट जाता है। मानसून की अवधि के दौरान नारियल पेड़ पर पाए जाने वाले मुख्य कीटों और रोगों के बारे में आगे चर्चा की जा रही है।

गैंडा भृंग (*ओरिक्टस रिनोसेरस*)

यह एक सर्वव्यापी कीट है, अतः गैंडा भृंग का प्रकोप हमेशा होता रहता है। किंतु नारियल के रोपण के मौसम में इसका प्रकोप अधिक पाया जाता है। यही नहीं, मई-जून के दौरान रोपण किए गए नारियल पौधों को कीट के प्रकोप से सामान्य तौर पर सुरक्षित रखना चाहिए। प्रायद्वीपीय भारत में *ऑरिक्टस रिनोसेरस* नूडिवायरस का प्राकृतिक प्रकोप 0.5 प्रतिशत से अधिक रिकार्ड किया गया है। *ऑरिक्टस रिनोसेरस* नूडिवायरस नारियल गैंडा भृंग-गुआम (सीआरबी-जी) का घातक है। इसलिए इसका प्रकोप हमारे देश में उतनी बड़ी समस्या नहीं रही जिसका प्रकोप दक्षिण पूर्व एशियाई

पत्ते और पुष्पक्रम को नुकसान

क्षेत्रों में बड़ी संख्या में पेड़ों की बरबादी का प्रमुख कारण बन गया था और अंतर्राष्ट्रीय समूह के लिए यह काफी चिंताजनक मामला बन गया था। इन दिनों अवयस्क ताड़ों और फलों पर कीट का प्रकोप काफी गंभीर समस्या बन गयी है। इसके अलावा गैंडा भृंग का प्रकोप होने से लाल ताड़ घुनों को अंडा देने और कली सड़न रोगाणु के प्रवेश के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है।

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे भीतरी तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली (नीम खली/चालमुगरा खली/पोंगम खली(250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थालिन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।
- सुबह सुबह रोज़ाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को बीटल हुक से निकाल दें। यह प्रक्रिया अपनाने से कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।
- अवयस्क ताड़ों के कोंपल क्षेत्र को मछली पकड़ने की जाल से सुरक्षित रखें। इससे गैंडा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल/फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे रखें।

मछली जाल से सुरक्षा

- पशुपालन उद्योग से जुड़े किसान खाद गड्ढ़ों को प्रति घन मीटर 5×10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, *मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि* से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा सकें। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीट प्रकोप प्रभावी रूप में कम किया जा सकता है और कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका विकसित हो जाता है।

मेटाराइज़ियम ग्रस्त सूँडी

- प्रजनन गड्ढ़ों में भाँट(*क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम*) नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण कीट की अवयस्क अवस्था में ही इनका विकास रुक जाता है।
- अंतर फसलों की खेती करके फसल विविधता लाने से और पारिस्थितिक इजीनियरी सिद्धांतों से कीटों को गुमराह किया जा सकता है और किसानों को लगातार आमदनी प्राप्त होती है और अतिरिक्त रोज़गार उत्पन्न होता है।

लाल ताड़ घुन (*रिंकोफरस फेरुजिनस*)

गैंडा भृंग का प्रकोप कम होने के फलस्वरूप घातक कीट लाल ताड़ घुन के प्रकोप की संभावनाएं भी कम होती है, क्योंकि इस कीट को ताड़ पर जमा होने और अंडा देने के लिए ताड़ पर घाव मौजूद होना आवश्यक है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर अधिकतर इसका प्रकोप होता है। कीट प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते

वयस्क घुन

हैं। ताड़ का खतरनाक शत्रु होने के नाते इसके प्रबंधन हेतु शीघ्र कार्रवाई निर्धारित की जाती है। अंतर फसलों की खेती करने तथा कीटों के प्रकोप से ताड़ को बचाने के लिए बहुविध गंध संकेत उत्पन्न करने हेतु पेड़ों की ज्यामिति समुचित बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य होता है।

प्रबंधन

- बाग की स्वच्छता बनाए रखना अनिवार्य होता है और शिखरहीन ताड़ की बची हुई आबादी को नष्ट कर देना चाहिए।
- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई घाव लगने न दें और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर काटना चाहिए।
- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति और समुचित दूरी बनाई रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कोंपल निकलने लगती है।
- प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता (पारिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाने से कीट का प्रकोप कम होता है।

पत्ता सड़न रोग (*कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोस्पोरिओयिड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम*)

यह जड़मुर्झा रोगग्रस्त ताड़ों पर अक्सर पाया जाने वाला रोग है जो सबसे भीतरी कोंपल और निकटस्थ पत्तों पर ऊतक क्षय के रूप में प्रकट होता है। मानसून के बाद दिसंबर महीने के दौरान मुख्यतः यह रोग पाया जाता है। रोगग्रस्त पत्तों का ऊतकक्षय होता है और यह ताड़ से बिना अलग हुए वहीं पर टिका रहता है। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे घाव के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर एकसाथ मिल जाता है और सड़न अत्यधिक व्यापक होकर ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है। यह रोग दक्षिण केरल के जड़मुर्झा रोगग्रस्त क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।

पत्ता सड़न रोग से छोटे ताड़ को नुकसान

प्रबंधन

- आवश्यकता आधारित छँटाई और प्रकोपित कोंपल तथा निकटस्थ सबसे बाहरी पत्तों को नष्ट करना।
- प्रकोपित कोंपल वाले क्षेत्र पर 300 मि.ली. पानी में हेक्साकोनाज़ोल 5 ईसी 2 मि.ली. का प्रयोग करें।

कली सड़न या अपक्व फल का गिराव (*फाइटोफ्थोरा पामिवोरा*)

कतिपय नम क्षेत्रों में कली सड़न रोग का शिकार होकर सैकड़ों पेड़ मर जाते हैं। भारत में कली सड़न रोग का प्रकोप एक प्रतिशत से कम रिपोर्ट किया गया है। रोगाणु कलिका क्षेत्र पर वार करता है जिससे कलिका क्षेत्र सड़ने लगता है और ताड़ मर जाते हैं। पीले रंग का होकर तर्कु पत्ते

कली सड़न रोगग्रस्त ताड़

तर्कु पत्ते का मुर्झाना

का मुर्झाना इस रोग का पहला प्रकट लक्षण है। कोंपल या तर्कु पत्ता भूरे रंग का हो जाता है और नीचे की ओर झुक जाता है। प्रकोपित कोंपल को आसानी से खींचकर निकाला जा सकता है क्यों कि तर्कु पत्ते का मूल भाग पूरी तरह सड़कर बदबू उत्पन्न करने लगता है। 20^0-24^0 सेल्शियस तापमान और 98-100 प्रतिशत के बीच आपेक्षिक आर्द्रता कली सड़न रोग के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। बारिश के मौसम में लगातार इसप्रकार के अनुकूल दिन बना रहना यह निर्धारित करता है कि रोग का विकास और प्रकोप की तीव्रता कहाँ तक हो सकता है। फाइटोफ्थोरा रोग अत्यंत घातक होने के कारण मानसून के दौरान ताड़ के स्वास्थ्य का खासतौर पर कोंपल वाले क्षेत्र का निकट संवीक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है।

प्रबंधन

- नियमित रूप से शिखर की सफाई और मानसून की शुरुआत में रोगरोधी उपाय के रूप में शिखर पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना और 35 से 40 दिनों बाद एक बार फिर छिड़काव करना कली सड़न रोग का प्रकोप कम करने के लिए सहायक होता है।
- मानसून शुरू होने के एकदम पहले सबसे भीतरी पर्ण कक्षों में ट्राइकोडेर्मा (*ट्राइकोडेर्मा हार्जियानम* सीपीटीडी 28) संपुष्ट कयर गूदा खली रखनी चाहिए और दो महीने बाद एक बार फिर यह दोहराना चाहिए।
- एक तेज़ चाकू से तर्कु पत्ते के पूरे सड़े हुए भाग को काटकर हटाएं और घाव पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट का लेप करें और बारिश का पानी अंदर आने से बचाने के लिए घाव को एक पोलिथीन शीट से ढक दें। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षा आवरण को वैसे ही रहने दें।

समय पर रोगरोधी उपचार करने से मानसून अवधि के दौरान ताड़ों को कीटों और रोगों का प्रकोप झेलने के लिए सक्षम बनाया जा सकता है। जैसा कहावत है रोकथाम इलाज से बेहतर है, हमारी तरकीब भी बिलकुल वैसे ही होनी चाहिए कीटों और रोगों का प्रकोप रोका जाए न कि इलाज हेतु उपाय के पीछे भागें।

जून

नर्सरी में बीजफलों की बुआई

अच्छी जलनिकासी वाली, दानेदार मिट्टी में नर्सरी पालनी चाहिए और यह ऐसे स्थान पर हो कि उसके निकट सिंचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो। यदि जल निकासी की कोई समस्या नहीं हो तो बीजफल सपाट क्यारियों में बोए जा सकते हैं। यदि पानी जमा होने की समस्या हो तो ज़मीन पर टीले बनाकर ऊँची क्यारियों में बीजफलों का रोपण करना चाहिए। नर्सरी खुले क्षेत्र में कृत्रिम रूप से छाया देकर या बागों में ऊँचे ताड़ों के नीचे जहाँ भागिक रूप से छाया उपलब्ध हो, पाली जा सकती है। बीजफलों की बुआई लंबी और संकरी क्यारियों में 40 से.मी. x 30 से.मी. की दूरी में खड़ी स्थिति में या पड़ी स्थिति में 20-25 सें.मी. गहरी खाइयों में की जा सकती है। बीजफलों का खड़ी स्थिति में रोपण करने का फायदा यह है कि नारियल पौधों को दूसरी जगह ले जाते समय नुकसान कम होता है। किंतु यदि रोपण देरी से कर रहा हो और फल के अंदर का पानी अत्यधिक कम हो जाता हो तो,

बीजफलों की बुआई

पड़ी स्थिति में बुआई करना उचित होता है। बेहतर अंकुरण के लिए बीजफलों की बुआई पड़ी स्थिति में करना फायदेमंद होता है।

रोपण हेतु नारियल पौधों का चयन

बाग में रोपण करने के लिए नर्सरी से अच्छी गुणवत्ता के पौधों का ही चयन करना चाहिए। लंबी किस्मों में, एक वर्ष की आयु के ऐसे तंदुरुस्त पौधों का चयन करना चाहिए जिनकी ऊँचाई 100 सें.मी. से अधिक हो और 5-6 पत्तों वाले पौधों के गर्दन का घेरा 10 सें.मी. हो। बौनी किस्मों में, अच्छी गुणवत्ता के नारियल पौधों का घेरा और ऊँचाई क्रमशः 8 सें.मी. और 80 सें.मी. होना चाहिए। अच्छी गुणवत्ता के नारियल पौधों का चयन करने के लिए महत्वपूर्ण दूसरी एक विशेषता है पत्तों का जल्दी फटना। आमतौर पर, एक वर्ष की आयु के पौधे रोपण के लिए उचित होता है। किंतु, जल जमाव वाले क्षेत्रों में रोपण के लिए डेढ़ और दो वर्ष की आयु के पौधों को अधिक उचित माना जाता है।

पोली बैगों में पाले गए नारियल पौधे अच्छी तरह बढ़ते हैं। पोली बैग पौधों की खासियत यह है कि पुनर्रोपण करते समय इसको कोई नुकसान नहीं पहुँचता है क्योंकि जड़ मंडल सहित पौधे को ज्यों का त्यों गड्ढे में रखा जा सकता है और ये पौधे जल्दी जड़ पकड़ लेते हैं और तंदुरुस्ती से बढ़ते हैं। किंतु इसकी असुविधा यह है कि इसका परिवहन काफी मुश्किल है और पौधों की उत्पादन लागत बहुत अधिक होती है।

रोपण

अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में, जून में दक्षिण पश्चिमी मानसून की शुरुआत के साथ पौधों का पुनर्रोपण किया जा सकता है। चौकोर प्रणाली में आमतौर पर नारियल के लिए 7.5 मी. x 7.5 मी. से 8.0 मी. x 8.0 मी. की दूरी अनुशंसित है। इसमें प्रति हेक्टर क्रमशः 177 और 156 ताड़ों को लगाया जा सकता है। यदि त्रिकोणीय प्रणाली अपनायी गई हो तो, अतिरिक्त 25 ताड़ों का रोपण किया जा सकता है। हेज प्रणाली में कतारों में 6.5 मीटर और दो कतारों के बीच 9.5 मी. की दूरी छोड़ते हुए रोपण किया जा सकता है। नारियल बागों में बहु फसल प्रणाली सुगम बनाने के लिए पेड़ों के बीच10 मी. x 10 मी. की दूरी छोड़ना अनुशंसित है ताकि अंतर जगहों में दीर्घकालीन और वार्षिक फसलों की खेती करने का पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो।

रोपण के गड्ढ़ों की गहराई मिट्टी के प्रकार पर निर्भर है। पथरीली निम्न स्तर वाली मखरली मिट्टी में 1.5 मी. लंबे x 1.5 मी. चौडे x 1.2 मी. गहरे गड्ढ़े खोदा जाए और रोपण से पहले इनमें ढीली मिट्टी, चूर्णित गोबर और राख निचले भाग से 60 सें.मी. ऊँचाई तक भरे जाए। मखरली मिट्टी में 2 कि.ग्रा. नमक का प्रयोग करने से मिट्टी ढीली हो जाती है। उन क्षेत्रों की दुम्मट मिट्टी में, जहाँ भौमजल स्तर नीचे होता है, 1 मी. x 1 मी. x 1 मी. आकार के गड्ढ़े को 50 सें.मी. ऊँचाई तक ऊपरी मिट्टी भरकर रोपण करना आमतौर पर अनुशंसित है। गड्ढ़े के मध्य में एक छोटा सा सुराख बनाकर उसमें नारियल पौधों का रोपण किया जाता है और पौधों के चारों ओर की मिट्टी को अच्छी तरह दबाकर ठोस बनाया जाता है, किंतु ध्यान रहे कि पौधे का गर्दनी क्षेत्र ढक न जाए और पर्ण कक्षों में मिट्टी न भरें। यदि भौमजल का स्तर ऊँचा हो तो सतही रोपण और बाँधों में रोपण अनिवार्य हो जाता है। सतही रोपण और बाँधों में रोपण करते समय गड्ढ़ा खोदना और उसमें मिट्टी भरने जैसे कार्य करना चाहिए। गड्ढ़ों को मिट्टी से भरते समय ऊपरी मिट्टी का प्रयोग करने की अनुशंसा दी जाती है। गड्ढ़े में मिट्टी भरने से पहले इसमें नारियल छिलके की दो परतें(छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर रखते हुए) लगानी चाहिए। इससे नमी संरक्षण में मदद मिलती है। बाग में रोपण करने के बाद नारियल पौधों को सहारा देकर तेज़ हवा से बचाना चाहिए और नारियल पत्ते गूँथकर या तेलताड़ के पत्ते या कोई भी उचित छायादार सामग्री का प्रयोग करके समुचित छाया प्रदान करते हुए धुप से बचाना चाहिए। यदि रोपण के बाद बारिश नहीं हुई हो तो पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करने की आवश्यकता है।

आगे, यदि लगातार भारी वर्षा हो रही हो तो उचित जलनिकासी की व्यवस्था करते हुए गड्ढ़ों में पानी भरना रोकना चाहिए। रोपण गड्ढ़े के चारों ओर निचली मिट्टी का प्रयोग करते हुए बाँध बनानी चाहिए ताकि पानी अंदर प्रवेश न करें।

उर्वरकों का प्रयोग

बारानी परिस्थितियों में रासायनिक उर्वरकों के एक तिहाई मात्रा का प्रयोग दक्षिण पश्चिमी मानसून की शुरुआत के साथ नारियल पेड़ों को किया जा सकता है। वयस्क ताड़ वाले बागानों के लिए प्रति ताड़ 500 ग्राम नत्रजन, 320 ग्राम

फोस्फरस पेंटोक्साइड और 1200 ग्राम पोटेशियम पेरोक्साइड के प्रयोग की अनुशंसा दी जाती है। उपर्युक्त पौष्टिक तत्वों के एक तिहाई हिस्से की आपूर्ति हेतु 0.36 कि.ग्रा.यूरिया, 0.5 कि.ग्रा. रोक फोस्फेट(अम्लीय मिट्टी में) या 0.7 कि.ग्रा. सूपर फोस्फेट(अन्य प्रकार की मिट्टियों में) और 0.7 कि.ग्रा. म्यूरियेट ऑफ पोटेश का प्रयोग करना चाहिए। सिफारिश की गई मात्रा में उर्वरक नारियल पेड़ों के चारों ओर 1.8 मीटर के घेरे में फैलाने चाहिए और इसे अच्छी तरह मिट्टी में मिलाना चाहिए। यह सिफारिश की जाती है कि सावधिक रूप से (तीन सालों में एक बार) नारियल बागों की मिट्टी की जाँच की जानी चाहिए और इसके परिणामों के आधार पर रासायनिक उर्वरकों की मात्रा और इसके प्रकार का निर्णय लिया जा सकता है। यदि मिट्टी में फोस्फरस 20 पीपीएम से अधिक हो तो फोस्फरसयुक्त उर्वरकों का प्रयोग नहीं करने की सिफारिश दी जाती है।

यदि नारियल पेड़ों की सिंचाई की जा रही हो तो जून महीने के दौरान रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई हिस्से के प्रयोग की सिफारिश की जाती है।

यह अनुशंसा दी जाती है कि तीन सालों में एक बार मिट्टी और पत्तों का विश्लेषण किया जाए और इन परिणामों के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करें।

मिट्टी संशोधकों का प्रयोग

यदि मिट्टी संशोधकों का प्रयोग मई में गर्मी की बारिश के अभाव में नहीं किया गया हो तो जून में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने के 15 दिन पहले एक कि.ग्रा.डोलोमाइट या 1 कि.ग्रा. चूने का प्रयोग किया जाए।

जैव उर्वरकों का प्रयोग

यदि ताड़ों का अनुरक्षण बारानी परिस्थितियों में की जाती हो तो मानसून की शुरुआत और जैव उर्वरक प्रयोग एक साथ किया जाना चाहिए। *एज़ोस्पाइरिलम प्रजाति* और टैल्क या वेर्मी कंपोस्ट जैसे संवाहकों में तैयार की गई फोस्फेट घुलनीय बैक्टीरिया निहित दवा का प्रयोग प्रति ताड़ 100 ग्राम की दर पर किया जाना होगा।

रोपण के समय नारियल पौधों को वेर्मी कंपोस्ट या गोबर खाद के साथ मिश्रित केरा प्रोबयो(फोस्फेट घुलनीय बैक्टीरिया *बैसिलस मेगटेरियम* की टैल्क आधारित दवा) का प्रयोग प्रति पौधा 25 ग्राम की दर पर की जा सकती है। समानतया आर्बस्कुलर माइकोराइज़ल फफूँद(एएमएफ) जैव संरोपी *'kerAM'* का प्रयोग प्रति पौध 50 ग्राम की दर पर किया जा सकता है।

दलहनी छादन फसलों के साथ थाला प्रबंधन

हरी खाद दलहनी फसलें जैसे कि *प्यूरेरिया फैसियोलोइड्स, कैलापगोनियम म्यूकनोइड्स,* लोबिया(*विग्ना अंगुइकुलेटा*), सनई(*क्रोटोलेरिया जंक्सिया*), कुलथी(*मैक्रोटाइलोमा यूनिफ्लोरम*), ढैंचा(*सेसबनिया एक्यूलेटा*) और *सेसबनिया स्पिनोसा* की खेती नारियल थालों में की जा सकती है और 50 प्रतिशत पौधों पर फूल लगने पर इन्हें हरी खाद के रूप में मिट्टी में मिलाया जा सकता है। जून महीने के दौरान पेड़ के थाले में 1.8 मीटर के घेरे में प्रति थाला 100 ग्राम की दर पर इन फसलों के बीज बोए जा सकते हैं।

दलहनी फसल से थाला प्रबंधन

ड्रिप सिंचाई प्रणाली का विघटन

जून महीने के दौरान मानसून की शुरुआत होने पर ड्रिप सिंचाई प्रणाली के पुर्जों को विघटित करके लपेटकर नारियल बाग में सिचाई तंत्र के प्रारंभिक बिंदु के निकट एक खंभे पर या नारियल पेड़ पर बाँधकर रखना चाहिए।

अंतर फसलों का रोपण

जून महीने में नारियल बाग में उपयुक्त अंतर/मिश्रित फसलों का रोपण किया जा सकता है। केला, अनन्नास, अदरक, हल्दी, कसावा, शकरकंद जैसी अंतर फसलों और कालीमिर्च, जायफल, लौंग, दालचीनी, वैनिला, कोको आदि बहुवर्षी फसलों का भी रोपण किया जा सकता है।

पौधा संरक्षण

प्रायद्वीपीय भारत में, जो कि देश का प्रमुख नारियल उत्पादक क्षेत्र है, जून महीने की अवधि के दौरान दक्षिण - पश्चिम मानसून बारिश अच्छी तरह प्राप्त होती है। इस अवधि के दौरान ताड़ में पोषक तत्वों का अवशोषण करने वाली जड़ें सक्रिय

नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में केले की खेती

बहुफसलीय प्रणाली

रूप से बनने लगती हैं और शुष्क परिस्थिति से नम परिस्थिति में रहने के लिए ताड़ सक्षम हो जाता है। मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन करते हुए ताड़ का पुनरुज्जीवन किया जाना आवश्यक है और साथ साथ रोगरोधी प्रबंधन मोड्यूल और कीटों एवं रोगों से ताड़ों को सुरक्षित रखने के लिए नेमी जाँच करना भी अपेक्षित है। मानसून की भारी वर्षा के साथ एरियोफिड माइट और आक्रामक सफेद मक्खी सहित चूसने वाले कीटों का प्रकोप बहुत बड़ी हद तक कम हो जाता है। दो प्रमुख नारियल कीट जैसे नारियल गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन का प्रकोप इस अवधि के दौरान बहुत बड़ी समस्या बन जाती है और मानसून की बारिश प्राप्त होने पर सफेद सूँड़ी के वयस्क भृंगों का उभरना काफी अधिक हो जाता है जिन्हें यांत्रिक उपस्करों के साथ निकालना पड़ जाता है। किसानों को रोगरोधी उपाय के रूप में नारियल के पर्ण कक्षों को नीम खली और रेत के मिश्रण से भर देना चाहिए और कली सड़न रोग प्रकोपित क्षेत्रों में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। कली सड़न रोग प्रकोप वाले क्षेत्रों में समय पर रोगरोधी उपाय अपनाना ताड़ को बचाने के लिए अत्यंत अनिवार्य है क्योंकि रोग प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में रोग प्रकोप के प्रारंभिक लक्षणों की पहचान करना काफी मुश्किल होता है जिसके लिए कीट सर्वेक्षण हेतु मानव रहित हवाई वाहनों का प्रयोग बेहतरीन तरीका होता है।

कीट

गैंडा भृंग (*ओरिक्टस रिनोसरस*)

यह एक सर्वव्यापी कीट होने के कारण इसका प्रकोप सभी मौसमों में सर्वदा पाया जाता है, तथापि मानसून चरण के दौरान जब नारियल पौधों का रोपण भी किया जाता है इसका प्रकोप अत्यधिक होता है। नए रोपे गए नारियल पौधों में तर्कु पत्ते को नुकसान पहुँचता है और कीट प्रकोप से यह विकृत हो जाता है। छोटे ताड़ भी जल्दी कीट प्रकोपित होता है और कभी कभी हाथी के दाँत जैसे रोगलक्षण प्रकट होते हैं। नुकसानग्रस्त छोटे ताड़ की वृद्धि रुक जाती है और इनमें पुष्पक्रम देरी से निकलने लगता है। हाल ही में फलों पर छेद जैसे रोगलक्षण भी पाया गया है। यही नहीं, गैंडा भृंग का प्रकोप लाल ताड़

घुन को अंडा देने तथा कली सड़न रोगाणु के प्रवेश के लिए रास्ता खोल देता है।

प्रबंधन

- जैसा कि पहले बताया गया है कीट प्रकोप को रोकने के लिए समुचित उपाय अपनाया जाए।

हाथी के दाँत जैसे रोगलक्षण

लाल ताड़ घुन (*रिंकोफरस फेरुजिनस*)

यह नारियल का घातक शत्रु है और ताड़ पर किसी प्रकार का घाव लगना कीट के प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर इसका प्रकोप अधिकतर होता है। कीट

प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते हैं। पत्तों के मूल भाग का फटना, मध्यम छल्ले के पत्तों का पीला होना, ताड़ पर छेद दिखना और भूरे रंग का तरल पदार्थ रिसना इसके प्रकट रोगलक्षण है। पेड़ों के बीच उचित ज्यामिति रखते हुए अंतरफसलों की खेती करने से विविध प्रकार के गंध संकेत के कारण कीट के प्रकोप से बच सकता है।

प्रबंधन

- पहले बताए गए अनुसार प्रबंधन उपाय अपनाया जाए।

सफेद सूँड़ी (*ल्यूकोफोलिस कोनियोफोरा*)

मिट्टी में बसने वाली सफेद सूँडी नारियल की जड़ों को नुकसान पहुँचाती है और सूँडी के निरंतर प्रकोप से पत्ते पीले पड़ जाते हैं, अपक्व फल गिर जाते हैं, पुष्पण देरी से होता है, वृद्धि मंद हो जाती है और पैदावार कम होने लगती है। चूँकि सूँडी मिट्टी में छिपी रहती है, कीट के नुकसान का पता लगाने के लिए रोगलक्षणों की पहचान करना अत्यंत अनिवार्य होता है। सूँडी पहले जैविक सामग्रियों को और अंतर फसलों की जड़ों को अपना आहार बना लेती है और इसके बाद नारियल की जड़ों को आहार बना लेती है। जून महीने के दौरान वयस्क भृंग मिट्टी से बाहर आता है। केरल के कासरगोड़ और कर्नाटक के कुछ इलाकों के रेतीली क्षेत्रों में इसका प्रकोप अधिक पाया गया है।

सफेद सूँडी

वयस्क भृंग

प्रबंधन

- परभक्षण के लिए अपक्व अवस्था की सूँडियों को बाहर निकालने के लिए गर्मी के दौरान बार बार जुताई करना
- मानसून की शुरुआत के साथ रोज़ाना शाम को दो हफ्ते के लिए भृंगों को हाथ से निकालना
- प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर नारियल के थालों में नीम खली का प्रयोग करने से नई जड़ें निकलती हैं।
- रोगाणु सूत्रकृमि *स्टेइनेरनेमा कार्पोकैप्से* की जलीय दवा का प्रति हेक्टर 1.5 बिलियन की संक्रामक छोटी कृमियों की दर पर मिट्टी में प्रयोग और बार बार आवश्यकता के अनुसार प्रयोग

पत्ता सड़न रोग (*कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोस्पोरिओयिड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम*)

यदि पत्ता सड़न रोग का प्रकोप पाया जाता है तो उचित प्रबंधन उपाय अपनाएं।

कली सड़न या अपक्व फलों का गिराव (*फाइटोफ्थोरा पामिवोरा*)

कली सड़न रोग का प्रकोप होने पर पहले बताए गए अनुसार उचित प्रबंधन उपाय अपनाया जाए। रोग प्रकोप पर

रोग प्रकोपित नारियल पेड़

नियंत्रण पाने के लिए बाग की सफाई और बारिश के मौसम में समुचित जल निकासी की व्यवस्था करना भी अनिवार्य होता है।

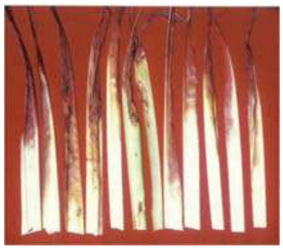

प्रकोपित पत्ते

रोगरोधी प्रबंधन उपाय क्षेत्र व्यापक तौर पर और किसान सहभागिता से अपनाने से अनुकूल जलवायु परिस्थितियों में भी कीट/रोग प्रकोप के दबाव को कम किया जा सकता है। रोग की सही पहचान करने और समय पर कीट प्रबंधन विधियाँ अपनाए जाने पर अधिक बल देना चाहिए। बाग से नियमित आमदनी प्राप्त करने और कीट का प्रकोप कम करने के लिए पारिस्थितिकीय इंजीनियरी की संकल्पना को अधिक महत्व देना चाहिए। ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने और जीवीय दाब झेलने के लिए ताड़ को सक्षम बनाने हेतु मृदा जाँच आधारित पोषण प्रदान करना अत्यंत अनिवार्य है।

सेवानिवृत्ति

श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी 25 वर्षों से अधिक बोर्ड में सेवा करने के बाद नाविबो से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने बोर्ड में अपनी सेवा 14 नवंबर 1994 को मुख्यालय, कोची में उप निदेशक(विकास) के पद पर प्रारंभ की थी। तदुपरांत राज्य केन्द्र, गुवाहटी, कोलकाता एवं पित्तापल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी में वे उप निदेशक के पद पर कार्यरत रहे। 16 जुलाई 2014 को निदेशक के पद पर उनकी पदोन्नति हुई और क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया। दो वर्ष के पश्चात क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी में उनका स्थानांतरण हुआ और अधिवर्षिता की आयु प्राप्त होने पर 29 फरवरी 2020 को नाविबो की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। बोर्ड में अपनी सेवा प्रारंभ करने से पहले वे पुतुच्चेरी सरकार के कृषि विभाग में उप निदेशक के पद पर कार्यरत थे।

श्री पी.पी.बुधनाथन, उच्च श्रेणी लिपिक, मुख्यालय, कोची अधिवर्षिता प्राप्ति पर 29 फरवरी 2020 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 26 वर्ष बोर्ड में सेवा की है।

श्री एच.बी.सदाशिवप्पा, उच्च श्रेणी लिपिक, क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलूरु अधिवर्षिता प्राप्ति पर 29 फरवरी 2020 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 29 वर्ष बोर्ड में सेवा की है।

श्रीमती के.के.वसंतकुमारी, सहायक, मुख्यालय, कोची अधिवर्षिता प्राप्ति पर 29 फरवरी 2020 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुई। उन्होंने 31 वर्ष बोर्ड में सेवा की है।

श्री पी.जयकुमार, चालक ग्रेड II, मुख्यालय, कोची अधिवर्षिता प्राप्ति पर 31 मार्च 2020 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 25 वर्षों से अधिक बोर्ड में सेवा की है।

वैगा - 2020

वैगा-2020 (कृषि में आय सृजन हेतु मूल्य वर्धन), कृषि उद्यमिता के ज़रिए टिकाऊ वृद्धि विषय पर कृषि प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला तेक्किन्काट मैदान, तृश्शूर, केरल में 4 से 7 जनवरी 2020 को संपन्न हुई।

माननीय केरल राज्यपाल श्री आरिफ मुहम्मद खान ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। माननीय राज्यपाल अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के प्रयास को नीति निर्माताओं की सर्वोच्च प्राथमिकता बनाना चाहिए। इस कृषि प्रदर्शनी में देश भर से किसानों, फार्म वैज्ञानिकों एवं उद्यमियों ने भाग लिया। वैगा का लक्ष्य कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण तथा मूल्य वर्धन की संभावनाओं को खोजना है।

राज्यपाल ने कहा, "हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि साधारण किसानों को मूल्य वर्धन के बारे में आधुनिक ज्ञान प्राप्त होता है। हमें कृषि उद्यमियों की एक प्रतिबद्ध दल की आवश्यकता है, जिन्होंने व्यावसायिक उद्यम शुरू करने के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियों का उपयोग करेंगे जो कृषि में मूल्य संवर्धन के लिए अवसरों का लाभकारी उपयोग करेंगे।" उन्होंने बताया कि कृषि में मूल्य वर्धन के लिए अधिक पूँजी निवेश, अवसंरचना, विपणन प्रयासों, उचित दिशानिर्देशों, प्रशिक्षण, सरकारी समर्थन तथा सावधानी पूर्ण अनुवीक्षण की आवश्यकता है। उन्होंने आगे जोड़ा कि कृषि उद्यमों को किसी भी अन्य आधुनिक उद्योग के साथ बराबर विशेषाधिकार प्राप्त होना चाहिए। आइए हमें इस अवधारणा कि 'व्यवसाय करने में आसानी' को कृषि व्यवसायों के लिए भी लागू बना दें।

केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मुहम्मद खान कृषि मंत्री एड्वोकेट वी. एस. सुनिल कुमार के साथ प्रदर्शन स्टाल में

केरल के मुख्यमंत्री श्री पिणरायि विजयन स्टाल में

श्री पुरुषोत्तम रूपाला, कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री ने वैगा अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में 'स्टार्ट - अप मिशन पहल' सत्र का उद्‍घाटन किया। इस अवसर पर भाषण देते हुए रूपाला जी ने कहा कि कृषि उपज की गुणवत्ता में विश्वास पैदा करने और विश्व बाज़ारों में पैर जमाने के लिए ब्रैंडिंग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि किसान उत्पादक कंपनियां आसानी से बाज़ारों पर कब्जा कर सकती हैं क्योंकि विश्व बाज़ारों में अच्छी गुणवत्तापूर्ण उत्पादों को हमेशा अच्छी स्वीकृति मिलती है, लेकिन उसी समय प्रतिस्पर्धी भी है।

उन्होंने यह भी बताया है कि उत्पादों के मूल्य वर्धन में किसान उत्पादक कंपनियों की प्रमुख भूमिका है क्योंकि कृषि व्यवसाय एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें शिक्षित युवा और किसान आत्मविश्वास के साथ आ सकता है इसलिए कि विश्व में अब जैविक रूप से विकसित और उत्पादित उत्पादों की मांग है। किसानों को मांग के अनुसार इस अवसर का उपयोग करने की आवश्यकता है। उन्होंने सिक्किम का

स्टाल में आगंतुक

उदाहरण दिया। इस राज्य के उत्पादों की बडी स्वीकृति है और सिक्किम को जैव राज्य घोषित किया गया था जिसने अपने किसानों को इस ब्रैंडिंग से लाभ उठाने तथा उच्च आय प्राप्त करने में मदद की।

मंत्री ने यह भी सूचित किया कि वर्ष 1951 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 50 प्रतिशत कृषि से मिला था लेकिन आज कृषि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के मात्र 16 प्रतिशत का हिसाब रखता है। जनसंख्या 50 करोड़ से बढ़कर 130 करोड़ हो गई है, कृषि की वृद्धि आज की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी बताया कि उत्पादन बढ़ गया है लेकिन किसानों की आय में अभी तक वृद्धि नहीं हुई है और सही समाधान के लिए मज़बूत उपायों जैसे उत्पादों के मूल्य वर्धन को अपनाना है। केरल कृषि मंत्री श्री वी.एस.सुनिल कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि नौकरी के अवसर दिलाने में कृषि व्यवसाय का सर्वाधिक महत्व है।

केरल स्थानीय स्व शासन मंत्री श्री ए.सी.मोय्तीन, केरल शिक्षा मंत्री श्री सी.रवींद्रनाथ, चीफ व्हिप एवं ओल्लूर विधायक श्री के.राजन, पूज्य महापौर श्रीमती अजिता विजयन, जिला पंचायत प्रेसिडेंट श्रीमती मेरी थॉमस और अपर मुख्य सचिव श्री देवेंद्र कुमार सिंह इस अवसर पर उपस्थित हुए। प्रदर्शनी में विभिन्न कृषि संगठनों, सरकारी विभागों, किसान उत्पादक कंपनियों आदि के 300 से अधिक स्टाल लगाए गए।

नारियल विकास बोर्ड ने प्रदर्शनी में विभिन्न मूल्य वर्धित नारियल उत्पादें जैसे नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, पैकटबंद डाब पानी आदि प्रदर्शित किए। नारियल

खोपड़ी तथा लकड़ी से बने आकर्षक हस्तशिल्प एवं उपयोगी वस्तुएं भी प्रदर्शित की गयीं। दर्शकों को बोर्ड के प्रकाशन, पुस्तिकाएं और ब्रोशर वितरित किए गए। सर्वश्री ग्रीन वाली कोकनट ओयल, सर्वश्री सिप ओ नट, सर्वश्री पालक्काट नारियल उत्पादक कंपनी और सर्वश्री विश्वकर्मा हैन्डीक्राफ्ट्स ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पादें प्रदर्शित किए।

वैगा भारत सरकार, केंद्रीय एवं राज्य सरकार की अनुसंधान संस्थानों, सरकारी उपक्रमों एवं कृषि विकास के क्षेत्र के अन्य संगठनों के सहयोग से केरल सरकार द्वारा आयोजित किया गया।

वैगा ने कृषि उद्यमियों के लिए मूल्य वर्धन, प्रसंस्करण तथा आय बढ़ाने के अवसरों में अधुनातन प्रवृत्तियों एवं तकनीकियों को दर्शाया गया। वैगा 2020 के सिलसिले में "कृषि उद्यमिता के ज़रिए टिकाऊ कृषि विकास" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गयी।

वैगा ने मूल्य वर्धन के लिए अधुनातन नवीनतम प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके हज़ारों कृषि उद्यमियों को रूपायित करने एवं विकसित करने के द्वारा केरल के कृषि व्यवसाय पारिस्थितिक तंत्र में सकारात्मक प्रभाव डाला है।

अध्यक्ष, नाविबो ने सीपीसीआरआई, कायंकुलम का दौरा किया

दौरे की झाँकियाँ

श्रीमती जी.जयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी और श्री प्रमोद पी कुरियन, सहायक निदेशक के साथ 27 दिसंबर 2019 को आईसीएआर - सीपीसीआरआई, क्षेत्रीय केंद्र, कायंकुलम का दौरा किया। डा.एस.कलावती, कार्यकारी प्रधान, सीपीसीआरआई, क्षेत्रीय केंद्र, कायंकुलम ने क्षेत्रीय केंद्र की प्रमुख उपलब्धियों पर संक्षिप्त विवरण दिया। अध्यक्ष, नाविबो ने आईसीएआर-सीपीसीआरआई, क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिकों के साथ जैव नियंत्रण तकनीकों में हाल ही की प्रगति एवं नारियल के ऊतक संवर्धन गुणन के संबंध में प्रगति को शामिल करते हुए नारियल के एकीकृत प्रबंधन की विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। टीम ने आईसीएआर-सीपीसीआरआई, क्षेत्रीय केंद्र, कायमकुलम के ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला, जैव नियंत्रण प्रयोगशाला एवं प्रयोगात्मक बागों का भी दौरा किया। अध्यक्ष ने मुख्य परिसर में औपचारिक रोपण भी किया।

प्रदर्शन दौरा

प्रदर्शन दौरे के सहभागी

प्रबीउ फार्म, अभयपुरी का दौरा

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने मेघालय राज्य के किसानों के लिए सीपीसीआरआई, काहिकुची और बागवानी अनुसंधान केंद्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची का दो दिवसीय प्रदर्शन दौरा आयोजित किया। डा. अल्पना दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीपीसीआरआई, काहिकुची ने नारियल खेती एवं पौधा संरक्षण के वैज्ञानिक तरीके पर कक्षा ली। टीम ने बागवानी अनुसंधान केंद्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची और प्रबीउ फार्म, अभयपुरी का दौरा किया। श्रीमती फरीज़ा एस शहीद, क्षेत्र अधिकारी, प्रबीउ फार्म, अभयपुरी ने किसानों का स्वागत किया और नारियल पेड़ का अनुरक्षण कैसे किया जाय? तथा नारियल पेड़ को विभिन्न कीट व रोग से कैसे बचाएं? इन विषयों पर संक्षिप्त विवरण दिया। किसानों को मातृ वृक्ष चयन के बारे में भी विवरण दिया गया। श्रीमती फरीज़ा एस शहीद, क्षेत्र अधिकारी, प्रबीउ फार्म, अभयपुरी ने प्रबीउ फार्म के दौरे के लिए किसानों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियाँ एवं नारियल के मूल्य वर्धन पर कार्यशाला

कार्यशाला की झलक

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने कुमोलिया कम्मूनिटी हॉल में 8 जनवरी 2020 को जिला कृषि कार्यालय, बिश्वनाथ के सहयोग से वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियों एवं नारियल के मूल्य वर्धन पर ब्लॉक स्तरीय कार्याशाला आयोजित की। कार्यक्रम में बिश्वनाथ जिले के लगभग 60 किसानों ने भाग लिया।

श्री फणीन्द्र सैकिया, जिला कृषि अधिकारी, घाहिगांव ने अपने मुख्य भाषण में किसानों की आजीविका के उन्नयन के लिए वैज्ञानिक नारियल खेती की संभावनाओं पर बात की। उन्होंने नारियल के विविध उपयोगों के बारे में बताया एवं नारियल की खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने नारियल के अंतरफसल के साथ साथ बहुमंजिली फसल प्रणाली पर ज़ोर दिया।

कार्यशाला के सहभागी

श्री मृदुल तालुकदार, बागवानी सहायक, नाविबो ने नारियल तथा इसके उत्पादों के मूल्यवर्धन की गुंजाइश एवं विपणन के बारे में विस्तृत जानकारी दी और क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम सहित नारियल विकास बोर्ड की गतिविधियों के बारे में भी विवरण दिया।

श्री मानस प्रतिम दास, जिला कृषि अधिकारी, बिश्वनाथ सर्किल ने वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। उन्होंने नारियल के रोग एवं कीट प्रबंधन पर भी विवरण दिया।

श्री प्रदीप तालुकदार, जिला कृषि अधिकारी, पावोइ सर्किल, बिश्वनाथ ने नारियल के प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन पर बात की। उन्होंने अपने भाषण में नारियल से तैयार किए जाने वाले विभिन्न खाद्य पदार्थों के बारे में बताया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद किसानों की उपस्थिति में नारियल पौधों के रोपण का निदर्शन किया गया।

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने 9 जनवरी 2020 को गोहपुर में उप प्रभागीय कृषि कार्यालय, गोहपुर, बिश्वनाथ के सहयोग से वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियों एवं मूल्य वर्धन पर दूसरा ब्लॉक स्तरीय किसान जागरूकता सह अभ्यास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। श्री प्रह्लाद पेगु, कृषि निरीक्षक, उप प्रभागीय कृषि कार्यालय, गोहपुर, बिश्वनाथ ने अतिथियों का स्वागत किया और 50 किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

श्री जयंत सैकिया, कृषि विकास अधिकारी, कालाबारी सर्किल एसडीएओ, गोहपुर ने वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकी एवं जल प्रबंधन तथा मृदा संरक्षण प्रणालियों पर बात की।

श्री कौस्तुभा पंडिट, एसडीएओ, गोहपुर, बिश्वनाथ ने नारियल के प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन पर भाषण दिया। उन्होंने अपने भाषण में नारियल से तैयार किए जानेवाले विभिन्न खाद्य पदार्थों के बारे में भी विवरण किया।

विशेषज्ञों ने किसानों के बीच बातचीत के समय नारियल के रोपण, पौधा संरक्षण आदि पर उठाए गए विभिन्न प्रश्नों का विधिवत समाधान किया।

एग्रो + एफ एण्ड बी प्रो-2019

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ठाणे ने गोरेगांव, मुंबई, महाराष्ट्र में 3 से 5 दिसंबर 2019 तक संपन्न 17वें एग्रो + एफ एण्ड बी प्रो-2019 में भाग लिया। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री रामेश्वर टेलीजी, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री, भारत सरकार और महामहिम श्रीमती रोसीट्टी मोसी न्यामाली, भारत में कोंगो डेमोक्राटिक रिपब्लिक के राजदूत ने श्री गुरबाक्सिश कोहली, प्रेसिडेंट, फेडरेशन ऑफ होटल्स

नाविबो स्टाल का दृश्य

बोर्ड के स्टाल में दर्शक

एण्ड रेस्टॉरेंट एसोसियेशन, श्री जोसेफ डैस, प्रबंध निदेशक, आयात, निर्यात एवं स्वास्थ्य चेंबर, श्री एमएफ एज़ुवान, मलेशिया के व्यापार आयुक्त और अन्य विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में किया।

प्रदर्शनी में भारत, कोंगो, मलेशिया तथा अन्य देशों से 400 से अधिक ब्रैंड प्रदर्शित किए गए। इस बृहत कार्यक्रम ने हज़ारों सामान्य दर्शकों के अलावा 9,000 बिसिनस एवं व्यापार दर्शकों को आकर्षित किया।

नारियल विकास बोर्ड ने विभिन्न मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों जैसे पैकटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल के साथ साथ सूचनापरक चार्ट एवं पोस्टर आदि प्रदर्शित किए। स्टाल में बोर्ड के प्रकाशन, पत्रिकाएं, पुस्तिकाएं तथा ब्रोशर भी वितरित की गई।

नारियल विकास बोर्ड ने इस क्षेत्र में नारियल उत्पादों के लिए वितरकों, उद्यमियों एवं खुदरा विक्रेताओं को मिल जाने के लिए प्रदर्शनी में भाग लिया। श्री कपीश गुप्ता, विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर, विर्जिन प्लस टाबलेट्स, नारियल क्रीम आदि के निर्माता केराटेक (प्रा.) लिमिटेड, केरल का प्रतिनिधि और नारियल पानी, नारियल शर्करा, नारियल चिप्स आदि के निर्माता सर्वश्री मदुरा एग्रो प्रोसस प्रा. लिमिटेड, कोयंबत्तूर, तमिलनाडु से श्री वरदराजन ने अपने उत्पाद एवं सेवाएं प्रदर्शित कीं।

सभी आयु वर्ग के दर्शकों सहित विशिष्ट अतिथियों, विभिन्न राष्ट्रीय कंपनियों एवं गैर सरकारी संगठनों के अधिकारियों एवं व्यापार समूहों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया। श्री रामेश्वर टेली, माननीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री, भारत सरकार ने नारियल विकास बोर्ड को सर्वोत्तम कम्मोडिटी बोर्ड की श्रेणी में बेस्ट ऑफ इंडिया बिसिनस पुरस्कार-2019 से सम्मानित किया।

क्षेत्र दौरा

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने 5 जनवरी 2020 को अररिया जिले के किसानों के लिए प्रबीउ फार्म, सिंहेश्वर, मधेपुरा में क्षेत्र दौरा कार्यक्रम आयोजित किया। श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नाविबो, क्षे.का., पटना ने किसानों का स्वागत किया और नर्सरी तैयार करने का तरीका, वैज्ञानिक रोपण प्रणाली, खरपतवार, रोग, सिंचाई, खाद, तुडाई आदि के प्रबंधन के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी (ठेके पर), नाविबो, क्षे.का., पटना ने नर्सरी में स्वच्छता बनाए रखने तथा फलों की तुड़ाई के बारे में विस्तृत विवरण दिया।

श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नाविबो किसानों को नारियल खेती संबंधी गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए

श्री परमानंद ऋषिदेव, प्रेसिडेंट, हरिपुर पंचायत, फरबीज़गंज ब्लॉक, अररिया जिले के धन्यवाद ज्ञापन के साथ क्षेत्र दौरा कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम में तीस किसानों ने भाग लिया।

वर्ष 2020 के मौसम के लिए खोपरे का न्यूनतम समर्थन भाव अनुमोदित

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनट की आर्थिक मामलों की समिति ने 2020 के मौसम के लिए खोपरे के न्यूनतम समर्थ भाव(एमएसपी) को अपनी मंजूरी दी।

पेषण खोपरे की अच्छी औसत गुणवत्ता(एफएक्यू) के लिए न्यूनतम समर्थन भाव 2020 के मौसम के लिए बढ़ाकर प्रति क्विंटल 9960 रुपए कर दिया है जबकि 2019 में इसका न्यूनतम समर्थन भाव प्रति क्विंटल 9521 रुपए था। 2020 के मौसम के लिए गोल खोपरे का न्यूनतम समर्थन भाव बढ़ाकर प्रति क्विंटल 10300 रुपए कर दिया है जबकि वर्ष 2019 में यह प्रति क्विंटल 9920 रुपए था। इससे पेषण खोपरे के भाव में प्रति क्विंटल 439 रुपए की और गोल खोपरे के भाव में 380 रुपए की वृद्धि का लाभ प्राप्त होगा। यह उत्पादन की अखिल भारतीय भारित औसत लागत के मुकाबले पेषण खोपरे के लिए 50 प्रतिशत और गोल खोपरे के लिए 55 प्रतिशत की आय सुनिश्चित करती है। यह अनुमोदन कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की सिफारिशों पर आधारित है।

2020 के मौसम के लिए खोपरे के न्यूनतम समर्थन भावों में यह बढ़ोत्तरी अखिल भारतीय भारित औसत उत्पादन लागत का कम से कम डेढ़ गुणा स्तर तक न्यूनतम समर्थन भाव निर्धारित करने के सिद्धांत के अनुरूप है, जिसकी घोषणा सरकार ने 2018-19 के बजट में की थी। यह वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी संभव बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण और विकासात्मक कदमों में से एक है क्योंकि यह कम से कम 50 प्रतिशत लाभ के मार्जिन का आश्वासन देता है।

भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ मर्यादित(नाफेड) और भारतीय राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ मर्यादित(एनसीसीएफ) नारियल उत्पादक राज्यों में न्यूनतम समर्थन भाव पर मूल्य समर्थन संचालन शुरू करने के लिए केन्द्रीय नोडल एजेंसियों के रूप में काम करना जारी रखेंगे। गत वर्ष जब तमिलनाडु में भाव में घटाव हुआ था, भारत सरकार के सामयिक हस्तक्षेप के कारण न्यूनतम समर्थन भाव पर खरीद करने से बाज़ार का रुख बढ़ाव की ओर उन्मुख रहा जिससे नारियल किसान लाभान्वित हुए। विश्व में खोपरा के उत्पादन और उत्पादकता में भारत अग्रणी देश है।

नाविबो ने ग्रामीण भारत व्यापार बैठक में भाग लिया

श्री वी.मुरलीधरन, माननीय केन्द्रीय विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार नाविबो स्टाल में। डा.अनिता करुण, निदेशक एवं डा.सी.तंपान, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान भी चित्र में दर्शित हैं

बोर्ड के स्टाल का नज़ारा

नारियल की सफेद मक्खी के प्रबंधन हेतु रणनीतियों पर कार्यशाला संपन्न

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो आमुख भाषण देते हुए

नारियल विकास बोर्ड ने 10 मार्च 2020 को केरल के कोषिक्कोट में नारियल की सफेद मक्खी के प्रबंधन हेतु रणनीतियों पर एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला में श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो कोची, श्रीमती बिंदु आर, प्रधान कृषि अधिकारी, कोषिक्कोट, केरल के कोषिक्कोट, कण्णूर, कासरगोड, मलप्पुरम और वयनाट जिलों के राज्य कृषि विभाग के उप निदेशकों और कृषि अधिकारियों, नाविबो पदधारियों, कीट प्रकोपित जिलों के किसान प्रतिनिधियों एवं केरल के नारियल उत्पादक कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो, कोची ने अपने आमुख भाषण में कहा कि इस कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य नारियल को सफेद मक्खी के प्रकोप से जो नुकसान हो रहा है यह किस हद तक और कितना प्रतिशत है इसका मूल्यांकन करना है। उन्होंने कहा कि सारे प्रभावित जिलों में विभाग द्वारा एक सर्वेक्षण आयोजित करना चाहिए ताकि नाविबो भारत सरकार के साथ उनके समर्थन हेतु प्रस्तुत मामला उठाया जा सके और किसानों के बागानों के लिए उचित प्रबंधन कार्यक्रम बनाया जा सके। उन्होंने सूचित किया कि किसानों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए और नारियल की सफेद मक्खी के प्रबंधन हेतु नाविबो द्वारा पूरे भारत में समुचित पहल की जा रही है।

श्रीमती बिंदु आर, प्रधान कृषि अधिकारी, कोषिक्कोट ने इस बारे में विस्तृत व्याख्यान दिया कि केरल में सफेद मक्खी का प्रकोप कब और कैसे शुरू हुआ था और सूचित किया कि इस कीट का प्रकोप गत दो सालों से हो रहा है और इसके बावजूद भी इस आक्रामक कीट का प्रबंधन नहीं हो पाया है।

श्रीमती दीप्ति नायर, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, कोची ने अपने स्वागत भाषण में यह सूचित किया कि नारियल विकास बोर्ड द्वारा यह कार्यशाला इसलिए चलायी जा रही है कि कीट के एकीकृत प्रबंधन पर किसानों के बीच जागरूकता पैदा की जा सके और साथ ही साथ अनुसंधान संस्थानों द्वारा सफेद मक्खी के एकीकृत प्रबंधन हेतु विकसित रणनीतियों और कार्यविधियों के बारे में नारियल पर कार्यरत कृषि विभाग के पदधारियों को अद्यतन जानकारी प्रदान की जा सके।

उद्घाटन सत्र के बाद एक तकनीकी सत्र संपन्न हुआ जिसमें डा.जोसफ राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम ने रूगोस स्पाइरालिंग सफेद मक्खी के प्रबंधन हेतु जो रणनीतियाँ अपनायी जा सकती हैं इनके बारे में बताया और डा. मधु सुब्रह्मण्यन, प्रोफसर, बीसीसीपी पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, केरल कृषि विश्वविद्यालय, वेल्लानिक्करा ने कीट की निगरानी विषय पर सत्र चलाया। परिचर्चा फोरम में कृषि अधिकारियों और किसानों ने अपनी शंकाएं उठायीं

सभा का दृश्य

और सफेद मक्खी के प्रबंधन के संबंध में पूछताछ की और वैज्ञानिकों ने इस पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

डा.आर.वी.एस.के.रेड्डि, अनुसंधान निदेशक, डा.वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय ने रूगोस स्पाइरालिंग सफेद मक्खी के खिलाफ डाइकोचाइसा प्रजातियों और आइसेरिया फुमोसोरोसिया की अनुसंधान और विकास गतिविधियों पर प्रकाश डाला और किसानों को सलाह दी कि सफेद मक्खी से प्रकोपित बागानों में कीटनाशी का प्रयोग न करें क्योंकि इसका प्रभाव जैव नियंत्रण एजेंटों पर भी बुरी तरह से पड़ सकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि किसान स्तर पर आइसेरिया फुमोसोरोसिया फफूँद का प्रवर्धन बड़े पैमाने पर किया जाना चाहिए। निजी तेल ताड़ उद्योगों को विश्वविद्यालय की मदद से प्रशिक्षण आयोजित करते हुए रूगोस स्पाइरालिंग सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु कदम उठाने चाहिए।

श्री एस.राम मोहन राव, बागवानी उप निदेशक, पूर्व गोदावरी ने कहा कि रूगोस स्पाइरालिंग सफेद मक्खी के फैलाव पर नियंत्रण पाने के लिए नर्सरी स्तर पर ही कदम उठाने चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर फफूँद का प्रबंधन बड़े पैमाने पर करना चाहिए। उन्होंने यह भी जोड़ा कि किसानों के हित के लिए हरेक जिले में एक जैव नियंत्रण प्रयोगशाला स्थापित करना चाहिए।

डा.बी.वी.के.भगवान, आँचलीय अनुसंधान अध्यक्ष, तटीय क्षेत्र - 1, डा.वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय ने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्पाइरालिंग सफेद मक्खी का नियंत्रण मात्र सामूहिक स्तर पर ही संभव है। उन्होंने बागवानी अनुसंधान केन्द्र, अंबाजीपेटा के अनुसंधान और विकास गतिविधियों के बारे में भी बात की।

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, कोची ने अपने विशेष भाषण में कार्यशाला के विविध दृष्टिकोण के बारे में विस्तृत चर्चा की और इस बात पर ज़ोर दिया कि सामूहिक आधार पर कार्य करने से ही स्पाइरालिंग सफेद मक्खी का प्रबंधन संभव हो सकता है और इसलिए तदनुरूप रणनीतियाँ बनायी जानी चाहिए। गत दो सालों से इस कीट का प्रकोप हो रहा है, किंतु इसका प्रबंधन अभी तक संभव नहीं हो पाया है। उन्होंने मौजूदा परिस्थितियों पर नियंत्रण पाने के लिए कुछ योजनाओं के साथ किसानों का समर्थन करने के बारे में भी बात की। उन्होंने अनुसंधानकर्ताओं और विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों को यह सुझाव दिया कि बदलती जलवायु के इस परिदृश्य में नए उभरने वाली कीटों और रोगों को सहने की क्षमता रखने वाली जलवायु सहनशील किस्मों का विकास करना चाहिए। उन्होंने यह भी जोड़ा कि जलवायु का पूर्वानुमान करने की और इससे होने वाले परिणामों तथा इसके लिए एहतियाती/नियंत्रण उपायों के लिए एक कार्यप्रणाली विकसित करनी चाहिए और टेक्स्ट मेसेजों के ज़रिए किसानों को सूचित की जानी चाहिए। आगे उन्होंने बताया कि किसान समुदाय को टिकाऊ पैदावार या आय प्राप्त होने के लिए फसल विविधीकरण एक अनिवार्य उपाय है।

नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकियों पर जिला स्तरीय कार्यशाला

गैर परंपरागत क्षेत्रों में नारियल खेती के अधीन क्षेत्र को और बढ़ाने की दृष्टि से अहमदनगर में नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकी पर एक जिला स्तरीय कार्यशाला संपन्न हुई ताकि किसानों को वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकी और मूल्यवर्धित उत्पादों के बारे में जानकारियाँ प्रदान करते हुए उनकी आर्थिक आय बढ़ायी जा सके और नारियल क्षेत्र की बेहतर वृद्धि संभव हो सके। नारियल महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र की मुख्य फसल है जिसकी खेती सिंधुदुर्ग, रत्नगिरी, पालघर, रायगढ़, ठाणे और अन्य जिलाओं में 32,000 हेक्टर क्षेत्र में फैली हुई है।

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केन्द्र, ठाणे और जिला अधीक्षक कृषि कार्यालय, कृषि विभाग, महाराष्ट्र ने संयुक्त रूप से 25 फरवरी 2020 को कार्यशाला आयोजित की थी।

सभा का दृश्य

कार्यशाला का उद्घाटन श्री शिवाजी जगताप, जिला अधीक्षक कृषि अधिकारी, अहमदनगर ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने पश्चिम महाराष्ट्र क्षेत्र में नारियल के खेतीगत क्षेत्र को बढ़ाने और इस क्षेत्र में लघु पैमाने के नारियल उत्पाद उद्योग स्थापित करने पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। डा.अमिया देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो, राज्य केन्द्र, ठाणे ने इस अवसर पर नारियल के पोषण और सिंचाई प्रबंधन के बारे में तथा नारियल के मूल्य वर्धन पर भाषण दिया। श्री शरद एस. आगलावे, क्षेत्र अधिकारी, नाविबो, राज्य केन्द्र, ठाणे ने वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकी और नारियल के कीट एवं रोग प्रबंधन पर बात की। श्री डी.पी.दारडे, तालुका कृषि अधिकारी, नेवासा ने सभा का धन्यवाद अदा किया। कृषि विभाग, महाराष्ट्र सरकार के पदधारियों सहित लगभग 125 किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

नारियल की पत्ता भक्षी इल्ली के जैविक नियंत्रण पर निदर्शन

हाल ही में मोग्राल-पुत्तूर ग्रामपंचायत के तटीय क्षेत्रों में और केरल के कासरगोड जिले के निकटस्थ क्षेत्रों में पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप पाया गया जो कि नारियल पेड़ों को नुकसान पहुँचाने वाला कीट है। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने कृषि विभाग के सहयोग से कासरगोड के पास चौकी में 12 मार्च 2020 को नारियल की पत्ता भक्षी इल्ली के जैविक नियंत्रण के सिलसिले में बाग में परजीवियों के विमोचन का निदर्शन किया।

पत्ता भक्षी इल्ली के प्रकोप का निदर्शन

ये इल्लियाँ नारियल की पत्तियों की निचली सतह पर रेशमी गैलरियों के अंदर रहती हैं और क्लोरोफिल निहित क्रियात्मक ऊतकों को खूब जमकर खा लेती हैं। इससे प्रकाशसंश्लेषण क्षेत्र कम हो जाता है जिसका विपरीत प्रभाव ताड़ के स्वास्थ्य पर पड़ता है और परिणामतः पैदावार कम हो जाती है। पत्ता भक्षी इल्ली के गंभीर प्रकोप की स्थिति में ताड़ के पुराने पत्ते मृत होकर भूरे रंग के हो जाते हैं और शिखर के भीतर के तीन चार नारियल पत्ते ही हरे रहते हैं।

कीट का फैलाव रोकने के लिए गंभीर रूप से प्रकोपित और सूखे 2-3 नारियल पत्तों को काटकर जला देना चाहिए।

इस कीट के प्रकोप पर नियंत्रण पाने का अधिक उचित और व्यवहार्य तरीका जैविक नियंत्रण उपाय अपनाना है। विविध अवस्था वाले परजीवियों को बड़े पैमाने पर विमोचित करना इस कीट के टिकाऊ प्रबंधन के लिए प्रभावी पाया गया है।

कृषि विभाग के अधीन परजीवी प्रजनन केन्द्र ने रोगग्रस्त बागानों में जैविक नियंत्रण एजेंटों को विमोचित करने की व्यवस्था की है।

श्री ए.ए.जलील, अध्यक्ष, मोग्राल-पुत्तूर ग्रामपंचायत, डा.अनिता करुण, निदेशक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, श्रीमती सजनीमोल के., प्रधान कृषि अधिकारी, कासरगोड, श्री नरसिंहलु, कृषि अधिकारी, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डा.विनायक हेग्डे, डा.के.मुरलीधरन, डा.तंपान सी. और डा.पी.एस.प्रतिभा ने कार्यक्रम में भाग लिया।

राज्य स्तरीय किसान मेला

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान क्षेत्र VI, गुवाहटी ने किसानों की आय दुगुनी करने के ज़रिए किसानों की समृद्धि विषय पर राज्य स्तरीय किसान मेला 26 और 27 फरवरी को बागवानी अनुसंधान केन्द्र कैंपस, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची, गुवाहटी में आयोजित किया। नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। असम के विविध जिलों से लगभग 1000 किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। नारियल विकास बोर्ड ने नारियल के सुविधाजनक खाद्य पदार्थ, नारियल गरी, नारियल खोपड़ी और नारियल पानी से मूल्य वर्धित नारियल उत्पाद, नारियल खोपड़ी/ लकड़ी आधारित दस्तकारियाँ और लीफलेट, नारियल जर्नल और नारियल एवं इसके उत्पादों के पौष्टिक और स्वास्थ्य लाभों पर पोस्टर आदि प्रदर्शित किए। श्री अतुल बोरा, माननीय कृषि और पशुचिकित्सा मंत्री, असम सरकार और असम की सांसद श्रीमती क्वीन ओजा ने नारियल विकास बोर्ड के स्टाल का दौरा किया। नाविबो क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित खाद्य प्रशिक्षण कार्यशालाओं तथा नारियल बाग संबंधी विविध योजनाओं के बारे में कई किसानों ने पूछताछ की और बोर्ड के पदधारियों ने शंकाओं का समाधान किया।

श्री अतुल बोरा, माननीय कृषि एवं पशुचिकित्सा मंत्री, असम सरकार बोर्ड के स्टाल में

पैनेशिया-2020

दैनंदिन उपयोग के लिए उचित कुदरती नारियल उत्पादों और उपोत्पादों पर लोगों के बीच जागरूकता सृजित करने और नारियल उत्पादों के वितरणकर्ताओं और उद्यमियों से पहचान करवाने तथा बोर्ड की गतिविधियों संबंधी जानकारियाँ अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के उद्देश्य से नारियल विकास बोर्ड ने 5 से 7 मार्च 2020 तक वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, मुम्बई में

बोर्ड के स्टाल का नज़ारा

आयोजित पैनेशिया 2020 में भाग लिया। मेले का आयोजन सिशिडो कम्यूनिकेशन, मुम्बई ने किया। विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर, विर्जिन प्लस टैब्लेट और केरा क्रीम के विनिर्माता सर्वश्री केराटेक(प्रा.) लिमिटेड, तृश्शूर, केरल, लघु प्रसंस्कृत नारियल और डाब आइसक्रीम के निर्माता सर्वश्री कोकोको इन्नोवेटिव बिवरेजस प्राइवेट लिमिटेड, पुणे, नारियल पानी, नारियल शर्करा, नारियल चिप्स आदि के विनिर्माता सर्वश्री मधुरा एग्रो प्रोसेस प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबत्तूर, तमिलनाडु आदि ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पाद प्रदर्शित किए। नारियल विकास बोर्ड ने विविध मूल्यवर्धित उत्पाद, सूचनात्मक चार्ट, पोस्टर और बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए।

वितरणकर्ताओं, निर्यातकों, उद्यमियों, किसानों, वीआईपीयों, विविध सरकारी विभागों के पदधारियों, गैर सरकारी संगठनों और विदेशियों सहित व्यापार समूह के 5000 आगंतुकों ने मेले में भाग लिया।

नाविबो ने फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रायोजित किया

श्री ऋषिराज सिंह भा.पु.से., महा निदेशक (प्रिज़न एंड करेक्शनल सर्वीसस) सहभागियों को नारियल पर चढ़ने की मशीन प्रदान करते हुए

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम ने 24 से 29 फरवरी 2020 तक खुला जेल, नेट्टुकालतेरी, तिरुवनंतपुरम के कैदियों के लिए ताड़ारोहण मशीन के सहारे नारियल की तुड़ाई करने सहित वैज्ञानिक नारियल प्रबंधन पर छह दिवसीय फ्रेंड्स ऑफ कोकोनट ट्री प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

नारियल विकास बोर्ड, भारत सरकार ने कार्यक्रम वित्त पोषित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में नारियल की विभिन्न किस्मों और नारियल के संकरण तकनीक, नारियल खेती विधियाँ और फसल प्रणालियाँ, नारियल के कीट एवं रोग प्रबंधन, नारियल के मूल्यवर्धित उत्पाद, नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणालियाँ, पोषण प्रबंधन और नारियल बाग में जैविक पुनर्चक्रण, मातृ ताड़ चयन और नारियल नर्सरी का प्रबंधन, सकारात्मक सोच, नेतृत्व गुण, समय प्रबंधन और निर्णयन क्षमता, कायिक क्षमता, प्रथम उपचार और सुरक्षा तंत्र, बैंकिंग, मितव्ययिता और बचत प्रबंधन पर सत्र चलाए गए। भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र-तिरुवनंतपुरम एवं केरल कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने तकनीकी सत्र संभाले। डा.आर.प्रकाश, विज्ञात मोटिवेशनल ट्रेनर(सेवानिवृत्त प्रोफसर, केरल कृषि विश्वविद्यालय) ने सकारात्मक सोच पर सत्र संभाला। डा.सी.एस.प्रदीप कुमार, लेक्चरर, जी.वी.राजा स्पोर्ट्स स्कूल, कण्णूर ने कायिक क्षमता, प्रथम उपचार और सुरक्षा तंत्र पर सत्र चलाया।

सहभागियों को ताड़ारोहण मशीन का प्रयोग करके नारियल पेड़ पर चढ़ने का प्रशिक्षण दिया गया और कार्यक्रम के आखिरी दिन को ताड़ारोहण ओलिंपिक्स आयोजित किया गया और विजेताओं को समापन सत्र में पुरस्कार प्रदान किया गया।

समापन समारोह 29 फरवरी 2020 को नेट्टुकालतेरी के खुले जेल के सेंट्रल हॉल में संपन्न हुआ। श्री ऋषिराज सिंह भा.पु.से., महा निदेशक (प्रिज़न एंड करेक्शनल सर्वीसस) कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। श्री अजित सिंह डब्ल्यू.एस., कृषि अधिकारी ने सभा का स्वागत किया। डा.रेजी जे.थोमस, प्रधान वैज्ञानिक और पाठ्यक्रम निदेशक ने खुला जेल, नेट्टुकालतेरी में कार्यान्वित परियोजना के बारे में व्याख्यान दिया। डा.एस.कलावति, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम ने आशीर्वचन भाषण दिया और पूरे देश में एफओसीटी प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए नारियल विकास बोर्ड द्वारा उठाए जा रहे प्रयासों की सराहना की। श्रीमती चित्रा, प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, तिरुवनंतपुरम ने भी आशीर्वचन भाषण दिया।

श्री ऋषिराज सिंह भा.पु.से. ने नेट्टुकालतेरी के खुले जेल के कैदियों को कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के प्रयासों की सराहना की जिसका लाभ उठाकर खुले जेल की आय में वृद्धि की जा सकती है। उन्होंने कैदियों से अनुरोध किया कि जेल से विमोचित होने के बाद अपनी आजीविका चलाने के लिए वे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से सीखे कौशल का लाभ उठाएं। डा.के.एम.अनेस, वैज्ञानिक एफओसीटी प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम समन्वयक रहे।

नाविबो, प्रबीउ फार्म, हिच्चाचेरा के प्रशिक्षण केंद्र का शिलान्यास

श्री प्रणजीत सिन्हा रॉय, माननीय कृषि मंत्री, त्रिपुरा सरकार दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का उद्घाटन करते हुए

श्री प्रणजीत सिन्हा रॉय, माननीय कृषि मंत्री, त्रिपुरा सरकार ने 12 फरवरी 2020 को नाविबो, प्रबीउ फार्म, हिच्चाचेरा के प्रशासन भवन सह किसान प्रशिक्षण केंद्र का शिलान्यास किया। इस अवसर पर नारियल की खेती तथा इसकी संभावनाओं और मूल्य वर्धन पर कार्यशाला भी आयोजित की गई। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रणजीत सिन्हा रॉय, माननीय कृषि मंत्री, त्रिपुरा सरकार ने नारियल खेती की महत्ता एवं किसान समूहों की आय सुधारने के लिए इसकी उपयोगिता पर बात की। उन्होंने राज्य में वैज्ञानिक तरीके से नारियल खेती प्रोत्साहित करने और नारियल के मूल्य वर्धन के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकियों के अभिग्रहण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया ताकि प्रति इकाई क्षेत्र से किसानों की आय में वृद्धि की जा सके। उन्होंने बोर्ड को प्रबीउ फार्म, हिच्चाचेरा, त्रिपुरा के विकास के लिए हर तरह की मदद एवं सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री प्रणजीत सिन्हा रॉय, माननीय कृषि मंत्री, त्रिपुरा सरकार अध्यक्षीय भाषण देते हुए

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, कोची ने अपने स्वागत भाषण में नारियल खेती की अहमियत के साथ साथ त्रिपुरा राज्य के लघु एवं सीमांत किसानों की आजीविका बढ़ाने एवं आय दुगुनी करने के लिए मूल्य वर्धन की आवश्यकता पर बात की। उन्होंने वैश्विक नारियल परिदृश्य तथा भारत एवं त्रिपुरा की स्थिति के बारे में बताया और नारियल के मूल्य वर्धन एवं विपणन की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने इस अवसर पर बोर्ड की योजनाओं, गतिविधियों एवं नारियल खेती परिदृश्य और देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में इसकी संभावनाओं के बारे में बात की।

श्री देबप्रिया बर्धन भा.प्र.से., जिला न्यायाधीश, दक्षिण त्रिपुरा जिला ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने अपने क्षेत्र के अधीन किसान समूहों की आर्थिक विकास के लिए अपने जिले में नारियल का खेतीगत क्षेत्र बढ़ाने हेतु पहल करने का आश्वासन दिया। उन्होंने जिले में नारियल विकास बोर्ड के विविध कार्यक्रम कार्यान्वित करने के लिए हर संभव मदद करने का भी वादा किया।

श्री तरित कांति चकमा भा.प्र.से., उप-प्रभागीय न्यायाधीश, सबरूम, डा.बिश्वजीत दास, संयुक्त निदेशक, आईसीएआर, पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र, लेंबुचेरा और श्री रूपांकर डे, उपाध्यक्ष, सत्चंद पंचायत समिति ने इस अवसर पर बात की। श्री बी.चिन्नराज, फार्म प्रबंधक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र का समापन हुआ।

उद्‌घाटन सत्र के बाद श्री एल.ओबेद, निदेशक, नाविबो, गुवाहटी की अध्यक्षता में तकनीकी सत्र संपन्न हुआ जिसमें डा.बिश्वजीत दास, संयुक्त निदेशक, आईसीएआर ने नारियल की खेती एवं कीट व रोग प्रबंधन पर भाषण दिया। श्रीमती जयश्री, विकास अधिकारी, नाविबो, कोची ने नारियल के मूल्य वर्धन पर संक्षिप्त विवरण दिया और श्री बी.चिन्नराज, फार्म प्रबंधक ने बोर्ड की योजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में गोमती और दक्षिण त्रिपुरा जिले के 300 से अधिक किसानों एवं अधिकारियों ने भाग लिया।

आक्रामक सफेद मक्खी पर किसान संगोष्ठी

नारियल विकास बोर्ड ने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर में 3 फरवरी 2020 को आक्रामक सफेद मक्खी पर किसानों की संगोष्ठी आयोजित की। इस अवसर पर श्री नवीन पाटले, उप आयुक्त, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने अपने विशेष भाषण में बताया कि अनुसंधान संस्थानों तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा सफेद मक्खी के प्रकोप के प्रबंधन हेतु की जानेवाली किसी भी अनुसंधान गतिविधि का समर्थन नारियल विकास बोर्ड के जरिए भारत सरकार द्वारा किया जाएगा। डा.एन.कुमार, कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने अपने

श्रीमती जी. जयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो कार्यशाला का उद्‌घाटन करती हुई

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी स्वागत भाषण देते हुए

भाषण में सूचित किया कि दक्षिणी राज्यों में सफेद मक्खी की समस्या गंभीर हो गयी है और अतः मामले को गंभीर रूप से देखा जाय। उन्होंने ध्यान दिलाया कि किसानों को संयुक्त रूप से प्रबंधन प्रणालियों को अपनाना चाहिए ताकि कीट के प्रकोप को प्रभावी तरीके से नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने इस संबंध में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय की मदद का भी आश्वासन दिया।

श्रीमती जी.जयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने अपने विशेष भाषण में ध्यान दिलाया कि प्रकोपित क्षेत्रों में माननीय कृषि मंत्री के दौरे के दौरान बागान की स्थिति का जो मूल्यांकन किया गया था उसके आधार पर और मंत्रालय के निदेशानुसार यह कार्यशाला आयोजित की जा रही है ताकि अनुसंधान संस्थानों के साथ विचार - विमर्श करके एकीकृत कीट प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ तैयार करने तथा सफेद मक्खी के प्रबंधन के लिए कार्यविधि बनाने के बारे में किसान समूह एवं पेशेवर किसानों के दृष्टिकोण पर खुले मंच पर परिचर्चा की जा सके। उन्होंने बताया कि नाविबो इस आक्रामक कीट के नियंत्रण हेतु बड़े पैमाने पर परजीवियों एवं परभक्षियों के प्रवर्धन के लिए विभिन्न अनुसंधान संस्थानों तथा कृषि विश्वविद्यालयों को वित्तीय समर्थन प्रदान कर रहा है। अध्यक्ष ने आगे बताया कि इस कार्यशाला में ऐसे परिज्ञान उभर आने की उम्मीद की जाती है जो कि नारियल किसानों को सस्ती कीमत पर जैव नियंत्रण एजेंट उपलब्ध कराने के लिए आनुषंगी योजना विकसित करने में मदद करेगी। सफेद मक्खियों के नियंत्रण के लिए निर्धारित वैज्ञानिक तरीके अपनाने हेतु कृषक समूह की सहायता करने में नाविबो सहायक भूमिका निभाएगा। उन्होंने सभी हिस्सेधारों से संयुक्त एवं ठोस प्रयासों के लिए अनुरोध किया।

विचार-विमर्श सत्र का नज़ारा

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण दिया। डा.अनिता करुण, निदेशक, सीपीसीआरआई, कासरगोड ने *सफेद मक्खी का संक्रमण और अनुसरण करने योग्य विधियाँ* विषय पर आलेख प्रस्तुत करने संबंधी तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। डा.एल.पुगलेंदी, डीन (बाग.), बागवानी एवं अनुसंधान संस्थान, कोयंबत्तूर ने *सफेद मक्खी पर अनुसंधान एवं विकास* विषयक सत्र की अध्यक्षता की। डा.सेल्वराज, वैज्ञानिक, एनबीएआईआर ने *रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के खतरे को रोकने के लिए एनबीआईएआर में किए गए प्रयासों* को प्रस्तुत किया और डा.राजमाणिक्कम, प्रोफेसर (एड्जंक्ट), सीआरएस, अलियारनगर, तमिलनाडु ने 2016 से लेकर विशेषकर तमिलनाडु में कीट का प्रभाव, नुकसान की प्रकृति, फैलाव एवं प्रसार और प्रकोप को कम करने के लिए केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, अलियारनगर में किए जा रहे शोध कार्य पर प्रकाश डाला। डा.मधु सुब्रमणियन, प्रोफेसर, केरल कृषि विश्वविद्यालय ने *2017 से लेकर केरल में रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी की अवस्थिति* प्रस्तुत की। डा.चंद्रशेखर जी.एस., वैज्ञानिक, एचआरईएस, अरसिकेरे ने *कर्नाटक में रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी की अवस्थिति* प्रस्तुत की। डा.चलपती राव, वैज्ञानिक, डा.वाई.एस.आर. बागवानी विश्वविद्यालय ने *आँध्र प्रदेश में रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का प्रकोप और इसे कम करने के लिए किए गए प्रयासों को* प्रस्तुत किया। डा.कृष्णकुमार, क्षेत्रीय निदेशक, बयोवेर्सिटी इंटेर्नेशनल ने कीट परभक्षी की आबादी में मौजूदा पारिस्थितिक संतुलन, कीटनाशक प्रतिरोध और कीट प्रबंधन के लिए करंज तेल के उपयोग पर कार्य करने के लिए सुझाव दिया।

सफेद मक्खी पर अनुसंधान और विकास सत्र में डा.जोसफ राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक, सीपीसीआरआई, कायंकुलम ने नारियल पर आक्रामक सफेद मक्खीः अद्यतन अनुसंधान सूचनाएं और भावी योजना पर भाषण दिया। डा.अलगार, एसिस्टेंट प्रोफेसर, सीआरएस, अलियारनगर, तमिलनाडु ने अपने प्रस्तुतीकरण में आकृति विज्ञान, परजीवी एवं परभक्षियों की उपस्थिति के मूल्याँकन पर प्रकाश डाला। डा रमादेवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष (पीपी), डा.वाई.एस.आर.बागवानी विश्वविद्यालय, वेंकटरामण्णागुडम ने विरोधी कवक आइसेरिया फ्यूमोसोरोसिया के बारे में और एनबीएआईआर, बंगलूरु से प्राप्त नए नस्ल के पीएफयू 5 मातृ संवर्धक के धान आधारित दवा के बारे में विस्तार से बताया।

श्रीमती जी.जयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने पैनल परिचर्चा की अध्यक्षता की और डा.कुमार नल्लूर कृष्णा, क्षेत्रीय प्रतिनिधि, दक्षिण और मध्य एशिया, बयोवेर्सिटी इंटेर्नेशनल और डा.महेश्वरप्पा, समन्वयकर्ता (ताड़), एआईसीआरपी (ताड़), सीपीसीआरआई ने सह अध्यक्षता की। श्रीमती जी.जयलक्ष्मी भा.प्र.से. ने विविध राज्यों में कीट व्यवहार में परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान संस्थानों द्वारा मानक प्रोटोकॉल विकसित किए जाने पर ज़ोर दिया। सह अध्यक्ष डा.कुमार नल्लूर कृष्णा, क्षेत्रीय प्रतिनिधि ने सूचित किया है कि सभी पांच प्रजातियों की तुलना की जानी है और डीएनए का कोड बनाया जाना है तथा देश में आक्रामक कीटों के प्रवेश से पहले खतरे का पूर्वानुमान करने और उससे बचने के लिए डीएनए फिंगरप्रिंटिंग सुविधाओं में सुधार किया जाना चाहिए। यह मुद्दा पूरे भारत की जिम्मेदारी बनती है, इसलिए प्रभावी संगरोध के लिए नीतियां भी बनाई जानी चाहिए।

विस्तृत परिचर्चा में, नारियल उद्योग के लिए संभावित खतरे के व्यापक प्रसार को देखते हुए प्रतिभागियों ने त्वरित प्रबंधन उपायों की तत्काल आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की। कीट पर काबू पाने के लिए सभी हिस्सेदारों द्वारा किसान - सहभागिता से एवं सामुदायिक विधि के ज़रिए जैविक नियंत्रण संरक्षण और स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियाँ व्यापक तौर पर कार्यान्वित की जा सकती हैं।

नारियल के गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री उत्पादन पर क्षमता विकास कार्यक्रम

नारियल के गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री उत्पादन पर किसानों/उद्यमियों/किसान उत्पादक संगठनों के लिए नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित क्षमता विकास कार्यक्रम भा.कृ.अनु.सं.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड में 17 से 19 फरवरी 2020 तक आयोजित हुआ।

क्षमता विकास कार्यक्रम के तहत नारियल की उन्नत किस्में, मातृ वृक्ष चयन, बीजफल संग्रहण एवं भंडारण, नर्सरी स्थान का चयन, नर्सरी क्यारी की तैयारी तथा बुआई, छाया प्रदान करना, नर्सरी में निराई-गुड़ाई एवं सिंचाई, नर्सरी में कीट एवं रोग प्रबंधन, नारियल में संकरण तकनीक, नारियल पौधों में गुणवत्ता आश्वासन तंत्र लागू करना, सहभागिता से नारियल के विकेंद्रीकृत रोपण सामग्री उत्पादन की संकल्पना एवं अभ्यास, नाविबो द्वारा नारियल पौध उत्पादन के लिए एफपीओ को समर्थन आदि जैसे रोपण सामग्री उत्पादन से संबंधित विषयगत क्षेत्रों को शामिल किया गया।

मंड्या, तिप्तूर, दावणगेरे, कुंदापुरा, कुम्ता और सुल्लिया सहित कर्नाटक राज्य के विभिन्न भागों से चयनित किसानों, उद्यमियों एवं नारियल एफपीओ के पदधारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

क्षमता विकास कार्यक्रम के सहभागी

डा.अनिता करुण, कार्यकारी निदेशक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.एच.पी.महेश्वरप्पा, परियोजना समन्वयक, एआईसीआरपी (ताड़) ने सभा का स्वागत किया। डा.तंपान सी., प्रधान वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक ने क्षमता विकास कार्यक्रम के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया और डा.के.शम्सुद्दीन, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डा.के.मुरलीधरन, अध्यक्ष, समाज-विज्ञान प्रभाग ने समापन कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए।

कृषि ओड़िशा 2020

नारियल विकास बोर्ड ने जनता मैदान, भुबनेश्वर में 20 से 24 जनवरी, 2020 को संपन्न कृषि ओड़िशा 2020 में भाग लिया। कार्यक्रम के सिलसिले में प्रदर्शनी, निवेशक सम्मेलन, किसान वैज्ञानिक बातचीत, किसानों का सम्मान, विस्तार कार्यकर्ता सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। मेले में विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों के 224 स्टाल लगाए गए और उन्होंने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

बोर्ड के स्टाल में आगंतुक

माननीय मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक ने राज्य कृषि मंत्री श्री अरुण साहू, ओडिशा मुख्य सचिव, श्री असित कुमार त्रिपाठी और श्री आर.रघु प्रसाद भा.व.से., आयुक्त सह सचिव, मात्स्यिकी एवं एआरडी, ओड़िशा की उपस्थिति में 20 जनवरी, 2020 को जनता मैदान, भुबनेश्वर में कार्यक्रम का उद्घाटन किया। नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पित्तापल्ली ने कृषि ओड़िशा - 2020 में भाग लिया और विभिन्न मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों एवं नारियल विकास बोर्ड की चालू योजनाओं को प्रदर्शित किया। 1600 किसानों सहित लगभग 3000 आगंतुकों ने नारियल विकास बोर्ड के स्टाल का दौरा किया। आगंतुकों को लीफ्लेट, पुस्तिकाएं एवं पत्रिकाएं वितरित की गईं।

श्री रामकृष्ण मेला एवं प्रदर्शनी

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, कोलकात्ता ने रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेंद्रपुर में 21 से 25 जनवरी, 2020 को संपन्न श्री रामकृष्ण मेला सह प्रदर्शनी और रामकृष्ण मिशन लोकशिक्षा परिषद एवं कृषि प्रशिक्षण केंद्र के 53वें वार्षिक समारोह में भाग लिया।

श्री रामकृष्ण मेला सह प्रदर्शनी के उद्घाटन कार्यक्रम में श्रीमत् स्वामी सुविरानंदा, महा सचिव, रामकृष्ण मठ व मिशन, बेलूर मठ, डा.आशिशि बैनर्जी, माननीय प्रभारी मंत्री, कृषि, पश्चिम बंगाल सरकार, श्री बी.पी.गोपालिका भा.प्र.से., अपर मुख्य सचिव, पशु संसाधन विकास विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, डा.पल्लब दास, अध्यक्ष, राजपुर-सोनारपुर नगरपालिका, श्री रषीद मुनीर खान भा.पु.से., पुलीस अधीक्षक, बरुइपुर उपस्थित हुए।

नारियल विकास बोर्ड ने तरह तरह के नारियल सुविधाजनक खाद्य पदार्थ, नारियल गरी से मूल्य वर्धित उत्पादें, नारियल खोपड़ी एवं नारियल पानी, नारियल खोपड़ी/लकड़ी आधारित हस्तशिल्प एवं उपोत्पाद और नारियल पर विभिन्न लीफ्लेट, पुस्तकें एवं प्रकाशन तथा नारियल के पौष्टिक व स्वास्थ्य लाभों पर पोस्टर स्टाल में प्रदर्शित किए और आगंतुकों ने बोर्ड के अधिकारियों के साथ बातचीत की।

बोर्ड का स्टाल

समापन सत्र 25 जनवरी, 2020 को आयोजित हुआ। इस अवसर पर डा.अमरेंद्र महापात्र, प्रेसिडेंट एवं श्री अमितावा बागची, सचिव, वेस्ट बंगाल काउंसिल ऑफ रबींद्र ऑपन स्कूलिंग, श्रीमती शाओन सेन, निदेशक, पश्चिम बंगाल स्वरोज़गार निगम लि. और श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, बिहार उपस्थित थे। साउथ 24 परगानास पश्चिम बंगाल का प्रमुख नारियल उत्पादक जिला है और इसलिए मेला सह प्रदर्शनी 2020 में सहभागिता से नारियल किसानों के बीच नारियल की खूबियों पर जागरूकता सृजित करने में मदद मिली।

असम के किसानों ने नारियल विकास बोर्ड का दौरा किया

किसान दौरा कार्यक्रम के सिलसिले में असम से 13 नारियल किसानों के एक ग्रूप ने कोची में नारियल विकास बोर्ड के मुख्यालय का तथा केरल की विविध संस्थाओं का दौरा किया। तीन दिवसीय इस दौरा कार्यक्रम में उन्होंने कयर बोर्ड, कलवूर स्थित कयर संग्रहालय, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान का कायंकुलम स्थित प्रादेशिक केन्द्र और नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, वाष़क्कुलम का दौरा किया।

बाज़ार समीक्षा

दिसंबर 2019

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव दिसंबर 2019 के दौरान कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 16250 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 16150 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 17300 रुपए पर खुला। महीने के दौरान कोची, आलप्पुषा और कोषिक्कोट बाज़ारों में नारियल तेल के भाव लगभग स्थिर रहे।

कोची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 50 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 16200 रुपए पर और आलप्पुषा और कोषिक्कोट बाज़ारों में प्रति क्विंटल 50 रुपए और 100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ क्रमश:16200 रुपए और 17400 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 12800 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची, आलप्पुषा और कोषिक्कोट बाज़ारों में क्रमश: प्रति क्विंटल 10550 रुपए, 10400 रुपए और 10600 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में मिश्रित रुख रहा।

कोची बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 50 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 10500 रुपए पर और आलप्पुषा और कोषिक्कोट बाज़ारों में उसी भाव पर क्रमश:10400 रुपए और 10600 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 9300 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 13200 रुपए पर खुला और महीने के दौरान अस्थिर रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13300 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 11500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख दर्शाकर उसी भाव पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 9850 रुपए पर खुल कर महीने के दौरान बढ़ाव का रुख दर्शाया। प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 10250 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14000 रुपए पर बंद हुआ। बेंगलूर बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 23000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 6500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 16500 रुपए पर बंद हुआ। मैंगलूर बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 24000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और श्रीलंका में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में महीने के दौरान बढ़ाव का रुख रहा। भारत में नारियल तेल का भाव यूएस $1808 में खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ।

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स, श्रीलंका, भारत और इंडोनेशिया में खोपरे के भाव में बढ़ाव का रुख दर्शित हुआ। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

जनवरी 2020

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जनवरी 2020 के दौरान कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 16200 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 17400 रुपए पर खुला। महीने के दौरान आलप्पुष़ा, कोषिक्कोट और कोची बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में बढ़ोत्तरी का रुख रहा।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 16700 रुपए पर और कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 700 रुपए के शुद्ध लाभ पर 18100 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 12933 रुपए पर खुला और महीने के दौरान बढ़ोत्तरी का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 534 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13467 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 10500 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 10400 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 10600 रुपए पर खुला। महीने के दौरान केरल के तीनों बाज़ारों में खोपरे के भाव में बढ़ोत्तरी का रुख दर्शित हुआ।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ क्रमश: 11000 रुपए और 10900 रुपए पर और कोषिक्कोट बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 700 रुपए के शुद्ध लाभ पर 11300 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 9300 रुपए पर खुलकर प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 9800 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 13300 रुपए पर खुला और भाव में महीने भर घटाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 1200 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 12100 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 11500 रुपए पर खुला और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1000 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 10500 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 10250 रुपए पर खुला और महीने के दौरान घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9850 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16444 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 18000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 14000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 2000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 16000 रुपए पर बंद हुआ।

बेंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 15000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 2500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 17500 रुपए पर बंद हुआ। मंगलूर बाज़ार में आँशिक रूप से छिले नारियल का भाव महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 24000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 25000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत में नारियल का देशीय भाव सारणी में दिया गया है।

नारियल तेल

भारत और श्रीलंका में नारियल तेल के देशीय भाव में महीने के दौरान बढ़ोत्तरी का रुख रहा जबकि फिलीपीन्स और इंडोनेशिया में नारियल तेल के देशीय और अंतर्राष्ट्रीय भाव में घटाव का रुख रहा।

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स और इंडोनेशिया में खोपरे के देशीय भाव में घटाव का रुख रहा और भारत तथा श्रीलंका में बढ़ोत्तरी का रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

फरवरी 2020

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव फरवरी 2020 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 16700 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 18100 रुपए पर खुला। महीने के दौरान आलप्पुषा और कोषिक्कोट बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में थोड़ा घटाव का रुख दर्शित हुआ। कोची बाज़ार में नारियल तेल का भाव खुलते और बंद होते वक्त समान रहा।

आलप्पुषा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 100 रुपए के शुद्ध घाटे पर 16600 रुपए पर और कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध घाटे पर 17700 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 13800 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 11000 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 10900 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 11300 रुपए पर खुला। महीने के दौरान आलप्पुषा और कोषिक्कोट बाज़ारों में खोपरे के भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ। कोची बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव खुलते और बंद होते वक्त समान रहा।

आलप्पुषा बाज़ार में खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 100 रुपए के शुद्ध घाटे पर 10800 रुपए पर और कोषिक्कोट बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध घाटे पर 11100 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 9700 रुपए पर खुलकर प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9500 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 12000 रुपए पर खुला और भाव में महीने भर घटाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 11800 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 10800 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 800 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 10000 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 9850 रुपए पर खुला और महीने के दौरान घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 600 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9250 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 18000 रुपए पर खुला और पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा और प्रति हज़ार फल 18000 रुपए पर ही बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 2000 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 14000 रुपए पर बंद हुआ।

बेंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 17500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ। मंगलूर बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव 25000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 3000 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 22000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत में नारियल का देशीय भाव सारणी में दिया गया है।

नारियल तेल

श्रीलंका और भारत में नारियल तेल के देशीय भाव में महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा जबकि फिलीपीन्स और इंडोनेशिया में नारियल तेल के देशीय और अंतर्राष्ट्रीय भाव में घटाव का रुख रहा।

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स और भारत में खोपरे के देशीय भाव में घटाव का रुख रहा और इंडोनेशिया तथा श्रीलंका में मिश्रित रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

बाज़ार भाव-देशीय

दिसंबर 2019

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुष़ा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुष़ा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
02.12.2019	16250	16150	17300	13000	10550	10400	10600	9000	13200	11500	9850	16000	13000	23000	22000
09.12.2019	16050	16150	रि.प्रा.न.	12667	10350	10400	रि.प्रा.न.	9000	रि.प्रा.न.	11200	रि.प्रा.न.	16000	रि.प्रा.न.	23000	22000
16.12.2019	16150	16150	17400	12667	10450	10400	10600	9200	13400	11800	10050	16000	14000	16500	24000
23.12.2019	16300	16400	17400	12933	10600	10600	10650	9300	13250	11500	10250	16000	14000	16500	24000
30.12.2019	16200	16200	17400	12800	10500	10400	10600	9300	13300	11500	10250	16000	14000	16500	24000

जनवरी 2020

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुष़ा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुष़ा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
01.01.2020	16200	16200	17400	12933	10500	10400	10600	9300	13300	11500	10250	16444	14000	15000	24000
06.01.2020	16400	16300	17400	13000	10700	10550	10750	9400	13200	11600	10050	16444	14000	15000	24000
13.01.2020	16400	16400	17400	13333	10700	10600	10900	9500	12900	11200	9850	16000	15000	15000	25000
20.01.2020	16600	16600	17800	13333	10900	10800	11100	9700	12400	11400	9850	17000	15000	15000	25000
27.01.2020	16500	16600	18000	13467	10800	10800	11100	9800	12300	11300	9850	18000	16000	17500	25000
31.01.2020	16700	16700	18100	13467	11000	10900	11300	9800	12100	10500	9850	18000	16000	17500	25000

फरवरी 2020

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुष़ा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुष़ा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
01-02-2020	16700	16700	18100	14000	11000	10900	11300	9700	12000	10800	9850	18000	16000	17500	25000
08-02-2020	16800	16800	18300	14150	11000	10950	11400	9700	12200	11000	9650	18000	15000	17500	25000
15-02-2020	16700	16700	18000	13900	11000	10850	11200	9700	12000	10500	9350	19000	15000	17500	25000
22-02-2020	16500	16500	17600	13675	10800	10800	10900	9400	11900	10300	9250	18000	15000	17500	22000
29-02-2020	16700	16600	17700	13800	11000	10800	11100	9500	11800	10000	9250	18000	14000	17500	22000

स्रोत

कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2
कोषि़क्कोट : 'मातृभूमि'
आलप्पुष़ा : 'मलयाला मनोरमा'
अरसिकेरे : ए पी एम सी, अरसिकेरे
कोषि़क्कोट बाज़ार में 'ऑफीस पास' खोपरे का और आलप्पुष़ा बाज़ार में 'राशि' खोपरे का बताया गया भाव

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

दिसंबर 2019

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय											
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
07.12.2019	140	162	211	रि.प्रा.न.	960	935	937	1903	1808	537	555	949	1299
14.12.2019	144	163	220	431	970	934	939	1963	1789	569	571	1150	1299
21.12.2019	147	141	227	445	1029	980	978	1958	1836	607	593	1147	1314
28.12.2019	146	173	227	445	1088	रि.प्रा.न.	1089	1996	1808	रि.प्रा.न.	595	1145	1314

जनवरी 2020

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय											
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
04.01.2020	151	191	234	439	1140	रि.प्रा.न.	1040	1931	1813	रि.प्रा.न.	612	1070	1297
11.01.2020	153	191	239	474	1116	1010	1011	1984	1859	623	578	1069	1324
18.01.2020	153	147	250	474	994	981	989	2013	1859	603	543	1103	1339
25.01.2020	154	191	265	516	996	931	933	2122	1878	594	535	1295	1325

फरवरी 2020

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय											
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
01-02-2020	162	145	265	486	940	855	903	2150	1868	567	483	1295	1294
08-02-2020	166	147	265	467	874	822	830	2260	1888	536	484	1323	1294
15-02-2020	168	146	237	454	878	830	830	2232	1854	539	511	1328	1294
22-02-2020	167	139	237	454	838	798	798	2227	1824	539	494	1325	1254
29-02-2020	168	140	250	447	844	800	798	2200	1841	534	498	1144	1267

***भारत**

नारियल तेल : कंगयम बाज़ार
खोपरा : कंगयम बाज़ार
नारियल : पोल्लाच्ची बाज़ार

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

श्रीमती जी. जयलक्ष्मी भा.प्र.से.
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री सरदिंदु दास
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
श्री आर. मधु
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन
कोची - 682 011, केरल, भारत
कार्यालय ईपीएबीएक्सः 2376265, 2376553, 2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
इ. अरवाड़ी
प्रभारी निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
बन्नेरघट्टा रोड
बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

असम
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी
राज्य कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी -781 006
दू.भा. : (0361) 2220632
फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु
श्रीमती बाला सुधाहरि
प्रभारी निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1,डा. रामस्वामी शालइ,
के.के. नगर, चेन्नई-600 078
दूर भाष 044- 23662684
23663685
ई-मेल : cdbroc@gmail.com

बिहार
श्री राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के सामने,
जगदेवपथ, फुलवारी रोड,
डाक-बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),
पटना-800014
दू.भा. : (0612) 2272742
फैक्स : 0612- 2272742
ई-मेल: cdbpatna@gmail.com
dirropatna@gmail.com

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : cdban@rediffmail.com

महाराष्ट्र
डा. अमेय देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल, यूकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाणे(वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : cdbthane@gmail.com

ओड़िशा
डा. रजतकुमार पाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 06755-211505, 212505
ई-मेल : cdborissa@gmail.com

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक
राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.नं.4-123, राजुला बाज़ार
रामवरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफैक्स नं. 0866-2842323/मोबाइलः 09866479650
ई-मेलः cdbvijap@gmail.com

पश्चिम बंगाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, बी.जे.-108-सेक्टर-11
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : cdbkolkata@gmail.com

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,दिल्ली

सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोबिन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्कट
(वेंल्ड मार्कट) आनयरा पी.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006
ई-मेल : cdbtvm@yahoo.in

सी आई टी, आलुवा

श्री श्रीकुमार पोतुवाल
उप निदेशक (प्रौद्योगिकी विकास एवं उद्यमिता)
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कीनपुरम,
दक्षिण वाष़क्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष:0484 2679680,
ई-मेल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359,
ई-मेल : dspfmvgda@gmail.com

असम
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव,
असम - 783 384, दू.भा. : 9957694242
ई-मेल : cdbdspabhayapuri@gmail.com

बिहार
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक), मधेपुरा जिला,
बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेल : dspfms@gmail.com

पश्चिम बंगाल
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
डीएसपी फार्म, फुलिया, एसबीआई फुलिया शाखा के पास,
एनएच-34, बेलेमठ डाक, नादिया, पश्चिम बंगाल-741 402
दू.भा. : 03473 234002
ई-मेल : dspfarmfulia@gmail.com

कर्नाटक
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक),
मंड्या जिला, कर्नाटक-571478 दू.भा.:(08232) 298015
ई-मेलःdspfarmmandya@gmail.com

केरल
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240,
ई-मेल : cdbnrlm@gmail.com

छत्तीसगढ़
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेल : cdbkgn1987@gmail.com

ओड़िशा
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली,
कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : (06755) 212505, (06755) 211505

महाराष्ट्र
सहायक निदेशक , नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म,
पालघर, दापोली गाँव, सतपति डाक,
पालघर-401405, महाराष्ट्र, दू.भा.: 02525 256090
ई-मेल : dspfarmpalghar@gmail.com

तमिलनाडु
सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति
नगर डाक, उदुमलपेट,
तमिलनाडु-642112, दू.भा.: 04252 265430
ई-मेलः dspfarmdhali@gmail.com

त्रिपुरा
सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचेरा,
सकबारी डाक, जोलाइबारी(मार्ग),
सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141
दू.भा.: 038 23263059
ईमेल- dspfarmhichacharatripura@gmail.com

Regd/7-19817/89
भाग XXX संख्या : 4

भारतीय नारियल पत्रिका

मूल्य : 10 रु.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
नारियल विकास बोर्ड (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय), भारत सरकार, केरा भवन
एसआरवी रोड कोची -682 011, भारत
ई मेल:kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com, वेब:www.coconutboard.nic.in दूरभाष: 0484-2376265, 2377266, 2377267